

नेशनल
पब्लिशिंग
हाउस
23, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

यातना-शिविर

स्वदेश भारती



नेशनल पब्लिशिंग हाउस
23, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

शाखाएं
चौड़ा रास्ता, जयपुर
34, नेताजी सुभाष मार्ग, इलाहाबाद-3

ISBN 81-214-0390-1

मूल्य : 50.00

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण : 1990 / सर्वाधिकार : श्री [illegible] भारती / भगवती प्रिंटिंग प्रेस, ए-95, सेक्टर-5, नोएडा-201301 में मुद्रित।

दक्षिण अफ्रीका मे
स्वतत्रता एवं मुक्ति-सघर्ष मे
आत्मोत्सर्ग करने वाले
असख्य वीर शहीदो को ।

भारत, बगलादेश की सुदीर्घजीवी
सद्‌भाव एव मैत्री को ।

तभी एक कोमल आवाज उभरी, "गीतू।"

वह चौंक पड़ी।

चारों ओर भीड़ के सिवाय वह किसी को पहचान न सकी। उसने इधर-उधर झुककर देखने की कोशिश की।

"गीता, इधर !" आवाज दोबारा आयी।

उसे आवाज जानी-पहचानी लगी। जुबेदा की आवाज से मिलती-जुलती ! उसने देखा कि एक स्त्री बुर्का ओढ़े दूसरी बुर्काबंद औरत के साथ बैठी गीता को इशारे से बुला रही है।

डिब्बे के सारे लोग उत्सुकतापूर्वक उधर ही देखने लगे।

गीता को विश्वास नहीं हुआ कि यहां भी उसका कोई परिचित है। उसे असमंजस में पड़ी देखकर वह स्त्री उठी और लोगों के बीच से रास्ता बनाती हुई उस तक चली आयी।

वह उससे लिपट गयी, "गीता तू", इस हालत में? ओह माई डार्लिंग। यह सब क्या हो रहा है।" भावावेश में वह रो पड़ी।

"जूबी, तुम !" गीता ने रूंधे कंठ से कहा और सिसक उठी। वे दोनों हिचकियां लेकर कुछ देर ... रोती रहीं। लोग उन्हें आश्चर्य से ताकते रहे

पलस्तर के नीचे से बूढ़ी हो गयी लाल ईंटों का जर्जरित चेहरा दिखाई देता है छत से वर्षा का पानी रिसते रहने से लगभग एक फुट नीचे टूटा हुआ रोशनदान है, जिससे दोपहर के बाद रोशनी का एक सफेद धब्बा थोड़ी देर के लिए आ-आकर प्रतिदिन दीवार पर टंग जाता है, फिर धीरे-धीरे टेढ़ा तिरछा होते-होते दिन ढलने के पहले ही लुप्त हो जाता है। घिर आता है गहरी खामोशी मे डूबा अंधकार।

कमरे मे पन्द्रह लडकियां आतंक और मौत के बीच जूझ रही थीं। कुछ दीवार के सहारे बैठी एक-दूसरे से धीरे-धीरे बातें कर रही थीं। उनकी आखो मे भय और आतंक की काली छाया घिरी थी। एक लडकी अपनी बांह के घाव से रिसते हुए रक्त को साडी से पोंछ रही थी। उसी के कुछ दूर नगे फर्श पर औंधे मुह पडी एक लडकी बुरी तरह खास रही थी। वह खासते-खासते हाफने लगती। शरीर सिकुडने लगता और जोरो से कराह उठती। उसे घेरकर तीन लडकिया बैठी थीं। उसकी उम्र बीस के आस-पास रही होगी। उनमे से एक लगातार सिसक रही थी। दूसरी घुटनों के बीच मुह छिपाये बैठी थी और तीसरी इन दोनों को धीरज बंधा रही थी। इनसे अलग, जहा दरवाजा खुलता है, चार लडकियां बैठी अपनी-अपनी मुसीबतो के बारे मे बाते कर रही थीं।

बाहर ताला खोलने की आवाज हुई। च-र्र-र की आवाज के साथ दरवाजा खुला। बूढ़ी औरत एक हाथ मे मटमैले कपडे से बधी गठरी तथा दूसरे मे लालटेन लिये अदर आयी। उसने भीतर से सिटकनी बंद कर ली। कमरे के बीच आकर खडी हो गयी। सभी लडकियों को शकालु दृष्टि से देखा। गठरी जोरो से जमीन पर पटक दी और निश्वास छोडती हुई धम्म से बैठ गयी।

बैठते हुए कर्कश स्वर मे बोली, "चलो खाना खाओ।"

चिल्लाने की-सी आवाज उस सीलन-बदबूदार बंद कमरे में गूज उठी। लडकियां चौंककर आखें मलती हुई उठ बैठीं। जो बाते कर रही थीं, चुप हो गयी और जो चुपचाप घुटनो मे सिर रोपे बैठी थीं, उस औरत की ओर देखने लगीं, जिसके प्रत्येक शब्द मे अपमान और तिरस्कार की बदबू थी। औरत ने गठरी खोली। अंदर से बादामी कागज मे बंधा थैला निकाला। थैला चरमरा

उठा । थैले से एक-एक रोटी निकालकर वहीं लड़कियों में बांटने लगी । दो रोटियां बच गयीं तो उसने चारों ओर अपनी पैनी दृष्टि दौड़ायी । लड़कियां रोटियां खा रही थीं । निष्ठुर भूख के तेज दांत बासी कड़ी रोटी के टुकड़े चबा रहे थे ।

'वह इस तरह क्यों लेटी है ?' उस औरत ने कोने में आधी पड़ी हुई लड़की की ओर उंगली उठाते हुए पूछा ।

लड़की की साड़ी अस्त-व्यस्त थी । घनी काली केशराशि कंधों से होती हुई पीठ पर फैली हुई फर्श पर अस्त-व्यस्त बिखरी थी ।

'उसे बुखार है ।' *एक लड़की ने अस्फुट आवाज में कहा और चुप हो गयी।*

'बुखार नहीं, सब बहाना है । तुम सब कान खोलकर सुन लो । यहां नखरा नहीं चलेगा । कोई उसे उठाओ तो । यह रही उसके हिस्से के रोटी । हुंह बुखार है ! मैं सब समझती हूं ।' औरत अपने में ही बुदबुदायी ।

लड़कियां खाने में लगी हुई थीं । किसी ने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया । इससे वह जल-भुन गयी । दीवार के सहारे एक लड़की चुपचाप खड़ी थी । वह रोटी लेने नहीं आयी ।

बुढ़िया ने उसकी ओर कर्कश निगाहों से देखा, 'ऐ, इधर आ ।' तुझे नहीं खाना है ? बिना खाये-पिये यहां जान देगी ? चल इधर ! यह ले ।' बुढ़िया ने रोटी उस लड़की की ओर बढ़ा दिया ।

लड़की का चेहरा आवेश से तमतमा उठा । वह तेजी के साथ औरत के पास आयी और हाथ बढ़ाकर रोटी लेकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके फर्श पर फेंक दिया, 'मैं भिखारिन नहीं हूं, नहीं खाती, नहीं खाऊंगी ।' लड़की के दांत आवेश से भिंच गये । सभी लड़कियां उसकी ओर साश्चर्य देखने लगीं।

'भाड़ में जाओ तुम, मैं खुशामद नहीं करूंगी ।' बुढ़िया पांव पटकती हुई बाहर चली गयी । एक झटके के साथ दरवाजा खुलकर फिर बंद हो गया।

'खूसट कहीं की !' उस लड़की ने कहा । घृणा और क्रोध से चेहरा तमतमा उठा था । वह बीमार लड़की के पास जाकर बैठ गयी । अपना ममताभरा हाथ उसके सिर पर रख दिया । लड़की को तेज बुखार था । होंठ

सूख गये थे और उन पर काली पपड़ी जम गयी थी। वह बीच-बीच में सन्निपातग्रस्त-सी चीख उठती और शरीर ऐंठने लगता। एक लड़की पहले से ही वहां घुटनों के बीच सिर गाड़े बैठी थी। वह हिचकियां लेकर रो रही थी।

कुछ क्षण तक दोनों लड़कियां एक-दूसरे की पीड़ा महसूसती, खामोशी में डूबी, बैठी रहीं। बीमार लड़की बीच-बीच में कराह उठती तो घुटनों में मुंह छिपाये सिसकती हुई लड़की अपने सिर को धीरे से ऊपर उठाती। सजल आंखों से उसकी ओर देखती और फिर आंखों में भर आये आंसुओं को छिपाने के लिए घुटनों में दोबारा मुंह छिपा लेती।

गिरजाघर के घंटे ने एक-एक करके रात के ग्यारह बजा दिये।

दूर से सियारों और कुत्तों के भौंकने की बेतरतीब आवाजें आने लगीं।

घुटनों में मुंह छिपाये हुए लड़की ने रुआंसे स्वर में कहा, 'अनु, अब क्या होगा?'

'क्या पता' अनु ने हताश स्वर में उत्तर दिया।

'जानती हो, कल तुम्हें वह दाढ़ीवाला ले जायेगा। हां, वही लंबी दाढ़ीवाला, आज सवेरे आया था, मैंने किवाड़ की फांक से देखा। वह सरदार से बातें कर रहा था—'मुझे तो वह काले तिलवाली लड़की ही पसंद है। बोलो, कितना लोगे, सरदार? और सरदार ने अपनी पांचों उंगलियां उसे दिखा दी थीं। वह कल सवेरे आने का वादा कर गया है।' उसकी आंखों में उमड़ते-घुमड़ते आंसू के बादल बरसने लगे।

'नहीं। नहीं! गौरी दी' ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा नहीं हो सकता। मैं अपनी जान दे दूंगी, लेकिन अपनी इज्जत बर्बाद नहीं होने दूंगी। मैं गाय-बैल की तरह नहीं बिकना चाहती। मैं मर जाऊंगी, लेकिन उस बुड्ढे के साथ नहीं जाऊंगी। ... गौरी ... गौरी दी, अब क्या होगा? वह आंधी में टूटे हुए पेड़ की तरह गौरी की गोद में गिर पड़ी। दोनों एक-दूसरे को सांत्वना देती रहीं। गौरी की आंखों से आंसू गिरने लगे।

अनु ने अपने को संयत करते हुए कहा, 'गौरी ! मां-बाप, भाई-बहन सब छूट गये । इस मुसीबत में मैं तुम्हारा साथ छोडकर कहीं नहीं जाऊंगी । भले ही मेरी जान निकल जाये, पर तुम्हें छोडकर नहीं जाऊंगी । सब कुछ तो लुट गया । अब बचा ही क्या है । इस लुटी हुई जिंदगी को सजोकर 'बगला देश' की आजादी का सुख भला कैसे भोग पाऊंगी ।' अनु की हिचकियां बध गयी।

गौरी अपनी जाघ पर अनु के गर्म-गर्म आसुओं का गिरना महसूस कर रही थी । उसने अनु के सिर पर ममता-भरा हाथ फेरते हुए कहा, 'बहन, इस तरह धीरज हारने से क्या होगा? जब मौत ही किस्मत मे लिखी है, तो हिम्मत से मरेंगे । चाहे इस शरीर के टुकडे-टुकडे कर दिये जाये, पर इज्जत पर डाका डालने वाले की आखे इन नाखूनो से फोड दूगी । वे हम लडकियों की इज्जत पर डाका डालेगे । हमे मौत के घाट उतार देगे । पश्चिमी पाकिस्तानी पठानों के हाथ हमे बेच देगे । मै जिदा रहते हुए ऐसा नहीं होने दूगी । उन भेडिये रजाकारो का रक्त पी जाऊगी ।' अनु सिसक सिसककर रोती रही । काफी देर तक उसी हालत मे दोनो बैठी एक-दूसरे के दर्द और आसुओं को राहत का आत्मीय स्पर्श देती रही । एक-दूसरे के आहत जीवन पर सात्वना की मरहम-पट्टी करती रही ।

सवेरे के छ बजे थे ।

दूर से घोडे की हिनहिनाहट, मुर्गों की बाग और कुल्हाडी से लकडी चीरने की मिली-जुली आवाजे उभर रही थी । बीच-बीच में कुत्तों के भौकने तथा नन्हें बच्चों के रोने की आवाजें, कबूतरों के गुटर-गू के साथ मिलकर विचित्र समवेत स्वर की सृष्टि कर रही थी । बाहर उजाला था, जीवन था, हलचल थी । और उस खडहरनुमा हवेली के सीलन भरे, बदबूदार, अंधेरे कमरे में आसू और सिसकियां थीं । हताशा और अजाने भविष्य की त्रासद-छाया थी । उस छोटे कमरे में बदिनी बनायी गयी कई लडकियां बंगला देश के मुक्ति सग्राम के बारे में चर्चा कर रही थी । कुछ अधलेटी एक-दूसरे से अपनी यातनाओं के बारे मे कह रही थी । बीच मे वे भावुक हो उठती । उनकी बातें सिसकियो

और आसुओ मे डूब जाती ।

इन्ही लडकियो के बीच गीता मुखर्जी नाम की लडकी थी, जो सामान्यत अन्य लडकियो से अधिक सयत दिखाई पडती थी । वह दीवार के सहारे बैठी निर्निमेष भाव से आस-पास बैठी, सोयी, अधलेटी, रोती-सिसकती लडकियो की अन्तर्वेदना को महसूस कर रही थी । अचानक एक लडकी जोरो से रोने लगी । उसे चुप कराने के लिए कई लडकिया उसके इर्द-गिर्द जा बैठी । इसी बीच दरवाजा खुला । वृद्ध महिला एक हाथ मे जस्ते की बडी-सी केतली तथा दूसरे हाथ मे जस्ते के कई गिलास, सिर पर एक गठरी लिये कमरे के बीच मे आकर खडी हो गयी । उसने चारो ओर रहस्यमय दृष्टि से देखा । लडकियो को गिना । एक-दो-तीन-चार . पद्रह । आश्वस्त होते-हुए गिलास तथा केतली फर्श पर रखकर बैठ गयी ।

एक रोबदार आवाज गूज उठी, 'चलो, चाय पीओ ।'

गीता ने अधखुले किवाड के बीच से देखा । बाहर एक जीप के पास चार आदमी खडे सरदार से बाते कर रहे थे । जीप पर दो लडकिया पीछे की सीट पर बैठी थी । उनके सिर आगे की ओर झुके हुए एक-दूसरे से लगभग सटे हुए थे । एक लाल साडी पहने थी तथा दूसरी हरी छीट की साडी । जीप की स्टियरिंग थामे स्थूलकाय सावले रंग का एक ड्राइवर बैठा था । उसकी बडी-बडी काली दाढी उसके भद्दे चेहरे पर और भी भयानक लग रही थी । वह छीट की लुगी तथा सफेद कमीज पहने था । बहुत ज्यादा तेल उडेलकर सिर के बीच में काढ़ी गयी माग उसके गवारपन को प्रकट कर रही थी । वह लगातार सिगरेट पिये जा रहा था । बीच-बीच मे वह पीछे घूमकर उन दोनो लडकियो को कुटिल आखो से देखकर अजीब तरह से मुस्करा उठता । उसकी मुस्कान मे व्यग्य, कामुकता और विद्रूपता झलक रही थी । जीप पर बैठी लडकियो के बालो की लतरें तेज हवा के कारण उड-उडकर उनके गालो तथा ओठो पर फैल रही थीं । उनकी पलकें मुदी थी । मुह पर मुर्दनी छायी थी ।

वृद्ध महिला गीता को इस तरह बाहर ताकते हुए देखकर गुस्से से आग-बबूला हो उठी । उसने तेज आखों से गीता को घूरकर देखा, फिर उठी। जाकर दरवाजा खटाक् से बंद कर लिया ।

तभी एक लड़की ने गीता की बाह पकडकर कहा, 'मौत ने इस खूसट को

हमें तग करने के लिए भेजा है । शैतान कही की । जवान रही होगी तो मुहल्ले के मर्दों का जीना हराम...'

वाक्य पूरा नहीं हुआ था कि बीच मे उस वृद्ध महिला की कर्कश आवाज गूंज उठी—'चलो, उठो जल्दी! अपनी-अपनी चाय पियो, नास्ता करो।'

पेट की भूख आत्मसम्मान से बडी होती है । तभी तो लडकिया उस बूढी औरत से घृणा करते हुए भी चाय पीने और रोटी के टुकडे लेने के लिए अधीर हो उठी । वे चाय के घूट निगलने लगी, जैसे कोई दवा पी रही हो और हाथ में लिये बासी रोटी को इस तरह खा रही थी, जैसे उन्हें कई दिनों से अन्न के दर्शन नही हुए । वे सभी बेहद भूखी थी । उनकी त्रासद आत्म-चर्चा और सिसकियां, क्षुधातृप्ति के बीच कुछ देरी के लिए थम गयी ।

सबको रोटियां, चाय बांटने के बाद वृद्ध महिला ने मुह के बल सोयी लडकी की तरफ चुभती हुई आखो से देखा, 'वह अभी तक नहीं उठी ? कोई उठाओ तो उसे! यह लो! गर्म-गर्म चाय पियेगी तो तबीयत हल्की हो जायेगी।' बुढिया आत्मीयता से बोली और गिलास मे चाय डालने लगी । चाय से गिलास भरकर वह किसी को देने के बजाय स्वयं उस लडकी के पास गयी ।

उसे झकझोरकर जगाते हुए गुस्से से चीखी, 'उठ रे, मुई । चाय पी ले ! यहा जान देने आयी है, क्या ? उठती है कि दू एक लात !'

लड़की की सांसें काफी तेज चल रही थी । बीच-बीच मे वह कराह उठती थी । उसकी साडी का निचला हिस्सा खुल गया था । जांघों के ऊपर तक का भाग दिखाई दे रहा था । बायी जाघ मे घाव था, जिसके इर्द-गिर्द बहा हुआ खून सूख गया था । उसकी पीली नाइलॉन की साड़ी मे कई जगह खून के लाल धब्बे लगे थे । गाल और नाक पर खरोंचे आयी थी । ओठ सूखकर अस्वाभाविक रूप से मोटे हो गये थे । लंबे-लंबे घने काले बालो के बीच उसका कुम्हलाया गोरा चेहरा देखकर लग रहा था, जैसे किसी ने सफेद संगमरमर पर ढेर सारा कीचड उछाल दिया हो । लडकी ने आहिस्ते से पलकें खोलीं और सूनी वेदनासिक्त आंखों से चारों ओर देखा । फिर एकाएक चीख पड़ी, 'बाबा ! बाबा ! बचाओ... बचाओ !'

बुढिया उसे पाव से ठोकर मारते हुए बोली, 'नाटक करती है, मुहजली ! उठ जल्दी से, नहीं तो मार-मारकर ठीक कर दूगी ।'

लड़की बेतहाशा चीख उठी, 'आह । बचाओ ! बचाओ !' उसकी मर्मांतक चीख सुनकर कई लड़कियां आकर उसके चारों ओर एकत्र हो गयीं। वे सहमी आंखों से उस वृद्ध महिला की ओर देख रही थीं। उनका आवेश उस वृद्ध महिला के सिर पर तीखा गड़ गया, 'तुम जैसी निष्ठुर औरतों को भगवान इस धरती पर जन्म क्यों देता है ?'

गीता ने बीमार लड़की का सिर अपनी गोद में ले लिया। उसके बालों में उंगलियां फेरने लगी।

लड़की ने पलकें खोली। रुंधे हुए अस्फुट स्वर में बुदबुदायी, 'पानी, पानी।'

गीता ने दूसरी लड़कियों से कहा, 'इसका शरीर बुखार से जल रहा है।' वह चिंतित और परेशान हो उठी। उसने दूसरी लड़कियों से पूछा, 'पानी कहां से मिल सकता है ?'

सभी ने निराश होकर नकारात्मक ढंग से सिर हिला दिया। गीता ने वृद्ध महिला से कहा, 'थोड़ा-सा पानी ला दो मासी। इसे तेज बुखार है।'

वृद्धा के तन-बदन में जैसे आग लग गयी, 'हूंह, पानी ला दो, जैसे मैं नौकरानी हूं। भाड़ में जाओ तुम सब, रोज-रोज की इस आफत से मैं आजिज आ गयी। मैं आज ही कहीं चली जाऊंगी। मुझसे यह सब नहीं होगा। चाय पिलाओ, नाश्ता-खाना खिलाओ, पानी लाओ, हुंह। पानी कई दिनों से बंद है। पूरे नारायणगंज में पानी की किल्लत है। बंग बंधु का असहयोग आंदोलन चल रहा है। सब जगह हड़ताल है। पता नहीं, यह हड़ताल कब तक चलेगी। आज कई दिनों से तीन मील दूर नदी से बाल्टी में पानी लाना पड़ता है। मेरी तो कमर टूट गयी। हैदर के बाप की दाढ़ी। इन रांडों को लाकर यहां डाल दिया और मेरा जी हलाकान में पड़ा है। तीमारदारी करो। ऊपर से नखरे सहो। ना बाबा ! अब मैं यहां नहीं रहूंगी।' बुढ़िया पांव पटकती हुई दरवाजे की ओर चल पड़ी। लेकिन वह सहमकर ठिठक गयी।

दरवाजे के बायीं ओर दीवार के सहारे हैदर खड़ा था। उसके होंठों पर व्यंग्य मुस्कान नाच रही थी। उसने सिगरेट का एक लंबा कश लिया। धुएं के गोल-गोल छल्ले छोड़ते हुए उसने ऊंची कर्कश आवाज में पूछा, 'कहां जा रही हो, रेशमा बुआ ?'

डर के मारे वृद्धा के हाथ-पाव कापने लगे । उसके ऊपर जैसे सैकड़ों मन बर्फ का पानी किसी ने उड़ेल दिया हो । भय से कांपते हुए बोली, 'जाऊंगी कहा भैय्या ! मेरे कर्म मे खुदा ने जिंदगी भर का रोना लिख दिया है ।' वह नाटकीय ढंग से सुबकने लगी । आचल से बनावटी आसू पोछने लगी ।

हैदर ने अधपिया सिगरेट नीचे फेंक दिया और दायें पैर के जूते से मसलते हुए कहा, 'अच्छी तरह समझ लो, बुआ । तुम्हें फातुल्ला से यहा इसलिए नही लाया गया कि दूध-मलाई खाकर मखमल की सेज पर आराम करो । ये हसीनाएं पाकिस्तान के गद्दार बगालियों की लड़कियां हैं । इनकी हिफाजत करने के लिए तुम्हें यहा लाया गया है । तुम पाकिस्तान का बेहद नेक काम कर रही हो, लेकिन अगर तुमने यहा से जाने की जुर्रत की तो .... ।' हैदर ने जेब से चाकू निकाला । वह चटाख की आवाज के साथ फैल गया । चाकू की धार पर अपनी उगलिया फेरते हुए उसने लाल आखों से घूरकर रेशमा को देखा ।

बुढ़िया भय से थर-थर कांपने लगी । जीने का मोह उसके होठों से निकल गया, 'नहीं बेटा ! मै यहा से कहीं नहीं जाऊंगी । तुम जैसे रखोगे, वैसे ही रहूंगी । लेकिन इन हरजाइयो को जरा समझा दो । मुझे हैरान न किया करें।' रेशमा ने अपनी आखों पर आचल का एक छोर डाल दिया और रोने का स्वांग करने लगी ।

हैदर ने एक बार घूरकर लड़कियों की तरफ आग्नेय दृष्टि से देखा । उसकी आखो मे गुस्सा वेनिस के लड़ाकू साड की तरह फुफकार रहा था । वह प्राय चीखने की आवाज में बोला, 'अगर किसी ने जरा भी हरकत की, यहां से भागने की कोशिश की तो उसका नतीजा बहुत बुरा होगा ।' हैदर ने चाकू हवा में नचाया । कमरे मे भय और मौत का सन्नाटा छा गया । धड़कनों की धड़कने तेज चलने लगीं ।

अगर रहीम आये, तो सीधे अड्डे पर भेज देना और तुम इन पर कड़ी नजर रखना। इन लड़कियों की मैं रात में लौटकर खातिर करूंगा।' एक कामुक मुस्कान उसके होंठों पर फैल गयी। आंखों में खूंखार बनैले सुअर की छाया घिर आयी।

'यह लो।' हैदर ने दस रुपये का एक नोट कमीज की जेब से निकालकर रेशमा की ओर बढ़ा दिया, 'दोपहर का खाना बाजार से लाकर इन हसीनाओं को खिला देना। बिहारी और अहमद फातुल्ला से लौट आये तो कहना, यहीं रहें, कहीं जाये नहीं। मैं रात दस बजे तक लौटूंगा।'

रेशमा ने नोट लेकर आंचल में बांध लिया। फिर उसने हैदर की ओर देखा, जैसे कुछ कहना चाहती हो। जैसे कह देना चाहती थी—इस दस रुपये में भला क्या खाना मिलेगा? पर वह डर के मारे कुछ भी न बोल सकी।

हैदर ने कर्कश निगाहों से लड़कियों की ओर दोबारा देखा, जो इस हिंसक पशु की ओर इस तरह देख रही थीं, जैसे अभी-अभी वह उन्हें कच्चा चबा जायेगा। हैदर ने जूते से अधखुले किवाड़ को ठोकर मारा। दरवाजा पूरा खुल गया। बाहर जीप खड़ी थी। वह ड्राइवर के पास जा बैठा। जीप स्टार्ट हुई। पीछे बैठी हुई लड़कियां जो प्राय: सो रही थीं, चौंक गयीं। जाती हुई जीप की आवाज कुछ देर तक कमरे में घुरघुराती रही।

वह मंदिर की सीढ़ियों पर बैठी, सघन बरगद के वृक्ष की डालियों से बंधे कपड़ों के असंख्य छोटे-बड़े टुकड़े देखती रही। मंदिर की इमारत बहुत पुरानी थी। सीढ़ियां टूटी हुई थीं। बेमरम्मत दीवारों की ईंटें टूटे पलस्तर के बीच से झांक रही थीं और अजीब तरह के चेहरों, आकारों के भित्तिचित्र उभर रहे थे। मंदिर छोटी-सी पहाड़ी पर था, जहां से चारों ओर हरे-भरे धान के खेत व पेड़, नारियल के पेड़, केला-बागान दिखाई दे रहे थे। आस-पास दूर तक कोई गांव-गिराव नहीं था। गीता ने मन ही मन सोचा। इस एकांत मंदिर में लोग दूर-दूर गांवों से आते होंगे। अपनी मन्नतों के कपड़े बरगद की डालियों में बांधते होंगे। मंदिर में आराधना के फूल-फल चढ़ाते होंगे। सवेरे के छ: बजे थे। सूरज निकलने ही वाला था। आकाश में ढेर सारे काले-सफेद बादल घूम

रहे थे । पूरब का आकाश अनेक रंगों में बट गया था । हवा धीरे-धीरे बह रही थी ।

उसने मन-ही-मन सोचा, जैसे वह संसार से बिलकुल अलग जगह मे आ पहुंची है । अकेली । सर्वहारा । निरुपाय । कुछ क्षणो के लिए अपने अकेले होने की स्थिति से वह भयभीत हो गयी । यदि हैदर या उसके आदमी उसे खोजते हुए आ पहुंचे तो ? आह । उसके मुह से अनायास निकल गया । उसने चारो ओर शंकालु दृष्टि से देखा । फिर आश्वस्त होकर बैठ गयी । उसे बेहद भूख लग रही थी । उसने सोचा, मदिर के अदर चली जाये और वहा कुछ पूजा का समान खाने लायक मिल जायेगा । वह उठी । उठते हुए टखनों मे भयकर दर्द हुआ, फिर वह धीरे-धीरे सीढ़िया चढ गयी । मदिर अस्त-व्यस्त पडा था। दीवारो पर 'जय-बंगला', 'वगबधु', 'हम आजादी और मुक्ति चाहते हैं,' 'बगलादेश-जिदाबाद' वगैरह नारे लिखे थे । मदिर की कृष्ण-राधा की मूर्तियां जमीन मे औंधी पड़ी थी । पूजा का सामान इधर-उधर बिखरा था । मालाएं, फूल चढ़ावे के समान चारो ओर छितराये पडे थे । कई जगह रक्त के निशान थे। फटी हुई साडियां, ब्लाउज, पेटीकोट, कुर्ते, दुपट्टे पडे थे । उसे लगा यहा कई नर-हत्याएं हुई है और लाशों को घसीटकर यही कहीं मदिर के पिछले हिस्से की तरफ नीचे फेंक दिया गया होगा । वह कुछ देर तक भयाक्रांत वही खडी रही, फिर साहस बटोरकर मदिर के पिछवाडे की तरफ गयी तो एकबारगी चीख उठी । मदिर का पुजारी खभे से बंधा था । उसकी कटी हुई गर्दन आगे की ओर झुकी थी । लाश फूल गयी थी । शरीर में जगह-जगह घाव थे, जिनसे खून निकल कर फर्श पर चारो तरफ बह चुका था और जो अब सूखकर काला पड गया था ।

उसने नीचे झाककर देखा । काफी नीचे खदक में कई लाशें बेतरतीब पड़ी थी । उसे लगा जैसे वह मंदिर में नहीं, किसी श्मशान में आ गयी है । अब तक कुहासे के बीच से सूरज उदय हो चुका था । सूरज की रक्तिम किरणें कुहासे को भेदकर मदिर की दीवारों पर होती हुई पुजारी की लाश पर जा टिकी थी । उसने खडे-खडे चारो ओर देखा । चारों ओर सवेरे की धुध मे मुंह ढके प्रकृति मौन विलाप कर रही थी । गीता राधा-कृष्ण की गिरी हुई मूर्तियों को ठीक करने लगी । देवता के प्रसाद के रूप में चढ़ाये गये केले और नारियल,

मिठाइया, सदेस आदि फर्श पर बिखरे हुए थे । गीता वही बैठकर प्रसाद बीन-बीनकर खाने लगी । वह बेहद भूखी थी । उसके दिमाग मे रात की घटना टंग गयी । उसे विश्वास नही हो पा रहा था कि उस यातना-शिविर से अब वह मुक्त हो चुकी है ।

आधी रात बीत चुकी थी । कई लडकिया जाग रही थी और उनके साथ घटी क्रूर घटनाओं के बारे मे धीरे-धीरे बाते कर रही थीं । उनमे से अधिकाश नंगी फर्श पर सो रही थी । कोई पेट मे पाव डाले, अग्रेजी का 'क्यू' या 'तीन' बनाये, कोई तिरछी-सीधी, किसी का हाथ किसी का तकिया बना हुआ था और किसी का पाव किसी के पेट या पीठ पर था । किसी का दुपट्टा कंधे से फिसलकर फर्श पर बेतरतीब गिरा-पडा था । किसी की साड़ी घुटनों से ऊपर तक खिसक गयी थी । किसी की पीठ या सीने का हिस्सा बिलकुल अनावृत था।

दीवार के सहारे बैठी एक लडकी सोते हुए जैसे कोई भयावह सपना देख रही थी । वह बीच में बडबडाने लगती, 'मां ! मा, बाबा! नहीं, नही, बाबा को मत मारो । बचाओ । बचाओ ... .।' अचानक वह जोरों से चीख उठी।

सभी लडकिया हडबडाकर उठ गयी । उठने की कोशिश करते हुए औंधे मुंह पड़ी लडकी दहाड मारकर रोने लगी ।

पास ही सोयी लडकी ने आख मलते हुए कहा, 'सो जा, रे ! इस तरह क्यो चीखती है ?' नीद उस पर बुरी तरह हावी थी । उसने दूसरी तरफ करवट बदल लिया । जैसे उसका इस प्रकार के रोने-चिल्लाने से कोई नजदीकी या दूर का कोई सबध नही था । दो लडकिया एक-दूसरे के कान मे अस्फुट स्वरों मे बाते कर रही थी—'जानती है, बीस-बीस रजाकार इसकी इज्जत से खेले है । उसे रक्तस्राव हो रहा है । खून बंद ही नही होता । पेट में जोरों का दर्द उठ रहा है। सारे शरीर में भयंकर पीडा है ! बेचारी !'

दूसरी ने कहा, 'मुझे रात भर बुरे सपने आते रहे । सवेरे जो लड़की मर गयी थी, लगता था मेरी बगल मे लेटी है । ओफ, बाप रे बाप ! उसकी खुली हुई पथरायी आखे, उसका बीभत्स चेहरा याद आते ही डर लगने लगता है।'

एक झटके के साथ दरवाजा खुला। बुढ़िया घबरायी हुई अंदर आयी। उसके कांपते हुए हाथ में लालटेन टंगी थी, 'क्या हुआ री, कौन चीख रही थी?' उसकी कर्कश आवाज गूंज उठी।

किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

वह अपने स्वर को और भी ऊंचा करते हुए बोली, 'कौन थी, हरामजादी? बोलती क्यों नहीं?'

तभी पीछे से दो हाथों ने उसका मुंह कसकर बंद कर दिया। उसने अपनी साड़ी खोलकर बुढ़िया के मुंह में ठूस दी, फिर उसके हाथ-पांव कसकर बांध दिये। ऐसा करते हुए बुढ़िया की शारीरिक शक्ति का डटकर सामना करना पड़ा था उसे। बुढ़िया हांफ रही थी। अपने को संयत करते हुए उपेक्षा से उसने कहा था, 'डायन कहीं की! अब यहीं पड़ी रह। हिलने-डुलने की कोशिश की, तो मार-मारकर दम निकाल दूंगी। खूसट कहीं की!'

बुढ़िया अपने बंधे हुए हाथ-पांव बेतरह पटक रही थी। बंधे हुए मुंह से ऊं! ऊं! की आवाजें निकाल रही थी। प्राय सभी लड़कियां जग गयी थीं। विस्मय भरी आंखों से यह जानने की कोशिश कर रही थीं कि यह सब क्या हो रहा है। क्या होने वाला है।

बुढ़िया को अच्छी तरह से बांध देने के बाद उसने सभी लड़कियों की हारी-थकी चेतना को बल देते हुए कहा था, 'देखती क्या हो? उठो, भागो यहां से। अपनी रक्षा स्वयं करो! मुक्ति चाहती हो, तो उठो! भागो! शोर मत करो! बिलकुल चुपचाप! बाहर गुंडे पहरा दे रहे हैं। उनसे बचना है। शी-ई-ई-! बातें नहीं। सावधान! सभी अपनी चप्पलें निकालकर हाथ में ले लो या यहीं छोड़ दो। खाली पांव भागो। पर याद रखो, जरा भी शब्द न होने पाये। अरे, फिर बातें करने लगी! चु...प!' गीता ने सबको सचेत किया और स्वयं भागने के लिए प्रस्तुत हो गयी थी।

उस वक्त बीमार और बेहोश पड़ी लड़कियों में नयी चेतना आ गयी थी। जैसे बंद पक्षियों का पिंजड़ा अचानक खुल गया हो और वे सभी मुक्त आकाश में उड़ने के लिए व्यग्र हो उठी हों। सभी दरवाजे से बाहर निकलकर भागने लगीं। परंतु वे मुश्किल से दस गज भी न जा पायी थीं कि एक खूंखार आवाज सुनकर वे सहम गयीं।

'ठहरो । खबरदार । कोई भागने की कोशिश मत करो । अपनी जगह पर खडी हो जाओ । यदि किसी ने आगे बढने की कोशिश की तो मौत के घाट उतार दी जायेगी ।'

तीन गुडे जिनके हाथो मे बदूकें थी, उन लडकियो को तीन तरफ से घेरे खडे थे । लडकिया भय से थर-थर काप रही थी । उस वक्त जीवन और मृत्यु के बीच वे झूल रही थी । उनकी ओर बदूक ताने गुडे ने कहा, 'चलो, वापस लौटो ।' भय तथा आतक मे डूबी लडकियां सहमे कदमो से धीरे-धीरे अंधेरे कमरे में वापस लौट रही थी । उनमे से तीन लडकिया भाग निकलने मे सफल हुई थी । गुडों की निगाह पडने के पहले ही वे पास के केला-बागान में छिप गयी थीं । उसे याद आ रहा था, बाद मे दो गुडों ने उसके पीछे-पीछे भागते हुए ठहरने के लिए आवाजें दी थीं, पर वह अनजान दिशा की ओर जान हथेली पर लेकर भाग निकली थी । काफी दूर तक भागती रही । कभी-कभी हाफती हुई थककर बैठ भी जाती । सिर चकराने लगता । सास फूलने लगती । ऊंचे-नीचे ऊबड-खाबड रास्ते पर अधकार में गिरती-पडती भाग रही थी । वह कुछ दूर तक दौडने के बाद एकदम पस्त हो गयी । केवल पेटीकोट और ब्लाउज पहने पीछे, दाये-बाये ताकती हुई वह भयाक्रात भाग रही थी । उसके बिखरे हुए केश उसकी आखों-मुह पर छा जाते, तो वह उन्हें दोनों हाथों से झटका देकर पीछे कर लेती । एक पथरीली जगह दाये पाव में ठोकर लग जाने से उसका अगूठा फट गया । उसमें से लगातार खून बहने लगा । उसने सोचा, थोडी देर पेडो की ओट मे बैठ जाये और घायल अगूठे पर पेटीकोट फाडकर पट्टी बाध ले । उसने पीछे मुडकर देखा । पीछे आ रही दोनों लडकियों का कहीं पता नहीं था । उस वक्त रात के दो बजे थे । अधकार की बाहों मे लिपटी पगडडी । आकाश में घिरे काले बादल ! दूर-दूर तक फैले धान के खेत । सन्नाटा बुनता अधेरे के बीच उभरती हुई कुत्तो तथा सियारों की आवाजें । पगडडी के दोनों तरफ नारियल, बरगद, आम और केले के पेड । उन सबके बीच वह भाग रही थी । तेज हवा के साथ वर्षा होने लगी, तो वह कुछ देर तक एक बरगद की डाल के नीचे अपने को भीगने से बचाये रखने का असफल प्रयत्न करती रही । पानी की बडी-बडी बूदे उसके ऊपर चूने लगी तो वह बुरी तरह भीग गयी । उसे ठंड लगने लगी । उसने बालों को दोनों

हाथों में लेकर उनमें से पानी निचोड़ा, फिर पेटीकोट-ब्लाउज उतारकर पानी निचोड़ा और भीगे कपड़े दुबारा पहन लिये। लेकिन तब उसे भीगे कपड़ों से और भी ठंडक लगने लगी। वह अपने हाथों को रगड़ने लगी। उसे बेहद भूख लग आयी थी। वह बैठ गयी और छूकर देखा। पांव का अंगूठा सूज गया था। खून बहना बंद हो चुका था पर बेहद पीड़ा हो रही थी। उन दोनों लड़कियों के बारे में उसने दोबारा सोचा। शायद वे थककर कहीं बैठी हों या पीछा करते हुए गुंडे उन्हें पकड़ ले गये हों या ... उसका अंगूठा दर्द से टीस उठा। उसने निश्चय किया, यहां से उठकर चल देने में ही भलाई है।

अब उसे मंदिर भयावना लगने लगा था। उसने मूर्तियों को उठाकर यथास्थान रख दिया। हाथ जोड़ लिये। प्रार्थना करते हुए भावावेश में उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। स्वर रुंध गये। कुछ क्षण तक वह मौन, अश्रुपूरित प्रार्थना में खड़ी रही फिर अपने को आश्वस्त करते हुए, मुक्ति की आशा और विश्वास लेकर मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतरकर कच्ची सड़क पर चलने लगी। हालांकि उस सड़क के भूगोल के बारे में उसे कुछ भी पता न था।

ढाका विश्वविद्यालय का वार्षिक समारोह! चारों ओर चहल-पहल! कैंपस में कलात्मक ढंग से सजाया गया पंडाल। दीवार पर धानी रंग के कॉलेज के झंडे पर सुनहरे अक्षरों में लिखा था—'नॉलेज इलाइटेंस' और उसी के साथ पाकिस्तान का झंडा लगा था। झंडे के नीचे टंगी हुई कायदे आजम जिन्ना और अयूब खां की तस्वीरें! फर्श पर पार्शियन लाल कार्पेट बिछी थी। बीच में बड़ी-सी मेज। मेज पर हरे रंग का मेजपोश, जिसमें लाल रंग की झालरें लटक रही थीं। तीन गुलदस्ते—एक में सफेद रजनीगंधा, दूसरे में लाल गुलाब और तीसरे में आसमानी कैंडिडरूट के फूल सजे थे। मेज की दूसरी ओर एक कतार में कई गद्देदार कुर्सियां लगा दी गयी थीं। कॉलेज के 'प्रिफेक्स' सफेद पैंट और नेवी-ब्लू रंग का कोट पहने समारोह की देखरेख में व्यस्त थे। कई छात्र एक-दूसरे से विचार-विमर्श कर रहे थे। कुछ कुर्सियां सजाने और कई फेस्टूनों को ठीक करने में लगे थे। पांच-छः लड़के सजे-सजाये मुख्य द्वार पर

आने वाले मेहमानों का स्वागत कर रहे थे । रंग-बिरंगी साड़ियां, चुस्त सलवार-कुर्ते, बेल-बॉटम, पैंटजीस, गरारा, आधुनिक वस्त्रों में सजी लड़कियां दो-दो, चार-चार या अधिक टोलियों में बंटी बातें करती हुई हरे-भरे लॉन पर चहलकदमी कर रही थीं । कई गिरोह बांधकर बैठी थीं । बातों, हंसी-ठहाकों के बीच खुशहाली चहक रही थी ।

इस सबसे हटकर लॉन में एक ओर चार लड़कियां बैठी थीं । उनके नाम थे—सईदा, गीता, जुबेदा और गौरी । सभी बी. ए. फाइनल की छात्राएं । जुबेदा पीठ के बल लेटी थी । गीता की गोद में उसका सिर था । वह रूमानी अंदाज में घास का एक तिनका दांतों के बीच चबा रही थी । सईदा दोनों पांव आगे की ओर फैलाये अल्हड़-सी बैठी थी । गौरी घुटनों के इर्द-गिर्द बांहें बांधे दार्शनिक भाव से दूर आकाश में उड़ती चिड़ियों के झुंड देख रही थी । शाम होते ही पद्मा की ओर से हजारों रंग-बिरंगे पंछी आकाश में मंडराने लगते हैं। गोल चक्कर काटते हुए दूर कभी उत्तर से दक्षिण या पूरब से पश्चिम सीमांत की ओर उड़ जाते हैं । हवा धीरे-धीरे बह रही थी । लॉन के मध्य एक बड़ा-सा बरगद का पेड़ है । गौरैयों, कौवों, अबाबीलों के घोंसले से भरा हुआ । ये सारे पंछी शाम होते ही अपने नीड़ों में वापस लौट आये थे और पेड़ों पर चहचहाने लगे थे । चारों लड़कियां कॉलेज में 'फोर सिस्टर्स' यानी चार बहनें के नाम से प्रसिद्ध थीं । उनमें से यदि एक हरे रंग की साड़ी या किसी विशेष रंग का कुर्ता-जींस या गरारा पहनती तो बाकी तीनों उसी तरह की या उसी से मेल खाती हुई साड़ियां, सलवार कुर्ते पहने दिखाई देतीं । चारों के रोल नंबर क्रमश: 234, 235, 236 और 237 थे । कक्षा में चारों के पढ़ने के घंटे एक ही समय में पड़ते थे । वे एक-दूसरे की मित्र कम, अभिभावक अधिक थीं । कॉलेज में किन लड़कों से मिलना-जुलना चाहिए, बातें करनी चाहिए, कौन-सा लड़का मनचला, बातूनी, असभ्य है और लड़कियों के चक्कर में रहता है, कौन सभ्य, सौम्य, जीनियस और महत्त्वाकांक्षी है—इन सबके बारे में उनके पास खुली सूचनाएं थी । वे एक-दूसरे के जीवन में ऐसी घुली-मिली थीं, जैसे दूध में पानी । कुछ देर पहले वे चारों एक साथ कॉलेज में आयी थीं । अभी समारोह प्रारंभ होने में देर थी, इसलिए भीड़ से अलग जाकर लॉन में बैठ गयीं। बैठते ही आपसी नोंक-झोंक में व्यस्त हो गयीं । वे चारों कहकहे लगातीं,

हँसते-हँसते टेढ़ी-तिरछी होती हुई अंतरंग बातों में खो गयीं ।

'क्या सोच रही है ?' जुबेदा ने गीता की बांह में चुटकी काटते हुए पूछा।

जुबेदा घास पर अधलेटी थी ।

गीता एक दार्शनिक की तरह गंभीर चेहरा बनाये बैठी थी, एकाएक चौंक उठी । बोली, 'कुछ नहीं । बस, यूं ही !' उसने सकपकाते हुए उत्तर दिया।

'जानती हो श्रीमती जी, जब कोई सोचता है और सिर्फ सोच के ताने-बाने बुनता है, तो समझ लो कि प्रेम का रोग उसके शरीर में घुन की तरह लग चुका है । ऐसे लोगों के बारे में शायर ने ठीक ही कहा है-–इश्क पर जोर नहीं गालिब, न लगाये लगे न बुझाये बुझे ।'

गीता ने जुबेदा की चोटी खींचते हुए कहा, 'मालूम होता है कि शाहजादी किसी शायर की जोरू बनने के लिए बेताब है ।'

जुबेदा अपनी चोटी छुड़ाने का असफल प्रयत्न करती हुए बोली, 'अजी, मैं तो किसी के लिए भी बेताब हूं । जब सर ही फोड़ना है, तो कोई जरूरी नहीं कि पैना औजार ही मिले । जो कुछ भी सामने मिले, उसी से फोड़ लो । सिर या नसीब ! न मिले तो बहुत से चोचले हैं । व्यर्थ में हार मानने की क्या जरूरत।'

'चल हट, शर्म तो तूने घूटी में पी रखी है ।' गीता ने जुबेदा की पीठ पर धौल जमाया ।

'हुजूर, शर्म किस हया का नाम है भला ? शर्म नजरों में भले ही हो लेकिन दिल तो जीवन भर बेशर्म ही बना रहता है । प्रेम के बारे में किसी पीर-औलिया से पूछो तो बेचारा झेंप जायेगा, क्योंकि प्रेम की महत्ता ही 'इस दुनिया की सच्चाई है और सच्चाई से पवित्र आत्माओं को भी कभी-कभी परहेज होता है ।'

'वाह भाई, जुबेदा ! क्या बात कही ।' सारा [illegible] उठा ।

सईदा बोली, 'सा-च । तेरे [illegible] की सच्चाई से तेरा शौहर तुझे इतना प्यार करेगा कि न दिन में चैन, न रात में नींद ।'

सभी एक साथ हंस पड़ीं । जुबेदा हतप्रभ-सी हो उठी ।

अब तक समारोह प्रारंभ हो चुका था । माइक से सभी को सभाकक्ष में आने के लिए कहा जा रहा था । सभी उठकर सभास्थल की ओर चल पडी।

जीवन महासमुद्र में
हमारे दु:ख-सुख
उन दो जहाजों की तरह होते है,
जो अपने अनचाहे दिलों के झंडे,
एक पल के लिए एक-दूसरे के आगे झुकाते है
और एक-दूसरे के पास से गुजर जाते हैं ।
इस तरह एक-दूसरे के पास से गुजरते हुए
वे एक-दूसरे के बंदरगाह नही बन सकते ।

लेकिन दो दिलो के जहाज कभी भी एक-दूसरे के बंदरगाह बन सकते है।

एक-दूसरे को दु:ख के समुद्र मे डूबने से उबार सकते है । वे एक दिशा में साथ-साथ भले ही न चल सके । वे एक-दूसरे को महसूस कर सकते है । कभी-कभी उनकी सीमाएं और दूरियां असमर्थता बन जाती है । ऐसे मे दो दिलों के जहाज के मिलने और बिछुड़ने के क्रम मे रह जाती है विवशताएं! वियोग । दुःख और बेबसी ! गीता और जुबेदा जिंदगी के ऐसे ही दो जहाज थे । अलग-अलग दिशाओ, दूरियों और गंतव्यो की ओर जाने वाले दो जहाज।

साल भर पहले वे दोनों कॉलेज मे प्रवेश लेते वक्त 'फी काउंटर' पर लाइन में खड़ी थी । जुबेदा गीता के आगे खड़ी थी । वह चटखारे ले-लेकर लतीफे सुना रही थी और चारों ओर हंसी के फव्वारे फूट रहे थे । गीता उस शोख चंचल अल्हड़-सी लड़की की बाते सुनकर बीच-बीच में मुस्करा उठती।

'कौन से विषय हैं आपके?'

गीता के पूछने पर जुबेदा ने आहे भरते हुए नाटकीय मुद्रा में उत्तर दिया, *'विषय तो अपना बस, एक ही है, और वह है—प्रेम ! बाकी विषय उसे हासिल*

करने की सीढ़िया मात्र हैं । सभी रास्ते प्रेम के चौराहे तक जाकर खत्म हो जाते हैं ।'

लाइन में खडी सभी लडकियां खिलखिलाकर हंस पडी ।

जुबेदा ने गभीर होते हुए नम्रता से सिर झुकाकर कहा, 'क्षमा कीजिएगा । मेरा विषय है—समाजशास्त्र, राजनीति और इतिहास और आपका ?' उसने गीता से पूछा ।

'बस, वही जो आपका ।'

'अरे वाह ! चलो, अपना भी कोई साथी है ।' वह हंसते-हंसते बोली, 'मेरा रास्ता तो प्रेम का है, आपको तो यह रोग नहीं ?' फिर गीता की आखों मे झाकते हुए बोली, 'मै आपको लतीफे सुनाऊ तो आप बुरा तो नहीं मानेगी ?'

'नहीं, आई लव दी रोजी फ्लावर्स मूविंग इन लाफ्टर—यानी मै गुलाबी फूलो को हंसी मे झूमते हुए देखना पसद करती हू ।'

इस पर जुबेदा ने चहकते हुए कहा, 'वाह ! मजा आ गया । आप तो शायरी भी करती है । अपना ऑटोग्राफ दीजिए न, प्लीज ।'

लाइन मे खडी सभी लडकिया फिर हंस पड़ी । गीता को भी हंसी आये बिना न रही ।

उस दिन से दोनो प्रगाढ़ मित्र बन गयीं और उनकी मित्रता पर आतरिकता का रंग चढ़ते देर न लगी ।

हर रोज कब, कौन-सी घटना हुई, कौन-सी विशेष बाते हुई, पढ़ाई, क्लास, कपडे, खाने से लेकर शादी, प्यार, लडकियो के विभिन्न दृष्टिकोणों, आशाओं और महत्त्वाकाक्षाओं, भविष्य के सपनो, शेख मुजीब, आवामी लीग और बंगलादेश की समस्याओं पर उनके विचार एक-से थे । वे आपस की मानसिक, आर्थिक समस्याओं को भी बाट लेती । विश्वविद्यालय के 'छात्र सघ' की सक्रिय सदस्या भी थी वे दोनो ।

जुबेदा पिता की इकलौती बेटी थी । छः साल की थी, तभी उसके ऊपर से मां की छाया उठ गयी । उसके पिता मौलाना हबीबुल्ला चौधरी ढाका कार्पोरेशन के काउसलर थे । सिद्धेश्वरी बाजार मे कपड़े की बड़ी-सी दुकान थी—'ढाका स्टोर्स' । पत्नी के दिवगत होने के शोक मे उन्होंने दुकान-व्यापार

से मुह मोड लिया । आजिमगज मे दस कट्टा जमीन लेकर एक मकान बनवा लिया । रोज जुबेदा को स्कूल ले जाते, छुट्टी होने पर ले आते । उसकी सारी आवश्यकताएं और जिद पूरी करते । जब नौकरानी जुबेदा के बित्ताभर बड़े बालों की दो चोटिया बनाती होती, तो वे आरामकुर्सी पर चुपचाप बैठे देखते रहते । कभी-कभी उनकी आखें सजल हो उठती—'या खुदा ! तेरी अम्मी आज जिंदा होती तो...' होठों से अस्फुट शब्द निकलते और जुबेदा को सीने से लगा लेते । उफनती हुई भावनाओं को वे रोक नहीं पाते । उनकी आखें सावन-भादों बन जातीं ।

जुबेदा छुटपन से ही पढने-लिखने में तेज थी । गणित और अंग्रेजी में प्रथम आती । मौलाना ने जुबेदा के पालन-पोषण के लिए दूसरी शादी की थी । जुबेदा को अपनी नयी मा बिलकुल पसद नहीं थी । बी. ए. पास कर लेने के बाद पिता की मर्जी के मुताबिक जुबेदा ने एम. ए. में समाजशास्त्र ले लिया । अब वह बीस साल की थी । आंखों के अंगूर पककर लाल हो गये थे और उसके मन में संजोये सपनो की नाव कोमल भावनाओं की उफनती लहरों पर मचलती, हिचकोले ले रही थी । कभी-कभी वह बहुत अकेलापन महसूस करती, हालांकि दूसरी मां उसे बहुत प्यार करती थी । कॉलेज के कई लड़के जुबेदा से मेलजोल बढ़ाना चाहते थे । उसे अपने सपनों की साम्राज्ञी बनाने की आशाएं लिये जीते थे । लेकिन जुबेदा ने कभी किसी को छूट नहीं दी । कइयों ने पत्र लिखकर अनुरोध भी किया—'आप यूनियन की सेक्रेटरी के लिए खड़ी हो जायें। हमारा सारा वोट आपको मिलेगा । हम आपको चाहते है ।' वह स्पष्ट कह देती—'ना बाबा ! इस यूनियनबाजी के झगडे से, किसी रेस्तरां में, बैठकर गर्म-गर्म कॉफी पीना बेहतर है ।' उसकी जिंदगी में केवल दो ही शौक थे । बढ़िया गर्म कॉफी और नये शायरों की कविताएं । घर पर मौलाना साहब की छोटी-सी लाइब्रेरी थी, जिसमें नये-पुराने, दुनिया के प्रसिद्ध कवियों की पुस्तकें थी । उन्हें भी कविताओं का शौक था । उसने एक बार कराची से प्रकाशित होने वाली हमसफर' पत्रिका में अपनी एक रचना भेजी । वह छपी और संपादक की टिप्पणी के साथ—'वर्ष की कुछ श्रेष्ठ कविताओं में से एक ।' तब ढाका के जाने-माने कवियों ने उसे पत्र लिखे और कई कवि-सम्मेलनों में आने का निमंत्रण भी मिला उसे । पर उसके जीवन में सिर्फ इसी बात का दुःख था

कि उसे मा का प्यार न मिल सका । यही दर्द क्षण-प्रतिक्षण उसकी आखो मे सावन-भादो बनकर उमड पड़ता और एकात मे वह सिसक उठती । इस दर्द से अपने को दूसरी ओर मोडने का एक उपाय था । कविताए लिखना, लतीफे सुनाना, जिदगी को सहज ढग से जीने की कोशिश करना । वह अदर-ही-अदर भावुक हो उठती—'काश, मेरी अम्मीजान जिदा होती तो कितनी खुश होती यह देखकर कि उनकी बेटी नालायक नही निकली ।' वह गमगीन हो उठती। उसके छोटे-से ससार मे एकमात्र गीता ही उसकी अपनी थी, जो उसको दु ख मे राहत दिया करती ।

गीता उसे अपनी बाहों मे भरकर दिलासा देती, 'अरी, दु ख काहे को करती हो । बस, निकाह कबूल हुआ नही कि दिन गिनने लगोगी । लडकिया शादी के लिए ही जवान होती हैं । प्यार के लिए जीती हैं और सारी उम्र प्यार के सपने सजोते प्यासी अतृप्त मर जाती हैं ।'

गीता के सहज गभीर जीवन दर्शन से उसका मन भी हल्का हो जाता । वह आखे पोंछ डालती । गीता की आखो मे आत्मीयता खोजते हुए उसे बाहों मे भर लेती ।

वैसे जुबेदा को इतनी जल्दी शादी पसद नही थी । वह एक दिन गीता से कह रही थी, 'अभी मैं डॉक्टरेट करना चाहती हू । लेकिन पिता जी की लगातार बीमारी के कारण मेरी आशाए पूरी न हो सकेंगी ।'

मौलाना चौधरी ने चाहा था कि वह प्रोफेसर बन जायेगी, तब कही उसकी शादी के बारे मे सोचा जायेगा । पर अचानक दिल की बीमारी के कारण दो साल तक वे बिस्तर पर पड़े रहे । वे जीवन से निराश हो गये थे । महगी दवाइया, डॉक्टरो की देख-रेख के बावजूद उनका मर्ज ठीक नहीं हो रहा था ।

एक दिन उन्होने जुबेदा को अपने पास बुलाया और उसके बालो मे ममताभरी उगलियां फेरते हुए बोले, 'बेटी ! अब मै अपनी जिदगी से हार चुका हू । जाने कब खुदा अपने पास बुला ले । बेटी, तेरी शादी हो जाये तो मुझे राहत मिलेगी । इसलिए मैने फैसला किया है, तेरी शादी अपनी आखो के सामने देख लेता तो आत्मा को शाति मिलती । तू जानती है, मामू के लडके को ? अरे, वही हैदर.., कहते-कहते उन्होने जुबेदा को अपने सीने से लगा

लिया ।

जुबेदा की आखों से आसू के कई कतरे मौलाना के चेहरे पर ढुलक पडे । मौलाना भाव-विह्वल हो उठे । कुछ क्षणो तक बाप-बेटी उसी स्थिति मे एक-दूसरे को महसूसते, एक-दूसरे को राहत का मौन स्पर्श देते बैठे रहे।

उस वक्त रात के दस बज रहे थे । मुहल्ला सुनसान था । सडको पर बहुत कम लोग आ-जा रहे थे । इक्का-दुक्का मोटरें, टैक्सिया चल रही थी । 'मुखर्जी मौशाय बाडी' की ठाकुर मा कोठी के बरामदे में आरामकुर्सी पर लेटी थी । मटू यानी उनका नाती उनके सीने से चिपका था । वे मटू की पीठ पर थपकियां देकर चदा मामा की लोरी गा-गाकर सुना रही थी ।

'आज बडी देर कर दी, बेटी ? उन्होंने तेज कदमों से चली जाती हुई गीता को टोककर पूछा ।'

गीता ने ठाकुर मा को प्रणाम किया । किताबे सभालती हुई बोली, 'यूनिवर्सिटी मे जलसा था, ठाकुर मा । बहुत देर हो गयी, चलती हू, मा चिंता करती होगी ।'

गीता के जाने पर ठाकुर मा कॉलेज मे जलसा होने पर सदेह प्रकट करती हुई मन मे तरह-तरह की बाते कतरब्योंत करती बैठी रही । चदा मामा की कहानी कहीं आकाश मे कोने मे उड गयी थी । 'कायदेआजमपार्क' के मोड पर एक रिक्शावाला अपने रिक्शे मे गठरी बना सो रहा था । काटते हुए मच्छरो को भगाने के लिए नीद में उसका हाथ इधर-उधर डोलता, तो उसकी कलाई में बधी घंटी टिन-टुन करती हुई बज उठती और अचानक उसकी आख खुल जाती थी । निदासी आखों से वह इधर-उधर देखता और फिर रिक्शे में दुबक जाता ।

कुछ देर तक गीता उसे देखती खडी रही । उसे रिक्शावाले की निर्धनता पर दया आ गयी । उसने सोचा—बंगलादेश पता नही कब तक गरीबी से लडता रहेगा । वह आगे बढ गयी ।

घर का किवाड अधखुला था । अंदर कमरे में जल रही रोशनी, अधखुले किवाड से बाहर निकलकर रोशनी की एक मीनार बना रही थी । उसने किवाड को पूरा खोला और अंदर चली गयी । रसोईघर से पकती हुई रोटी [illegible]

गध तथा बर्तन खटखटाने की आवाजें आ रही थीं । उसने सोचा मा रसोईघर मे खाना बना रही है । वह किताबे मेज पर रखकर बाथरूम गयी । हाथ-मुह धोया । आईने मे उसने अपने चेहरे को गौर से देखा । गाल पर लटक आये बेतरतीब बालो के गुच्छे सवारकर ठीक किया । फिर बडी-बड़ी कजरारी आखो से अपने चेहरे तथा गर्दन के नीचे के उभार को देखती रही । उसके होठों पर एकाएक मुस्कान फैल गयी । होठो से निकल गया—'धत्' । ओस-कणो से धुले सफेद कमल पर प्रसन्नता की एकदम ताजा किरणें नाच उठी । आज वह बेहद खुश थी । बाथरूम से निकली तो गुनगुना रही थी । 'इश्क पर जोर नही ..' उसने आचल को कमर मे लपेट लिया और रसोई में चली गयी । दो कमरो का फ्लैट था उसका । पीछे कमरे के साथ बरामदा था । उसी के बगल मे रसोई थी । मां-बेटी इस मकान मे पद्रह साल से रह रही थी । तब गीता तीन साल की थी। उसके पिता का स्वर्गवास हो गया था । चौबीस साल की जवानी के माथे पर वैधव्य का कालिख लग गया । नाते-रिश्तेदारो ने हिरण्यमयी देवी को बहुत समझाया कि वे दूसरी शादी कर ले, लेकिन उन्होने यौवन के उन तमाम दु खो को सफेद आचल मे बाध लिया । अपने प्यार की एकमात्र निशानी को जीवन की अनमोल निधि मानकर उसे सुरक्षित रखना ही उन्होने श्रेयस्कर समझा । गीता के लालन-पालन और उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए सारा जीवन समर्पित कर दिया । वे बी ए. पास थी । पश्चिमी पाकिस्तानी सेना के कर्नल के यहा जो ढाका में स्थानांतरित होकर आया था, गवर्नेस का काम मिल गया । दो सौ रुपये महीने मिलते थे । उसी से गीता की पढाई-लिखाई, घर का सारा खर्च चलाती । गीता जब से पढ़ने लगी, हर साल फर्स्ट आती और उसे वजीफा भी मिलता था । फीस माफ थी । मां को गीता से बडी आशाएं थीं । मेहनत और चिंताओ ने हिरण्यमयी देवी को चालीस साल की उम्र मे ही बूढी बना डाला । नौकरी के अलावा जो भी वक्त मिल पाता, मुखर्जी बाडी जाकर उनके परिवार के कपड़े सिलाई करती । मुखर्जी परिवार की ठाकुर मां उन्हें बहुत मानती थीं। वैसे भी वे पूजा-पाठ में अधिक समय देती [illegible] गीता के भावी जीवन की चिंताओ में [illegible] रहती [illegible] हो जायेगी । फिर? नौकरी? [illegible] अपनी लाड़ली की [illegible] बडी

धूमधाम से। गीता बीस पार कर चुकी थी। हिरण्यमयी देवी इस बात में विश्वास करती थी कि जवान लड़की और बारूद घर मे नही रखना चाहिए। सोचती, शादी के लिए पढ़ा-लिखा योग्य लड़का भी चाहिए। पढ़ा-लिखा लड़का सेंत-मेंत थोड़े ही मिल जाता है। कम-से-कम पाच-दस हजार लगेगा। गीता उनके लिए बेटा और बेटी दोनो थी। वे कभी-कभी दीवार पर टंगे अपने पति के चित्र के सामने खड़ी होकर भावावेश मे रो पड़ती—अच्छा संबंध न मिलने पर तुम मुझे धिक्कारोगे न? कहोगे, प्यार के फूल को गंदे नाले मे डाल दिया। हिरण, तुझसे ऐसी उम्मीद न थी—वे काफी देर तक सुबकती रहती। अकेले घर मे उभरनें वाली सिसकिया सुननेवाला उनके अतिरिक्त वहा दूसरा कोई न होता।

गीता ने रसोई मे जाकर देखा तो मा रोटिया सेक रही थी। तवे पर डाली गयी रोटी जल रही थी और बेलते हुए उनका हाथ रुक गया था। वे रो रही थी।

गीता के आने की आहट पाकर उन्होने संयत होते हुए कहा, 'बेटी, लकड़िया गीली हैं। जलती ही नही।' उन्होने अपने रोते हुए चेहरे पर सायास मुस्कान लाने की कोशिश की। आचल से आसुओ को पोछने लगी, 'आ, बेटी! यहा बैठ। मै ताजी रोटिया देती जाती हू, खा ले। तेरे लिए पायस (खीर) भी बनाया है।'

'नही मा, एक साथ खायेंगे। तू हट, मैं रोटिया बनाती हूं।' गीता ने मां के हाथों से चौका-बेलन ले लिया।

मां ने हाथ धोया और हाथ आंचल से पोछते हुए कहा, 'आज बहुत देरी कर दी?'

गीता ने उत्तर दिया, 'आज 'एन्युअल फंक्शन' था। सबेरे तुम्हें बताना ही भूल गयी। तू बहुत चिंता में थी न, मां?'

हिरण्यमयी देवी ने आश्वस्त होते हुए समझाया, 'अब तू बड़ी हो गयी है। सब कुछ समझने लायक हो गयी। रात मे देरी करना ठीक नहीं। समय बहुत खराब है।'

'ओफ, मा, तू बिलकुल चिंता मत किया कर।' तवे से रोटी उतारकर अंगीठी में सेंकते हुए गीता बोली, 'आज कॉलेज मे नाटक था। बड़ा अच्छा

रहा । मा आज रोटिया कम बनायी है तूने? घर मे क्या आटा नही?'

मा सकोच को दबाते हुए बोली, 'आज एकादशी है । खाने वाली तू अकेली है। मेरा व्रत जो है ।'

'..ओह डार्लिंग मा । ये व्रत-व्रत रहने दे । रोज-बरोज व्रत रखना इस बूढे शरीर के लिए ठीक नही । मै जानती हू, तू मेरे लिए मरती रहती है । अपनी बूढी सासे आग मे तपा रही है ।' गीता ने आखो मे भर आये आसुओं को कोहनी मे पोछ लिया ।

मा ने सयत शब्दो मे कहा, 'बेटी, धर्म-कर्म मे अब समय नही लगाऊंगी तब फिर क्या मरने के बाद.. ?'

गीता रोटिया बेल रही थी और दिमाग मे तरह-तरह की बाते उठ रही थीं—एक मै हू, गरीब मा की इकलौती बेटी और एक अमर है, धनी बाप का बेटा । मोटर, बगला, आज नाटक मे अमर की लिखी 'फैंटेसी' बहुत सफल रही । समारोह समाप्त होने पर दोनो यूनिवर्सिटी के लॉन मे काफी देर तक घूमते रहे । नीले सूट और लाल टाई मे अत्यधिक समार्ट लग रहा था अमर।

'...क्या सोच रही है, बेटी? तवा जल रहा है । ला दे मुझे । चल हट।' मा की आवाज से गीता चौक उठी । जिस रोटी को वह बेल रही थी, तिकोनी होकर तिरछी, लबी होकर बेतरतीब फैलती जा रही थी।

उस दिन रविवार था ।

रविवार ही एक दिन ऐसा होता, जब हिरण्यमयी देवी तथा गीता सारा दिन साथ-साथ रहते ।

गीता ने ही उस दिन दोपहर का खाना बनाया । मां देर तक पूजा करती रहीं । पूजा से लौटकर आयीं तो देखा गीता रसोई मे बैठी कोई किताब पढ रही है ।

'खाना बना लिया, बेटी? हिरण्यमयी देवी ने बरामदे से आवाज

दी।

'हां, मां । आओ, ठंडा हुआ जा रहा है । तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही हूं । गीता ने किताब बंद करके रख दी । किचन मे जाकर दो थालियां परोसने लगी । तभी दरवाजे पर दस्तक हुई ।

मां ने कहा, 'जा देख तो बेटी, कौन है? ला मुझे दे, मैं थालियां सजाती हूं ।'

गीता ने दरवाजा खोला तो खुशी के मारे चहक उठी, 'अरे तू?'

बाहर दुपट्टे का छोर मुंह में दबाये अल्हड़ अंदाज में जुबेदा खड़ी थी।

'आ, अदर तो आ । इस दोपहरिया मे? अचानक मैं कैसे याद हो आयी रानी जी को ।'

'अच्छा, बता तो सही । तुम्हें डिस्टर्ब तो नही कर रही । यदि अमर भाई-जान अदर हो तो मै उल्टे पाव लौट जाऊं ।' जुबेदा सचमुच लौटकर चलने को हुई तो गीता ने उसकी चोटी कसकर पकड ली, 'बेशर्म कहीं की ! मां सुनेगी तो भला क्या सोचेगी ।'

'वाह रे वाह । शर्म तो तुझ जैसी सुदरी ने अपनी नागिन जैसी इन दो चोटियों मे बाध रखा है । अगर तू कहे तो सारी बात साफ-साफ बता दूं मां से । बस, कल ही शहनाई बजेगी । पी-पीं-ई-ईं-ई- ।' जुबेदा दोनों हाथों से शहनाई बजाने का स्वाग करते हुए नाचने लगी ।

'...ओह ! लगता है, मेरी शादी से ज्यादा तुम्हें अपनी शादी का शौक बेताब किये हुए है ।' गीता ने जुबेदा की बांह में जोरो का धौल जमाया।

'...मां, देखो, गीता मुझे मारकर भगा रही है । मैं चली जाऊं?' जुबेदा बरामदे से चिल्लायी ।

'...कौन? जुबेदा । आ बेटी ।' रसोईघर से मां की आवाज आयी।

'...पर, मां, यह गीता जो डंडा लिये आगे खड़ी है । अंदर आने ही नहीं देती ।' जुबेदा आंखो में शरारत और होठों पर अर्धमुस्कान लिये

चिल्लायी।

गीता ने धीरे से कहा, 'आ जा नागिन। तू जिसे डसेगी, लहर भी नही लेने देगी।'

अब तक जुबेदा इठलाती हुई दरवाजे के अदर आ गयी थी।

गीता ने उसे खाट पर ढकेल दिया, 'बैठ, मै अभी आयी। ये हाथ जूठे हैं। जरा धो लू।' फिर एकाएक गीता अपना हाथ जुबेदा के दुपट्टे से पोछने लगी।

'...हिश्, क्या करती है? ब्याह होगा, तो अमर की खूबसूरत टाई मे पोछना ये नाजुक हाथ।'

'...चुप मुहफटी।' गीता ने आखे तरेरकर कहा और फिर जुबेदा के हाथ मे थमी पत्रिका देखते हुए बोली, 'कौन-सी पत्रिका है, रे? मै भी तो देखू।' उसके हाथ से पत्रिका छीन ली।

गीता ने पत्रिका के पृष्ठ उलटे-पलटे, विषय-सूची देखी। शीघ्रता मे पेज ढूढने लगी। इकतालीस-इकतालीस। इकतालीसवे पृष्ठ को ध्यान से पढने लगी। अब तक जुबेदा ने ताड लिया कि वह क्या पढ रही है।

वह खाट पर से उठकर आयी और गीता के कंधे का सहारा लेकर झुककर खडी हो गयी। फिर रवीन्द्रनाथ का एक गीत गुनगुनाने लगी

अजाना सुर के दिये जाय काने
भावना आमार जाय भेसे जाय गाने-गाने
विश्रत जन्मेर छाया लोके, हारिये जाव विनार शोके—
फागुन हवाय केंदे फिरे पथहारा रागिनी
कौन बसंतेर मिलन राते तारार पाने
भावना आमार जाय भेसे जाय गाने-गाने ॥

गीत को अधूरा छोडकर पत्रिका के पृष्ठ पर आखे घसाते हुए छपी कविता पर टिप्पणी करते हुए बोली, 'वाह रे! अमर ने तो कमाल कर

दिया । मिया को सारी स्टेशनरी की दुकाने बद मिली क्या, जो जनाब चाहत के कोरे कागज पर लिखने लगे ?' फिर गीता की आखो मे झाकते हुए कहा, 'अरे, भले आदमी चले आते इधर तो क्या बिगड जाता ? चाहत भी मिल जाती और कोरा कागज भी ।'

दोनो अचानक हंसने लगी ।

जुबेदा गीता को दोनो बाहो मे भरकर सीने से लगाने लगी तो गीता ने आखो मे गुस्सा भरकर मैगजीन को बद करते हुए कहा, 'चल, हट ! यह रूमानियत सुहाग-रात के लिए बचाकर रख ले ।'

जुबेदा ने उसकी आखो में आखे डालते हुए कहा, 'अरे अभी तो पहली स्टेज है, इस रूमानियत की—।

दिले नादान तुझे कैसे समझाऊ
प्यार की आग को कैसे छिपाऊ ।'

गीता ने झुककर जुबेदा की पेशानी चूम ली ।

'..हाय । इतने जोर से ।' जुबेदा ने कहा और दोनो एक साथ हंस पडी।

'...क्यो री, जूबी । कल तो तू कह रही थी कि आज नारायणगज जायेगी ?' गीता ने पूछा ।

'..हा, पिताजी, अकेले ही गये । मै नही गयी । सबेरे से सोच रही थी, चलकर तुझसे माफी माग आऊं । कल तुझे बहुत चिढाया था न ! तू नाराज तो बहुत हुई होगी ?'

'...बहुत ! बहुत ।। बहुत ।!!' गीता ने मुह फुला लिया और सचमुच ही रूठने का भाव मुह पर छा गया ।

'...कोई बात नहीं, मेरी प्यारी-प्यारी गीता रानी ! शादी की रात अपने अमर को मेरी तरफ से प्यार से च्वक-च्वक, दे देना बस पट जायेगा, नाराजगी का ब्याज ।'

'...फिर शैतानी सूझने लगी तुझे ? उठाऊं डंडा ।'

'...पुकारूं मां को ?'

तभी मा की आवाज आयी, '...गीता बेटी, तुम दोनो खाना खा लो, खाना ठंडा हुआ जा रहा है । यही किचेन मे आ जाओ !'

जुबेदा ने प्राय चिल्लाती-सी आवाज मे कहा, 'मा, मै खाकर आयी हू।'

गीता ने मैगजीन जुबेदा के हाथ मे थमा दी, 'तो ठीक है, तू बैठ । मै खाकर अभी आयी ।' वह अदर कमरे मे चली गयी । लौटकर आयी तो हाथो मे दो थालिया थी । मछली का शोरबा, भात, बैगन भाजा, आलू-टमाटर की तरकारी, सलाद और खीर ।

जुबेदा ने थाली गीता के हाथ से झपटकर ले ली, 'ओफ। भूख के मारे बुरा हाल है ।'

'...लेकिन, तू अभी मा से कह रही थी कि खाकर आयी है ।'

'...जवानी मे हसी और भूख का कोई ठिकाना नही । जितना हसो, उतनी ही हसी आती है । जितना ही खाओ उतनी ही भूख लगी रहती है । हाय अतृप्ति की मारी जवानी ।'

जुबेदा के इस नीति वचन पर दोनो हंस पडी । खाते हुए गीता ने देखा कि जुबेदा के चेहरे पर अचानक अव्यक्त दुख की लकीरें खिच आयी हैं।

गीता ने पूछा, 'जुबी ! बता तो इतनी गभीरता के साथ क्या सोच रही है ।'

जुबेदा वडी मुश्किल से दार्शनिक-सी गभीर होते हुए बोली, 'देख गीता, हम जो कुछ चाहते है, वह नही मिलता ? ईश्वर ने इसान के सीने मे एक दिल तो बना दिया और साथ मे तमन्नाओ से भरा जहाज अजाना तकदीर के हाथों सौप दिया । जानती है, अब्बाजान अगले जुम्मे को मेरे निकाह की तारीख पक्की कर आये है । इसलिए नारायणगंज गये थे । मुझे भी ले जाना चाहते थे, पर मै नही गयी ।'

गीता हाथ में थमा कौर मुह तक ले जाते हुए अचानक रुक गयी । उसकी आखे आश्चर्य से फैली रह गयी—। बोली, यह बात तूने अब तक बतायी क्यो नहीं ?'

जुबेदा ने कहा, 'सोचती थी, शादी करूगी ही नही, फिर बताने से क्या फायदा ?'

'..तूने अपने होने वाले पतिदेव को देखा भी है? पसंद है?'

'..पसद-नापसद का सवाल ही कहा उठता है? मैने तो जनाब की फोटो तक नही देखी। सुनती हू, नारायणगंज मे बिसातखाने की दुकान है।' कहते-कहते जुबेदा खामोश हो गयी। उसका चेहरा उदासी मे डूब गया। जैसे अपने कहे पर उसे आत्मग्लानि हो रही हो।

'तेरे वालिद को भला इतनी जल्दी भी क्या थी, जूबी? आखिर तू कोई बच्ची तो है नही। उन्हें तेरी इच्छाओं का सम्मान करना चाहिए।

'. मेरी इच्छाओ के सम्मान की चिंता होती, तो आंसुओं के समुदर मे तिरने की जगह, आज मै नग्मे न गाती। हमारे खानदान मे ऐसा कभी हुआ ही नही कि शादी के लिए लडकी की पसंद-नापसंद पहले से देखी-परखी जाये। घरेलू सभ्यता और मान-सम्मान की रस्सी से बाध दिये जाते हैं—वैवाहिक-सबध। बस, मुझे आज पता चला है कि अगले जुमा को मेरा निकाह है। मुहूरत ही ऐसी पडी है। पिता जी को चार-पाच महीनो पहले दिल का तीसरा दौरा पडा था। इसी कारण जल्दी कर रहे है। तेरे पास आयी हू। तू जो कहेगी, वही करूंगी। सच, गीता, मेरे अरमानो का जहाज तो डूबता हुआ नजर आ रहा है। क्या पता था कि मेरी खुशियों को इतनी जल्दी शादी का विराम-चिह्न बनना पडेगा।' जुबेदा की आखों से कई बूद आसू ढुलककर गालो तक बह निकले।

गीता ने थाली फर्श पर रख दी। बायें हाथ को जुबेदा के कंधे पर रखते हुए आत्मीयता से दिलासा दिलाते हुए बोली, 'रो मत, डार्लिंग! हर मा-बाप अपनी सतान के लिए अच्छा ही सोचते-करते हैं। उनकी भी अपनी मजबूरियां होती है। जवान लडकी मां-बाप की सबसे बडी चिंता होती है। मेरा विचार है, जूबी, हर लडका स्वभावत अच्छा होता है, बशर्ते कि उसका नाक-नक्श ठीक-ठाक हो—और हाजमा दुरुस्त हो।' गीता ने जुबेदा को हंसाने के इरादे से ही हाजमा वाली बात कही थी।

कातर, विषादयुक्त हंसी जुबेदा के होंठो पर फैल गयी।

उसने गीता से पूछा, 'देवी जी, भला हाजमा से शादी का क्या सबध?'

'बहुत है, सुनेगी? मेरी एक पडोसिन है। श्रीमती नंदिता गुहा। वह बेचारी जब देखो, अपने पतिदेव की बदहजमी का रोना रोती रहती है। रात भर बेचारा पति बाथरूम भागता रहता है और वह बिस्तर पर सारी रात ऊंघती बैठी रहती है। बाथरूम और बिस्तर का फासला नापते हुए रात की खुशियां गवा देती है। जानती हो, बाथरूम और बिस्तर जिंदगी की खास जरूरते है।'

दोनो हंस पडीं। विषाद का बादल छंट गया। राहत का खूब नीला-निरभ्र आकाश उनके बीच फैल गया।

मा एक प्लेट में मछली का शोरबा तथा दूसरी मे भात लिये आती दिखी, तो गीता ने झटपट फर्श पर रखी थाली उठा ली। जुबेदा भी अपने को सयत करते हुए खाने लगी।

'...अरे, मा। आप नाहक तकलीफ करती हैं। इतना खा लिया कि मत पूछिए। लगता है घर जाने के लिए ठेला बुलाना पडेगा।' जुबेदा ने सायास मुस्कान के साथ कहा।

'...बेटी, यही तो उमर है खाने-पीने की।' मा आत्मीयता से बोली। फिर जुबेदा के ना-नू करते रहने पर भी एक टुकडा मछली थाली मे डाल दिया। कटोरी मे शोरबा उडेलते हुए बोली, 'इसे अपना ही घर समझो। खाने-पीने में भला सकोच कैसा? मेरे लिए जैसे गीता, वैसी ही तू।'

मा अदर चली गयी तो गीता ने जुबेदा की थाली से मछली का टुकडा, जिसे मां दे गयी थी, उठाकर अपनी थाली मे रख लिया, तो जुबेदा बोल उठी, '...उइ मा, यह क्या करती है? कहीं मा ने देख लिया तो? भला तू मेरा जूठा खायेगी। तेरा धर्म नही बिगड़ेगा। जानती है, तेरे-मेरे धर्म अलग-अलग है।'

जुबेदा की बाह मे जोरो का घूसा जमाते हुए गीता बोली, 'अरे खोखी, ये मछलियां ईश्वर की बनायी गयी नदियों मे पैदा होती हैं, धर्म के पानी में नही। धर्म का हाथ आदमी के दिलों मे खरोचें भले ही लगा ले, आदमी के रिश्ते को अपवित्र नही कर सकता। निजी स्वार्थ और पेट की राजनीति के लिए ही धर्म जमाने भर से आपस मे लडते आये है, मेरी सजनी! हर देश

की किस्मत बनती है और बिगडती है तो सिर्फ पेट और स्वार्थ के लिए । हम बैठकर खाना खा रहे हैं, धर्म नही ।'

जुबेदा की आखो मे खुशी टटके गुलाब की तरह खिल गयी ।

दोनो खा चुकी । थाली मे ही हाथ धोया । एक-दूसरे के दुपट्टे-आचल मे हाथ पोछ लिये ।

जुबेदा बोली, 'अच्छा गीतू, अब मै चलूगी । बहुत देर हो गयी । पिता जी चिता मे होगे ।'

' एक गीत सुना दे, तब छोडूगी ।' गीता ने जुबेदा का हाथ पकड लिया ।

'फिर किसी दिन ।'

'न, अभी, इसी वक्त ।' गीता जुबेदा की कमर मे गुदगुदी करने लगी।

'ओफ ! छोड दे बाबा, सुना देती हू । तू भी क्या याद रखेगी।'

गीता अदर से सितार उठा लायी ।

जुबेदा ने रवीन्द्र सगीत गाना आरभ किया—

आमार निखिल भुवन हारा लेन आमिजे
विश्व विनय रागिनी जाय ना मिजे
गृहहारा हृदय हाय
आलो हारा पथे धाय
गहन तिमिर गुहा तले जाई न मिजे ॥

जुबेदा की पलके नम हो आयीं । फिर भी वह गीत की स्वर-लहरियो में आकंठ डूब गयी । गीत समाप्त किया । सितार एक तरफ रख दिया और खड़ी हो गयी—'अब चलती हूं, गीतू । शादी का निमत्रण मौखिक दिये जा रही हूं । आना जरूर ! कल कॉलेज मे मिलेगे । रात मे अमर को खत-वत लिख लेना । कल मै ही पोस्टमैन बन जाऊंगी तुम्हारी ।'

गीता ने उठकर उसे अपनी बाहों मे भर लिया ।

दुखो की पर्तों मे खोते हुए जुबेदा बोली, '.तू मेरा एक काम कर सकेगी ?'

'...भला सुनूं तो क्या आज्ञा है राजकुमारी की ।' गीता ने नटखट भाव से कहा ।

'...आज्ञा नही, डार्लिंग, सिफारिश है और वह, यह कि तू अमर से शादी कर ले । वह बेहद आदर्शवादी और भावुक लड़का है । सच कहती हू, मैं तेरी जगह होती तो खुशी से पागल हो उठती । जानती है एक राज की बात ? अमर मेरा 'ड्रीम-व्याय' रहा है । मै उसे सुखी देखना चाहती हू और तू ही उसे खुशी और भरपूर प्यार दे सकती है ।'

'...तो यह बात है । एक तीर से दो शिकार करती रही थी तू अब तक। खैर, चलो मै तुझे माफ कर देती हू । पर शादी के बाद अपने तीर को एक ही निशाने के लिए रखना ।' गीता हंस पडी, लेकिन जुबेदा का चेहरा गभीर बना रहा ।

वह उसी गभीरता से बोली, 'शादी तो एक रस्म होती है, गीतू । समाज की रस्म, इज्जत की रस्म । मै इस रस्म के बधन को निबाहूगी, पर दिल की पर्तों मे छिपे प्यार की रस्म तो बडी आत्मीय होती है । उसे कहा सजोकर रखू, इसे मै नहीं जानती ।'

'...जूबी, तेरे बारे मे सोचते हुए लगता है मै तुझे खो रही हू।'

कुछ क्षणो की चुप्पी के बाद जुबेदा बोली, 'मुझे इस शादी से डर लग रहा है । आज रात एक बुरा सपना देखा था कि मैं पद्मा मे नाव पर जा रही हू । अचानक ही नाव डगमगाने लगी और उसमें पानी भरने लगा । नाव डूबने लगी । मै सहायता के लिए चिल्ला रही थी, पर आवाज़ मेरे तलुवे से चिपक गयी थी । बाहर निकल ही नहीं रही थी । जगने पर पसीने से तर-बतर थी ।'

'...तू तो व्यर्थ मे चिंता करती है, जूबी । जो किस्मत में होना है, होगा। आदमी का काम है अच्छा करे । तू तो भली है । नेक है, 'लेट अस फॉरगेट दि एबिल ऐड सेलिब्रेट दि प्रिमिटिव लव यानी मैरेज ।' हमे भूल जाना चाहिए बुरे समय की छाया ! चलो, सजाएं सडी-गली परंपरा से बंधा प्यार यानी शादी-वादी !'

गीता ने जुबेदा को चूमना चाहा तो जुबेदा ने हाथ बढ़ाकर रोक दिया, ' अभी नही, डार्लिंग । शादी के बाद ।'

दोनो ठहाका लगाकर हंस पडी । विषाद का बादल बहुत कुछ छंट गया, लेकिन जुबेदा के चिताग्रस्त दिमाग मे अजाने भविष्य की हवाए तेज बह रही थी । उसके मुंह पर उदासी फिर घिर आयी और उसी उदासी के धुए मे वह गीता से विदा लेकर अपने घर चल पडी ।

18 फरवरी, 1970

रात दस बजे निकाह की रस्म प्रारंभ हुई । विशेष रूप से सजे पंडाल मे निकाह की रस्म पूरी होने वाली थी । औरतें आपस मे फुसफुसा रही थीं । दो मौलवी निकाह पढाने के लिए आ चुके थे । जुबेदा का साज-श्रृगार एक नयी-नवेली दूल्हन के रूप मे गीता और गौरी ने किया । दुल्हन से सटकर बैठी थी—उसकी बुआ और ताई जी, जो पाच दिन पहले से ही मेहमान के रूप मे डटी थी और अब दुल्हन को अपने आचल से हवा कर रही थी । दादी-अम्मा के कंधे से कुहनी टेके बैठी थी, उनकी क्वारी लडकी रोशन । बारात आने पर रोशन बडे ध्यान से दूल्हे को और सिर पर बधा सेहरा देख आयी थी । फूलो की झालर के बीच से दूल्हे का चेहरा बीच-बीच में दिखाई दे जाता था । गीता, सईदा, अलका, गौरी, रोशन के पीछे बैठी धीरे-धीरे बाते कर रही थी । उनकी बातचीत का कोई भी टुकडा उनके अलावा कोई नही सुन सकता था । ढाका यूनिवर्सिटी मे प्रोफेसर राय अंग्रेजी पढाते समय अक्सर लतीफे सुनाया करते थे और लडके-लडकिया हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते । गौरी प्रोफेसर राय के लतीफो में से कुछ एक सुना रही थी ।

अचानक ही एक कोट-पैटधारी लडका आया और जुबेदा का हाथ पकडकर बोला, 'हाय मेरी मुहब्बत, मेरा प्यार, मेरा अरमान ! जरा, चलो, दूसरे कमरे में कुछ खास बात है ।'

जुबेदा ने चौंककर उस सूट-पैटधारी युवक के चेहरे को देखा । युवक ने उसे आखें मारकर सकेत किया और होठों पर अगुली रखकर चुप रहने

का संकेत किया । जुबेदा उसके साथ उठकर दूसरे कमरे मे चली गयी । वहा पहुचते ही सूट-पैटधारी ने अपनी पोशाक उतार दी । हंसी का ठहाका गूज उठा ।

सईदा ने कहा, 'अब देखते हैं, क्या गुल खिलता है । चलो, चलते हैं।'

शहनाई की सुरीली आवाज हवा मे तैर रही थी । तबले पर संगत करने वाला अपनी सारी कला दिखा रहा था । निकाह कबूल करते समय औरते गीत गाने लगी । दूल्हा-दुल्हन ने एक-दूसरे को माला पहनायी । रोशन अपनी मा को गला फाडकर गाते देखकर चुप हो गयी । उसे गुस्सा आ रहा था । दादी-अम्मा जोरो से चिघाडती रही । रोशन का गुस्सा देखते ही अचानक खामोश हो गयी। अब तक वहा एकत्रित औरतो मे फुसफुसाहट चलने लगी थी ।

सईदा ने गीता के हाथ को अपने हाथ से दबाया, 'यह बुढिया समझ रही है कि जुबेदा का कोई प्रेमी उससे मिलने आया है ।'

गीता सईदा से बोली, 'तुझे ऐसी हरकत नही करनी चाहिए । अगर दूल्हे मिया के पास जुबेदा के प्रेमी होने की खबर फैल गयी तो बेचारी जूबी बुरी फसेगी ।'

सईदा ने कहा, 'शादी मे ऐसे मजाक चलते ही हैं । दूल्हे मिया से मैं सब बयान कर दूगी । अभी देखो इन खूसटो को ! क्या कुछ करती हैं !

दूल्हा दूसरे कमरे मे बैठा था । पास मे उसके दोस्त बैठे थे । बुढिया औरतो के कमरे से उठकर दूल्हे के पास गयी और हैदर के कान मे फुसफुसाने लगी । उस वक्त दावत शुरू हो चुकी थी । कोठी के लॉन मे सजाये गये शामियाने मे कराची, लाहौर, बंबई से बुलाये गये कव्वालो की महफिल जमी थी । जुबेदा का मकान दोमंजिला था । घर के बीच मे आंगन था और दूसरी मंजिल पर चारो ओर लंबे बरामदे थे । निचली मंजिल मे बैठकखाना था, जो सामने से अंदर घुसते ही बायीं तरफ पडता था । दायी तरफ एक बड़ा कमरा जिसमे औरतें बैठा करती थी और इसलिए सभी उसे 'जनानखाना' कहते थे। जनानखाने का वातावरण सजी-सवरी औरतो की चहल-पहल, गाने बजाने, हंसी-ठहाको के बीच अधिक गुलजार था ।

मेजर चौधरी बैठकखाने मे आरामकुर्सी पर अकेले बैठे सिगार पी रहे थे। वहा उस वक्त कोई न था । मौलाना उनके पास आये और किंचित् आश्चर्य से बोले, 'अरे महाशय, इस खुशी के मौके पर आप यहां अकेले ही बैठे हैं ?'

मेजर चौधरी ने आहें भरते हुए रूमानी अदाज मे कहा, 'मेरे साथ और भी तो कोई एक है ।'

'कहा ? मुझे तो कही कोई नही दिखाई देता ।' मौलाना ने इधर-उधर देखकर कहा ।

'जनाब । मेरी तनहाई आपको दिखाई नही देती क्या ?'

'या अल्लाह । आपका जवाब नही । दोनो जोर से हस पड़े । हंसते हुए मौलाना की दाढी इस तरह हिल उठी, जैसे कोई अगूर की डाल हवा मे हिलोरें लेती हो ।

मेजर ने कहा, 'बहुत देर से अमर के लिए बैठा हू । शायद अदर गया है ?'

मौलाना ने मेजर चौधरी का हाथ पकडकर उठाते हुए कहा, "चलिए, हम अदर देखते है । साहबजादे कहा छिपे बैठे है ।' मौलाना के साथ मेजर चौधरी उठ खडे हुए और दोनो अदर चले गये ।

आगन को पारकर पहले कमरे मे, फिर दूसरे कमरे में गये । दालान से मिला-जुला हॉलनुमा बडा-सा कमरा मौलाना का बैठकखाना था । दीवार पर शेख मुजीब का बडा-सा चित्र फ्रेम किया टंगा था । नीचे बगला मे लिखा था—'जय बांगला' । मौलाना अवामी पार्टी के एम. पी. भी थे । शेख मुजीब के खास आदमी ! कमरे मे सोफे दीवार के सहारे से अलग कर दिये गये थे और फर्श पर कार्पेट बिछी थी । उस पर तीन बच्चे बेतरतीब सो रहे थे । वे दालान पार करके आगन मे आ गये । वहा कई औरतें आपस मे बातें कर रही थी । दोनो को देखकर वे बुर्के मे मुह ढकने लगी ।

मेजर साहब सकोच भरे असमजस मे लौटने लगे, तो मौलाना ने उनका हाथ पकडकर खींचते हुए कहा, 'अमां, यार, ये शर्म-वर्म अब तो इस बुढापे मे छोडो ।' दोनो की ठहाकों की चपेट मे औरते भी हसने लगीं।

आगन से लगा हुआ ही एक और कमरा था । वह जुबेदा का कमरा था। सोफ़ासेट, किताबो की अलमारियां । किताबें करीने के साथ सजायी गयी थी । दीवार पर दो पेटिंग्स थी । एक में, एक लडकी दरवाज़े पर खडी प्रतीक्षा कर रही थी और दूसरी में, उगता हुआ सूर्य, पद्मा का चौड़ा तट ! किनारे पर एक झोंपडी थी । कमरे के एक कोने में बडी-सी मेज रखी थी, उस पर लाल शेड का टेबल-लैप जल रहा था । लैप की रोशनी लैप-शेड से छनती हुई बाहर फैल रही थी ।

सोफेनुमा कुर्सी पर अमर बैठा था । अमर के सामने दूसरी खाली कुर्सी की बाहें पकडे गीता खड़ी थी । वह गहरे नीले रंग की जरी की साड़ी में लिपटी थी । कानो मे चांदी के 'इयरिंग' ! माथे पर बालों की कई लतरें बेतरतीब झूल रही थीं । टेबल लैप की लाल रोशनी मे वह और खूबसूरत लग रही थी । अमर धीरे-धीरे बाते कर रहा था । जलसे मे अमर से उनकी अचानक ही मुलाकात हो गयी थी । वह जुबेदा को अपने साथ लायी हुई सौगात देने अदर के कमरे में जा रहा था, तभी गीता अदर से निकल रही थी । दोनो एक-दूसरे से टकराते-टकराते बचे थे।

गीता ने उसे देखा । हाथ जोड लिये, 'नमस्कार !'

अमर ने नमस्कार का उत्तर देते हुए पूछा, 'जुबेदा अंदर है क्या ?'

'...आप की पढ़ाई कैसी चल रही है ?' अमर ने पढाई को बीच में लाकर बात चलायी । हालाकि ये शब्द उसके मुह से असमंजस में ही निकले थे ।

'...ठीक चल रही है ।' एक नपा-तुला उत्तर दिया गीता ने और स्थिर-मौन खड़ी रही । कुछ क्षण की खामोशी के बाद गीता ने ही कहा, 'आप काफ़ी व्यस्त रहते है । यूनिवर्सिटी में भी दिखाई नहीं देते ।' वह दायें पांव के अगूठे से नीचे बिछी लाल कार्पेट पर अस्पष्ट लकीरें बनाती हुई बोली ।

अमर ने कमरे में पडी कुर्सी पर बैठते हुए खामोश रहा । वह अदर से जितना ही बोलना चाह रहा था, उतना ही खामोशी की पर्तों में घिरा जा रहा था । बड़ी मुश्किल से उसने जैसे सफ़ाई देते हुए कहा, 'परीक्षा की

तैयारी चल रही है । यूनिवर्सिटी शायद अनिश्चित काल के लिए बंद हो जाये ।' फिर उसने गीता से कहा, 'आप बैठिए न !'

गीता ने कुर्सी की बाह थामे, खड़े-खड़े ही पूछा, 'तब तो हमारी भी परीक्षाएं नहीं होंगी?'

अमर और कुछ बोलता कि मेजर चौधरी और मौलाना कमरे मे प्रवेश कर चुके थे । उन्हें देखकर गीता अदर जाने लगी । अमर कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया । वह समझ नही पा रहा था की क्या करे ।

'...अरे, बेटे, तुम यहा बैठे हो? जुबेदा कहा है?' मौलाना ने पूछा । फिर स्वय ही पुकारने लगे, 'जुबेदा। जुबेदा बेटी ।'

जुबेदा अदर के कमरे मे औरतो से घिरी थी । मौलाना की आवाज सुनते ही उठकर बाहर आ गयी । मेजर चौधरी का पाव-स्पर्श किया । अमर को सलाम किया । अमर ने उठकर उसे भेंट दी ।

जुबेदा ने सिर झुकाकर 'शुक्रिया' कहा, फिर धीरे से पूछा, 'हैव यू मेट दि हनी कैट । 'क्या आपने सुदर बिल्ली से मुलाकात की?'

अमर ने कहा, 'दूसरी से तो मिल ही रहा हूं ।' दोनो हंस पड़े । चौधरी ने उत्सुकता प्रकट की तो अमर झेंप गया, 'कुछ नही, पापा ! जुबेदा है न । यह अपनी बिल्ली यानी कॉलेज की एक सहेली के बारे मे कह रही थी।'

मेजर नें जुबेदा को देखते हुए कहा, 'भई, ऐसी बिल्ली हमें भी तो दिखाओ । जरूर बहुत शरारती और नटखट होगी । पर तुम्हारी तरह नहीं। थोड़ा-सा कम ।'

सभी हस पड़े ।

मेजर चौधरी ने मौलाना से विदा ली । जुबेदा को आशीर्वाद देने के बाद अमर के साथ कोठी से निकलकर लान मे खड़ी कार की ओर बढ़ गये।

सेंट पॉल गिरजाघर ढाका में बहुत पुरानी इमारत है । गिरजाघर के मुख्य द्वार पर लगा पत्थर बताता है कि उसकी बुनियाद 18 अप्रैल, 1906 में पड़ी

थी । जब तक अंग्रेजो का शासन था, केवल अंग्रेज ही उसमें प्रार्थना के अधिकारी थे । स्वतंत्रता मिलने और पूर्वी बंगाल पूर्वी पाकिस्तान बन जाने के बाद, उसमें पूर्वी पाकिस्तानी ईसाई भी पूजा के लिए शामिल होने लगे । यह गिरजाघर गवर्नर हाउस से लगभग दो सौ गज दूरी पर मनोरम उद्यान तथा लंबे-चौड़े मैदान के बीच अवस्थित है । सन् 1948 मे गिरजाघर के बगल में एक मस्जिद बनायी गयी थी । यह मस्जिद जिन्ना के हुक्म पर तत्कालीन गवर्नर मो. सौहरावर्दी ने बनवायी थी और गिरजाघर में शाम की प्रार्थना के समय 'अजान' की आवाजे भी सुनाई पड़ती है । 'सर्मन' के समवेत स्वरो में 'अजान' की आवाजे घुल-मिल जाने से दो धर्मों का एक समवेत-स्वर अच्छा लगता है । सब धर्म समभाव और एकता का जीता-जागता उदाहरण ।

सेंट पॉल गिरजाघर की घड़ी ने टन-टन कर सबेरे के दस बजा दिये । गिरजाघर के पास बने 'कान्वेंट' में पढ़ने वाले सजे-सजाये बच्चे, सफेद गाउन पहने फादर (शिक्षक-पिता) और काला गाउन पहने मदर (धर्म-माताएं) 'चैपल' (प्रार्थना कक्ष) मे एकत्र होने लगे । पियानो बज उठा । तीन छोटी लड़कियां और दो लड़कों के प्रार्थना-स्वर पियानो के स्वर के साथ गूंज उठे ।

लीड काइंडली लाइट
एमंग दि इनसर्किलिंग ग्लूम
लीड मी ऑन
लीड मी ऑन
.... ।

प्रार्थना अभी समाप्त नहीं हुई थी कि गिरजाघर के बाहरी दरवाजे पर तीव्र स्वर में नारे लगाते लोगों की भीड़ जमा हो गयी ।

'निकालो गद्दारों को, नही तो चर्च तोड़ देंगे । तुम्हारे ईसा को जला डालेंगे ।' चिल्लाने वाले कुछ अपने हाथों में लाठियां, कुछ भाले और बंदूकें लिये हुए थे । 'चैपल' में प्रार्थना करने वालों के शांत स्वर के ऊपर उत्तेजित

भीड के आक्रामक स्वर हावी हो गये । बीच में ही प्रार्थना समाप्त कर देनी पडी । बच्चे बेहद डरे हुए थे । उनमें से कई रो रहे थे । धर्म-माताएं उन्हें सात्वना दे रही थी । चर्च की लॉन के निकट अतिथिशाला मे लगभग दो सौ स्त्री-पुरुष-बच्चे अपने माल-असबाब लिये शरण लेने के लिए आकर छुपे थे। उनकी आखो मे भय और आतक की काली छाया थी । भय से उनके चेहरे पीले पड गये थे । धर्म-माताएं बच्चों को लेकर शीघ्रतापूर्वक 'चैपल' से लगे हुए कमरे मे चली गयी । किसी को नहीं मालूम था कि आखिर यह सब हो क्या रहा है । क्या होगा? नारे लगाने वाले कौन हैं? और उनका इरादा क्या है ।

फादर 'चैपल' से निकलकर बाहर आ गये । उन्होने देखा कि सैकड़ों स्त्री-पुरुष-बच्चे, अपग, बूढे चर्च के बरामदे मे और बाहर अतिथिशाला में खडे थे । उनके चेहरे भय और आतक से बुझे हुए थे । आखो मे मासूमियत झलक रही थी । फादर ने हाथ से छाती पर क्रॉस बनाया और हाथ उठाकर उन भयाक्रात लोगों को आशीष दिया, 'डरो नही !'

वे नारे लगाने वालो की तरफ साहसपूर्वक बढ गये ।

अब तक गिरजाघर के बाहर आक्रामक भीड अनियत्रित होती जा रही थी । वे चिल्ला रहे थे

'दलालों को हलाल करो ।'

'शेख मुजीब देशद्रोही है ।'

'पाकिस्तान, जिंदाबाद ।'

'हमे पाकिस्तान चाहिए, बगला देश नहीं ।'

गिरजाघर के अदर शरण लिये हुए आदमियों में से कुछ ने प्रत्युत्तर में नारे लगाये...'सोनार बंगला, हमारा है ।' 'हमारा शोषण नहीं चलेगा ।' हमें चाहिए, बगला देश ।' 'हमें चाहिए मुक्ति ।'

फादर ने दोनों हाथ उठाते हुए शांत सयत स्वर में कहा, 'भाइयों! गिरजाघर भगवान का मंदिर है । यहां जो भी आदमी शरण लेने आता है, वह पूरी तरह से ईश्वर के अधीन हो जाता है । आप लोग शात हो जाये । आप सब एक ही देश के लोग है । मारकाट, उपद्रव किसी के लिए अच्छा नही होता । किसी भी धर्म में 'हिंसा' पाप है । हम सभी पाकिस्तान की

जनता है । हम एक पिता की संतान है । अल्ला हो या क्राइस्ट, कुरान हो या बाइबिल, गुरुग्रंथ साहेब, रामायण, गीता, सबमें एक ही सच लिखा है दूसरे को दुःख मत दो । सभी को प्यार करो । दया और क्षमा करो...'

फादर के उपदेश का भीड़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । लोग जोरों से चिल्लाने लगे—'जो पाकिस्तान में विश्वास नही करते, वे काफिर है । उन्हें हमारे हवाले करो ।'

'वे पाकिस्तान के टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं । वे गद्दार हैं ।' 'उन्हें निकालो, नहीं तो गिरजाघर को तोड़ देंगे, जला देंगे ।'

फादर ने पुन. शांति रखने की अपील की ।

'मारो, इस बूढ़े को ! यह काफिर है ! हिंदुस्तानी जासूस है ।' 'यह हमारे धर्म को गाली दे रहा है ।' 'यह कुरान को गाली दे रहा है ।' लोग-क्रोध से उबल रहे थे । कई लोग दीवार से कूदकर गिरजाघर के अहाते में घुस गये और अतिथिशाला के बरामदे में शरण लेने वाले लोगों को मारने लगे ।

'रुको-रुको, भाइयो । ईश्वर के लिए ऐसा मत कीजिए ।' फादर अभी पूरा वाक्य बोल भी नहीं पाये थे कि उनके सिर पर लाठी का गहरा प्रहार किया गया । फिर दूसरा और तीसरा वार । मस्तक से खून का फव्वारा फूट निकला । वे लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़े । अब तक भीड़ चर्च के अंदर घुस आयी थी । लोगो ने चैपल में दीवार पर लगी माता मरियम तथा ईशा की तस्वीरें उतारकर फर्श पर फेंक दिये । कमरों में पड़ी कुर्सियां, मेजें, दीवारों पर लगी पेंटिंगें तोड़ने-फोड़ने में जुट गये । खिड़कियों के कांच तोड़ने लगे । मारे जाते हुए शरणार्थियों की हृदय-विदारक आवाजें उभर रही थीं । इन आवाजों के बीच औरतें और बच्चों की चिल्लाहटें, चीखें मर्मांतक हो उठी । धर्म और अंधी राजनीति में पागल लोगों द्वारा आधे घंटे तक तोड़-फोड़, बलात्कार और हत्याएं होती रहीं । शरण लेने वाले लोगों की खून से लथपथ लाशें अतिथिशाला, 'चैपल' तथा गिरजाघर के दूसरे कमरों में बिखरी हुई थीं । चैपल में फर्श पर बिखरी मरियम की मूर्ति के पास कई औरतों की क्षत-विक्षत लाशें बिछी थीं । उनमें से कुछ बेतरह

घायल होकर कराह रही थीं । उनमे से कुछ एकदम नगी थीं । एक मरी हुई औरत के स्तन को साल भर का बच्चा अपने मुह मे डाले दूध पीने की असफल कोशिश करते हुए रो रहा था । वह स्तन को मुंह में ले लेता । कुछ क्षण तक शात रहता और हाथ-पाव पटकता, फिर जोरो से चिल्ला उठता । जब उसके मुह से स्तन छूट जाता, वह हिचकोले लेकर रोने लगता । एक औरत के दोनो स्तन काट लिये गये थे । वह चीत्कार कर रही थी । कई औरते घायल अवस्था मे सहायता के लिए चिल्ला रही थी । तीन धर्म-माताएं मरी पडी थी । उनके करीब ही कान्वेट मे पढने वाले बहुत सारे बच्चे मरे पडे थे । कई घायल अवस्था मे फूट-फूटकर रो रहे थे । उनसे कुछ दूर क्राइस्ट की प्रतिमा टूटी हुई फर्श पर औधी पडी थी । फादर को काफी चोट आयी थी । उनके सिर से खून बह रहा था । उन्हें जब होश आया तो काफी कठिनाई से उठे । उन्होने क्रास का चिह्न बनाया । खडे होकर एक पग चले, फिर गिर पडे । दोबारा उठने की कोशिश की । उनके सिर से बहता हुआ खून गाल भर से होता हुआ सफेद गाऊन पर बह रहा था । बडी कठिनाई से वे चर्च के बरामदे तक घिसटते हुए पहुच सके । वहा का दृश्य देखकर उनकी आखे भर आयी । धर्म-माताओं और छोटे-छोटे बच्चो की रक्तरंजित लाशे बेतरतीब पडी थी ।

रुंधे कंठ से फादर बोले—'प्रभु, तेरा पवित्र स्थान भी कब्रिस्तान बना *दिया गया । राजनीति और धर्म में पागल लोगो को शांति दो ।'* फादर आंखे बंद करके कुछ देर तक अस्फुट प्रार्थना करते रहे । आंखे खोलने पर उन्होने देखा कि एक युवक जीप पर तीन-चार युवकों के साथ आ रहा है।

फादर उनमे से एक को पहचानते हुए चिल्लाये, 'कम हेयर ! हेल्प ! हेल्प !

जीप पर से युवक उतरकर फादर की ओर दौडे—वे उठने की कोशिश करने लगे । उन्हें सहारा देने के लिए एक युवक आगे बढा ।

फादर बेहोश होकर गिर पडे । अमर और साथी युवकों ने फादर को उठाकर जीप की पिछली सीट पर लिटा दिया ।

फादर दर्द के मारे कराह रहे थे । अस्फुट स्वर मे उन्होने कहा—'बेटा

अमर, जब अपने ही देश के लोगों से अपने ही देश के लोग नफरत करने लगते हैं, एक-दूसरे के बीच घृणा की दीवार खड़ी कर लेते है, हिंसा पर उतर आते हैं तो वह देश ज्यादा दिन तक स्थिर नहीं रह सकता । अब पाकिस्तान के दिन भी लद गये । पर बेटा, तुम कुछ करो । इस घृणा की दीवार को तोड़ो ।' कहते-कहते फादर ने आंखें बंद कर ली ।

उनके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे ।

7 जनवरी, 1970

ढाका विश्वविद्यालय अनिश्चित काल के लिए बंद कर दिया गया । विश्वविद्यालय 'कैंपस' के भीतर सेना तैनात कर दी गयी । छात्रावासों से विद्यार्थियों को जबरदस्ती निकाल बाहर किया जाने लगा । बंगलादेश के पक्षधर 'स्टूडेंट्स यूनियन' के पांच सौ छात्रों तथा साठ प्राध्यापकों को गिरफ्तार कर लिया गया । बंगलादेश की आजादी के पर्चे बांटने और पोस्टर चिपकाने वाले तथा बंगलादेश के समर्थन में भाषण देने वाले बहुत से प्राध्यापकों और लड़कों को पुलिस ने बेरहमी के साथ पीटा । उनमें से सात की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी । साठ प्राध्यापकों को गिरफ्तार करके अज्ञात स्थान पर जाकर गोली मार दी गयी और उनके शवों को खंदक में सामूहिक रूप से दफन कर दिया गया । पूरे ढाका शहर में शाम 6 बजे से सवेरे 6 बजे तक का कर्फ्यू लगा दिया गया । ढाका, राजशाही, टीटागंज, जैसोर, खुलना, नारायणगंज आदि स्थानों पर 144 धारा लगा दी गयी तथा इन स्थानों के सैकड़ों बुद्धिजीवियों, कलाकारों को पकड़कर जेल में बंद कर दिया गया । पूरे बंगलादेश में हत्याओं और गिरफ्तारियों का दमनचक्र शुरू हो गया । 'धानमंडी' आवामी लीग के केंद्रीय कार्यालय पर सेना ने अधिकार कर लिया तथा बंगबंधु मुजीबुर्रहमान को उनके पांच प्रमुख सहयोगियों के साथ गिरफ्तार करके रातोरात रावलपिंडी भेज दिया गया। ढाका के समाचार पत्रों, रेडियो और दूरदर्शन के कार्यालयों पर सेना ने अधिकार कर लिया तथा समाचारों को सेन्सर किया जाने लगा ।

चौबीस घंटे में आवामीलीग के पंद्रह हजार कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार

किया गया । उनमें से सैकड़ों को मौत के घाट उतार दिया गया । पश्चिमी पाकिस्तानी सेना के सिख तथा बलूच सैनिकों ने अत्याचार करना शुरू कर दिया । सेना के कुछ सिपाही साधारण किसान, खेतिहार मजदूर के वेश में गांवों में फैल गये । उनका काम था बंगलादेश की स्वतंत्रता के लिए सक्रिय कार्यकर्त्ताओं, साधारण लोगों, ग्रामीणों, मजदूरों को पकड़ना और उनके खिलाफ षड्यंत्र करके उनका सफाया करना । ऐसे खूंखार लोगों के समूह साधारण नागरिकों पर नृशंस अत्याचार, औरतों पर खुला बलात्कार करने लगे । संत्रास, मृत्यु और आतंक से बंगलादेश की धरती कांप उठी । लोग भागकर सुरक्षित स्थानों में शरण लेने लगे । उनमें से लाखों की संख्या में सीमा पार कर भारत की ओर भागने लगे । शरणार्थियों के राहत के लिए भारत सरकार द्वारा स्थान-स्थान पर शिविर लगाये गये, जहां उन्हें भोजन, कपड़ा, दवाइयां उपलब्ध हो सकें । बहुत-सी समाजसेवी संस्थाओं ने भी राहत कैंप खोले । विदेशों में पाकिस्तानी शासकों द्वारा ढाये जा रहे अत्याचार और नरसंहार की रोयें खड़े कर देने वाली घटनाएं रोज-बरोज अखबारों की मुख्य खबरें बनने लगीं । कई देशों से शरणार्थियों के लिए दूध के पैकेट, कपड़े, दवाइयां भेजी जाने लगीं । भारत की जनता बंगलादेश से भागकर आये हुए शरणार्थियों के लिए चंदा जुटाने, राहत कार्यों को संचालित करने के लिए हर तरह की सहायता देने को संगठनबद्ध हो गयी। भारत ने बंगलादेश के विस्थापित, प्रताड़ित, दुखी लोगों के लिए अपने हृदय के उदार द्वार खोल दिये । देश के तमाम बुद्धिजीवी, लेखक, कलाकार तथा साधारण लोग बंगलादेश के समर्थन में एकजुट होकर लग गये । समाचार-पत्रों में बंगलादेश के मुक्ति संग्राम के समर्थन में लेख लिखे जाने लगे । बंगला देश के कवियों तथा कहानीकारों की रचनाओं में बंगला देश के मुक्ति संग्राम का स्वर उभरकर सामने आया । 'जय बंगला' के नारों से बंगाल की धरती का कोना-कोना गूंजने लगा ।

'ओ गो आमार सोनार बांगला, आमि तोमाय भालो बाशी'... के सुमधुर गान हर ओर सुनाई पड़ने लगे । स्वतंत्रता संग्राम के समय भारतीयों के मन में जो जोश, जो हौंसला था, वही बंगलादेश के मुक्ति-संग्राम के साथ लगभग पचीस वर्षों बाद फिर से दिखाई दे रहा था । बंगाल-विभाजन के

समय पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल के लोगों के हृदयों में एक-दूसरे के प्रति जो आत्मीयता उमड रही थी, वही आज एक शताब्दी बाद पुन: दिखाई दे रही थी । भाषा और संस्कृति को विखंडित करना शासकीय स्वेच्छाचारिता और अदूरदर्शिता दर्शाती है । उससे राजनीति को यत्किंचित् सामयिक लाभ मिल जाता है, पर गलत नीतियों के निकष पर भाषा, कला और संस्कृति की हत्या करना भयानक देशद्रोह है । इसी देशद्रोह के विरुद्ध आज फिर पूर्व और पश्चिम में बटी बंगला भाषा, संस्कृति-पुनर्मिलन के चौराहे पर अपने अस्तित्व की पहचान कराने के लिए प्रतीक्षा कर रही है । राजनीतिक पागलपन और धर्मांधता के कारण अलग-अलग बटे हुए एक ही कलेजे के दो टुकड़ों का मिलन सचमुच बेहद रोमांचक होता है ।

18 मार्च, 1970 । रात ग्यारह बजे ।

ढाका विश्वविद्यालय का जगन्नाथ हॉल । छात्रावास के एक छोटे-से कमरे में सेना और पुलिस से छुपकर छात्र संघ के कुछ सदस्य आपत्कालीन गुप्त बैठक में शरीक होने के लिए एकत्र हुए ।

उस दिन अमर ने सभी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संक्षिप्त भाषण दिया, 'मित्रो, अब समय आ गया है कि हम अपने को जैसे भी हो, एकत्रित करके बंगलादेश के मुक्ति संग्राम के लिए जी-जान से प्रस्तुत करें । कल सेंटपॉल चर्च पर पश्चिमी पाकिस्तानी रजाकारों ने आक्रमण करके आवामी लीग के सैकड़ों समर्थकों और निरीह बच्चों, स्त्रियों, धर्म-माताओं और 'फादर' को मौत के घाट उतार दिया । यह काम पश्चिमी पाकिस्तान का पैशाचिक कुकृत्य है । वे इस तरह से हमारी भाषा और संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हैं । खूंखार, क्रुद्ध, बनैले भैंसों की तरह वे हमें पददलित करना चाहते हैं । कल रात आजिमगंज के सैकड़ों घरों में आग लगा दी गयी क्योंकि उस मुहल्ले में आवामी पार्टी का अधिक जोर था । सैकड़ों युवकों को सेना ने बंदी बना लिया । गुप्त स्थानों पर ले जाकर उन्हें गोली मार दी गयी । इस धरती से जैसे न्याय और मानवता उठ गयी है और उसके स्थान पर अत्याचार का दु:शासन हमारे अस्तित्व के पांडवों को मिटा

डालना चाहता है । गावो से लेकर शहरो-कस्बो तक आवामी लीग के कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार किया जा रहा है । औरतों के साथ अमानुषिक व्यवहार किया जा रहा है । हजारों लडकिया यातना-शिविरो में बंद है और उन्हें कराची भेजा जा रहा है । सुना गया कि उन्हें दूसरे देशो को बेचा भी जा रहा है । पाकिस्तान, बगला सस्कृति को विकृत करना चाहता है । वे हमारी भाषा, सस्कृति और सामाजिकता को पसद नही करते । उनको केवल हमारी समृद्धि चाहिए, चावल, चाय, जूट और कच्चा माल चाहिए, जिससे वे समृद्धिशाली बन सकें और हम उनके सामने रोटी-रोजी की भीख मागते रहें । हमेशा द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में असहाय बने रहें । वे हमारे ऊपर बीस वर्षों से मनमाने ढंग से शासन करते रहे । अब उन्हें हमारी पार्टी का बहुमत पसद नही । बगबधु को प्रधानमत्री के रूप मे वे फूटी आखो से भी नही देख सकते । दोस्तो ! हमारे सामने अब दो ही रास्ते है—करो या मरो । हमारे पास बगलादेश की जनशक्ति है । वही हमारा बल है । हमें स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हमारा एक ध्येय है—बगलादेश की मुक्ति । हमारी प्रतिज्ञा है —स्वतंत्र बगलादेश ! अपनी शासन-प्रणाली। हमारा लक्ष्य सार्वभौम राष्ट्र के रूप मे बंगलादेश की स्थापना है । 'जय बागला । जय बागला ।।'

तालिया बजाते हुए सभी युवक कार्यकर्त्ताओ के हाथ रुक गये क्योंकि इस तरह की आवाज से वे सकट मे पड गये थे । फिर भी जोश मे सभी खडे होकर एक स्वर मे बोले, 'जय बागला'!

और तभी बदूकें चलने की आवाजें गूज उठी ।

अमर ने शीघ्रतापूर्वक पहले तल्ले की अधखुली खिडकी से कैंपस के लैंपपोस्ट के उजाले में देखा तो उसके हाथ-पाव सुन्न रह गये । सैयद मुस्तफा हुसेन बायलोजी के विख्यात प्राध्यापक थे । बगबधु के सन्निकट साथी । वे खून से लथपथ लॉन पर पडे थे । उन्हें गोली मारी गयी थी । उनसे कुछ दूर और भी कई लाशें पडी थी, जिन्हें अमर पहचान नहीं सका । मुख्य द्वार से सेना का एक ट्रक अदर आया । उसमें से सेना के कई सिपाही उतरकर सैयद मुस्तफा हुसैन के शव के साथ दूसरे शवों को उठाकर गाडी मे लादा और ट्रक जिस गति से आयी थी, उससे दुनी गति से बाहर निकल

गयी । इसी के तत्काल बाद एक दूसरी ट्रक आयी । जिस पर सेना के सिपाही मशीनगनें ताने युद्धोन्मद मुद्रा मे खडे थे ।

अमर ने दु:खी आवाज मे साथियो से कहा, 'अब यहा से हमारा निकलना खतरे से खाली नही ।' उसने सभी मित्रो को समझाया—'रात होने तक हमे यही ठहरना चाहिए ।'

फिर पूछा, 'क्या किसी के पास खाने-वाने को कुछ है ?'

इस पर शाहनवाज तथा मुख्तार अली ने अपने-अपने झोले से दो पैकेट निकाले । पैकेट खोलकर सैंडविचेज निकाली । उनके बराबर-बराबर हिस्से करके सभी मे बाट दिये गये ।

अमर ने पूछा, 'मुख्तार, तुमने लिया या नही ?'

उसने कोई उत्तर नही दिया ।

अमर ने अपने हिस्से की सैंडविच आधी तोड़कर उसके निकट जाकर उसके मुह मे डाल दिया, फिर कहा, 'देख प्यारे, क्रांति भूखे पेट नही होती। रोटी का कमाल हर जगह, हर फ्रंट पर है, चाहे युद्ध हो या शाति । राजनीति हो या धर्म । रोटी हर मोर्चे पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।'

अल्पाहार के बाद पानी की जरूरत पड़ी । हॉस्टल के 'किचेन' से पानी लाने के लिए शाहनवाज गया, पर जब काफी देर के बाद भी वह लौटकर नही आया तो सभी चितित हो उठे ।

अमर ने कहा, 'मित्रो, लगता है शाहनवाज पकडा गया है । हमे यहा से भागना चाहिए ।'

फिर उसने सुझाया, 'पीछेवाली खिडकी से भागना ही ठीक रहेगा।'

इस पर मुख्तार अली ने कहा, 'खिडकी के सींकचे तोड़ने से आवाज पैदा होगी और हम सभी एक साथ पकड लिये जायेगे ।' उसी ने सुझाया कि 'मेरे पास तेज फलकवाला छुरा है । उससे लकडी काटकर खिड़की में लगे लोहे के सीकचो को निकाला जा सकता है । पर इसमें समय लगेगा । फिर भी मै कोशिश करता हू ।' वह आगे बढ़कर छुरे से खिडकी काटने लगा।

अमर के चेहरे पर भय और चिंता की रेखाए गहरी हो आयीं । उसने

निर्णय लिया, 'नही, ऐसा करने मे घटों लग जायेगे। शाहनवाज को यदि सेना ने पकड लिया होगा, तो उससे हमारे बारे मे सारी सूचनाए उन्हें मिल जायेगी। इसलिए यहा से तत्काल भागना ही ठीक होगा। हमे अपनी पिस्तौले हाथ मे ले लेनी चाहिए। होस्टल के गेट से निकलकर बरामदे के दायी ओर छोर पर बने दरवाजे से निकलना होगा, लेकिन सभी को एक साथ नही। उसने कधे पर टंगे झोले से एक कागज निकाला। बाये हाथ के अगूठे को अग्रेजी मे 'वी' के आकार की तरह काटा। उसमे से लाल रक्त बहने लगा, तो उसने दाहिने हाथ की अनामिका उगली से रक्त मे डुबोकर उस कागज पर विशेष सूचना लिखी, नीचे हस्ताक्षर किया। सभी ने उसी प्रकार अपने-अपने हस्ताक्षर किये। फिर पोस्टरनुमा कागज को कमरे की दीवार पर टंगे कैलेडर को उतारकर उसी स्थान पर लगा दिया। यह विशेष सूचना छात्र सघ के दूसरे साथियो के लिए थी, जो मीटिंग मे उपस्थित नही हो सके। रक्त से लिखी विशेष सूचना के रक्ताक्षर इस प्रकार थे :

विशेष सूचना

'मुक्ति सग्राम हर तरह से जारी रखना है। परिस्थितिवश अपने ढंग से निश्चय लेना और काम करना होगा। 20 मार्च को रात 10 बजे कैप नं. 4 पर मिलेगे। जय बगला।' नीचे हस्ताक्षर किये गये थे :

—अमर कुमार चौधरी
—मुख्तार अली
—कादिर अली खान
—अजित्य सेनगुप्त
—गौहर अली खान
—हबीबुर्रहमान

अमर ने कहा, 'अच्छा, दोस्तो, अलविदा। फिर मिलेंगे। जय बांगला! जय बंगबंधु ।'

सभी शीघ्रतापूर्वक कमरे से बाहर निकल गये।

राजशाही स्टेशन ! शरणार्थियों की भीड़ । स्त्रियां, बच्चे, बूढ़े, जवान अपने माल-असबाब को कंधे या सिर पर लादे ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे । भूखे बच्चे उस भीड़ में रो रहे थे । माताएं उन्हें चुप करा रही थीं । रोटी मिलने की आशाएं दे रही थीं । पर बच्चे थे कि रोये ही चले जा रहे थे । कुछ बच्चों के इस प्रकार बेतहाशा रोने पर आस-पास खड़े लोग कुढ़ रहे थे । ट्रेन आती दिखी तो भीड़ ठेलपेल करती हुई आगे बढ़ने लगी । ट्रेन आकर खड़ी हो गयी । भीड़ के रेले में पेटीकोट-ब्लाउज पहने एक लड़की डिब्बे में चढ़ने का असफल प्रयास कर रही थी । वह हर डिब्बे में कोशिश कर चुकी थी, लेकिन चढ़ नहीं पायी । वह निराश हो गयी । आंखों में आंसू भर आये। ट्रेन में न चढ़ पाने पर, इस स्थिति में यहां अकेले रहना निरापद नहीं था । अनजाने भविष्य की कल्पना से वह सिहर उठी । बहुत से लोग ट्रेन में चढ़ नहीं पाये थे । चढ़ने के लिए एक-दूसरे को ठेल रहे थे । इधर से उधर भाग रहे थे । अब तक गार्ड हरी झंडी दिखा चुका था । आंखों में हताशा के आंसू लिये हुए वह लड़की भाग-भागकर किसी भी डिब्बे में चढ़ने की जी-जान से असफल कोशिशें कर रही थी । बच्चे भीड़ के दबाव में पिसे जा रहे थे और बेतहाशा रो रहे थे । इसी ठेलपेल में चलती ट्रेन में वह दबती-पिसती बड़ी मुश्किल से फुटबोर्ड पर चढ़ पायी । उस वक्त वह पसीने से तर-बतर थी । जानलेवा घुटन के बीच उसने महसूस किया कि आपात् स्थिति में मनुष्य अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए दूसरों की परवाह नहीं करता । बेशुमार लोग डिब्बे में भरे थे । कहीं तिल रखने की जगह नहीं थी । जहां भी थोड़ी-सी जगह बची थी, वहां गठरियों और सूटकेसों का अंबार लगाये उसके ऊपर लोग बैठे थे । भीड़ के बीच दबी-सहमी वह फुटबोर्ड पर बड़ी मुश्किल से खड़ी हो पा रही थी, तभी एक भद्र व्यक्ति ने लोगों से अनुरोध करके उसे ठेल-ठालकर डिब्बे के अंदर कर दिया । उसकी

कनपटी पर लोगों की गर्म सांसों का स्पर्श लग रहा था। नाक में पसीने की बदबू आ रही थी। इससे उसे मितली आने लगी। ब्लाउज कई जगह से फट जाने के कारण पेट तथा सीने का अग्रभाग साफ दिखाई दे रहा था। लोग गिद्ध-नजरों से उसके खुले हुए खिले शरीर की ओर घूर रहे थे। उन उजड़े हुए निराश्रित लोगों की वासना आतंक और दुःख के मलबे में से निकलकर मुंह चिढ़ा रही थी। उनके चेहरे पर लिखा था—'वासना दुःख और यातना से कभी दबती नहीं।'

वह लड़की उन गिद्ध-निगाहों से अपनी लाज ढंक पाने में असमर्थ थी। लेकिन कोई उपाय न था। उसने दोनों हाथों से अनावृत स्थलों को ढंक लिया। तब तक गाड़ी अपनी रफ्तार पकड़ चुकी थी। वह पीछे की तरफ लुढ़क पड़ी। उसके अगल-बगल खड़े पुरुषों की देह से उसका शरीर रगड़ खाने लगा।

तभी एक कोमल आवाज उभरी, 'गीतू!'

वह चौंक पड़ी।

चारों ओर भीड़ के सिवाय वह किसी को पहचान न सकी। उसने इधर-उधर झुककर देखने की कोशिश की।

'गीता, इधर!' आवाज दोबारा आयी।

उसे आवाज जानी-पहचानी लगी। जुबैदा की आवाज से मिलती-जुलती! उसने देखा कि एक स्त्री बुर्का ओढ़े दूसरी बुर्कानिद औरत के साथ बैठी गीता को इशारे से बुला रही है।

डिब्बे के सारे लोग उत्सुकतापूर्वक उधर ही देखने लगे।

गीता को विश्वास नहीं हुआ कि यहां भी उसका कोई परिचित है। उसे असमंजस में पड़ी देखकर वह स्त्री उठी और लोगों के बीच से रास्ता बनाती हुई उस तक चली आयी।

वह उससे लिपट गयी, 'गीता तू, इस हालत में? ओह माई डार्लिंग। यह सब क्या हो रहा है।' भावावेश में वह रो पड़ी।

'जूबी, तुम।' गीता ने रुंधे कंठ से कहा और सिसक उठी। वे दोनों हिचकियां लेकर कुछ देर तक रोती रहीं। लोग उन्हें आश्चर्य से ताकते रहे।

'यह क्या हालत बना रखी है, गीतू?'

'मैंने नहीं जुबी, हालातों ने यह सब किया है ।'

जुबेदा ने मा से कहा, 'मां, यह मेरी सबसे अच्छी सहेली और बहन जैसी गीता है ।'

गीता ने मां को नमस्कार किया । मा ने उसका मस्तक चूम लिया । गीता की दयनीय हालत देखकर उनकी स्नेहमयी आंखे छलक उठीं।

जुबेदा ने उठकर सीट के नीचे रखा सूटकेस खोलकर उसमे से काले रंग एक बुर्का निकाला और गीता को पहनने के लिए दे दिया, 'ले', इसे पहन! शरमा मत, जल्दी कर, जरूरी है ।'

गीता ने बुर्का पहन लिया तो मा उसके बारे मे पूछने लगी । जुबेदा ने एक पैकेट से पावरोटी और केक निकालकर उसे खाने के लिए दिया । गीता को बेहद भूख लगी थी । वह खाने लगी । खाते-खाते उसके अचानक हाथ रुक गये । केक जुबेदा की ओर बढ़ाते हुए बोली, 'ले, तू भी ।'

अचानक गाड़ी सीटी बजाती हुई एक झटके के साथ खड़ी हो गयी।

'कोई एक्सिडेंट हुआ है?'

'नहीं, आगे के स्टेशन ने सिगनल नहीं दिया ।'

'नही, पाकिस्तानी फौज इस गाड़ी की तलाशी लेगी । आवामी लीग के कार्यकर्त्ताओं की धर-पकड़ कर रही है ।'

लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे । तभी बगल वाले डिब्बे से शोरगुल और आर्तनाद उभरने लगा—'बचाओ ! बचाओ !!' डिब्बे के सभी यात्रियों ने स्थिति भाप ली । कुछ खिड़की से कूदकर भागने लगे, कुछ भय से चिल्लाने लगे । आपात् स्थिति समझकर स्त्रियां रोने लगीं । उन्हें रोता देखकर बच्चे भी रोने लगे । अपनी मर्दानगी पर विश्वास करने वाले कुछ पुरुष गेट पर जाकर खड़े हो गये । रजाकार गुंडे लोगों को लूट रहे थे । प्रतिरोध करने वालो को मौत के घाट उतार रहे थे । गुंडों का प्रतिरोध करने के लिए जो लोग अपने को प्रस्तुत कर रहे थे, वे स्वयं आतंकित हो रहे थे । देखते-देखते उस डिब्बे में भी गुंडों का एक दल घुस आया । बच्चे

अपनी मा के वक्ष से चिपककर जोरो से चिल्लाने लगे । स्त्रियो के जेवर छीनने पर वे हृदय-विदारक करुण स्वर में विलाप करने लगीं । प्रतिरोध करने वालो को बदूक के कुंदो से, छूरों से बेरहमी के साथ मारने लगे थे गुडे। स्त्रियो के जेवर न देने पर वे बर्बरतापूर्वक छीन रहे थे । बच्चों की निर्मम हत्या कर रहे थे । नवयुवतियों को जबरदस्ती घसीटते हुए डिब्बे से बाहर ले जा रहे थे । जुबेदा और गीता भयभीत निगाहो से सारा काड देख रही थी । उन्हें यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि गुडे उन तक नही पहुच पाये। जुबेदा सोच रही थी—अगर कही वे हमारे पास भी पहुंच जाते तो क्या होता ? मा भी भय से पीली पड गयी थीं । 'या अल्लाह' कहते हुए वह रो पडी । कुछ देर तक सिसकती रहीं । आचल से आसू पोछती रहीं । खून से लथपथ कई युवक घायल कराह रहे थे । दो लडकिया, जिनकी इज्जत खराब करने की गुडों ने कोशिश की थी, वे घायल अवस्था में कराह रही थीं। एक लडकी की बाह तथा दूसरे के पेट के ऊपर छूरे से वार किये गये थे। कई स्त्रिया फूट-फूटकर रो रही थीं । उनके वक्ष तथा गुप्तागो में छुरे से वार किये गये थे ।

'ये सब क्यो हो रहा है, जूबी ? ऐसा क्यो हो रहा है ? लोग अपने ही भाइयों की हत्या कर रहे है । अपनी ही बहनों को बेइज्जत कर रहे हैं । हर तरह का अत्याचार क्यो हो रहा है बगलादेश की पवित्र धरती पर ?' कहते-कहते गीता रो पड़ी ।

जुबेदा की आखें सजल हो उठी । वह बोलने का प्रयत्न कर रही थी, पर होंठ कापकर रह जाते । वह बडी मुश्किल से कह पायी, 'यहिया खा की आखों पर मार्शल-लॉ की काली पट्टी बधी है । पाकिस्तान के शासक अंधे हो गये है । उन्हे वर्तमान भविष्य दिखाई नहीं दे रहा है । अब पाकिस्तान का नाश होने वाला है । तानाशाही के दु शासन का अत्याचार भोगना पड रहा है बगाल की धरती को ।'

लूट-मार, अपहरण का नृशंस खेल एक घंटे तक चलता रहा । धीरे-धीरे गाड़ी फिर रवाना हुई । 'नोनापुकुर' स्टेशन आ गया तो तीनों औरतें माल-असबाब लेकर उतर पडीं । जुबेदा के एक हाथ में सूटकेस था और दूसरे हाथ में बांस की एक टोकरी, जिसके अंदर से अखबार का

थोड़ा-सा हिस्सा बाहर दिखाई दे रहा था । मां गठरी लिये थी । वह एक ओर जरा झुकी-झुकी चल रही थी । गठरी ज्यादा भारी थी । जुबेदा से कदम मिलाती हुई गीता चल रही थी । उसके हाथ मे बैग था, जिसमें खाने-पीने के सामान थे । तीनो औरतें बुर्के में थीं । आगे-आगे मां चल रही थीं।

स्टेशन के बाहर जाने वाले फाटक पर उन्हें थोड़ी देर रुकना पड़ा, क्योंकि गीता के पास टिकट नहीं था । मां ने टिकट के रुपये निकालकर टिकट-चेकर को दिये ।

गीता अश्रुपूरित आंखों से जुबेदा को देखते हुए बोली, 'मेरे कारण तुम्हें तकलीफ हो रही है न?'

मां ने उसे चुप करा दिया, 'अरे, बेटी ! मैं तेरी मां जैसी हूं, जैसी जुबेदा, वैसी तू । इसमे भला तकलीफ की क्या बात है? मुसीबत में आदमी को एक-दूसरे के काम आना ही चाहिए ।'

तीनों औरतें प्लेटफार्म से बाहर आ गयीं । मां ने गठरी दूसरे हाथ में बदल ली, फिर जुबेदा से ममता भरे स्वर में बोली, 'आ, बेटी, कुछ खा-पी ले, तो आगे चलें ।'

वे कुछ दूर जाकर पेड़ के नीचे बैठ गयीं । झोले मे से टिफिन निकाला। गीता सुराही लेकर पानी लाने के लिए कल की ओर जाने लगी, तो जुबेदा ने उसके हाथ से सुराही छीन ली, 'तू बैठ, अभी तू कन्या कुमारी है । इतने सारे मर्दों के बीच पानी लेने मत जा । मैं ला देती हूं ।' उठते हुए गीता की आंखो में आंखें गड़ाते हुए धीमे स्वर में कटाक्ष किया, 'नजर लग जायेगी ।' उसने सुराही गीता के हाथ से ले लिया और कल की ओर जाते हुए देखा—पंद्रह-बीस गज की दूरी पर एक तांगा खड़ा है । घोड़ा कनस्तर के अंदर मुह गाड़े चना-भूसा खा रहा था । तांगे से थोड़ा हटकर चार आदमी आपस मे बातें कर रहे हैं । उनमें से एक की सूरत देखते ही वह चौंक उठी । दिल जोरो से धड़कने लगा । 'या अल्लाह !' वह कुछ पल स्थिर खड़ी रही । बुर्के के अंदर से उसकी आंखें उस व्यक्ति के चेहरे पर टिकी थीं । जुबेदा ने उस परिचित व्यक्ति को अच्छी तरह देखकर सोचा-'हां, हैदर ही है !' पर उसे विश्वास नहीं हो पा रहा था कि सख्त स्वभावी [illegible]

अनाचक हैदर को वह देख पायेगी । उसने सोचा हैदर से मिलकर पूछ ले—क्या गुनाह किया था उसने या उसके पिता ने कि इतनी बड़ी सजा दी? शादी की रात की घटनाओ के एक-एक दृश्य उसके दिमाग मे उभरने लगे। उन्हीं दृश्यों, घटनाओ की पर्तों मे उलझी हुई वह धीरे-धीरे पानी के नल तक पहुची । उसने देखा, वे चारो आदमी उसी की ओर घूर रहे हैं । नल पर कई अन्य व्यक्ति भी पानी लेने के लिए खड़े थे । बाल्टी, सुराही, गिलास, कनस्तर लिये । एक जवान स्त्री को पानी भरने के लिए आया देखकर वे सचेत हो गये । एक बूढे आदमी ने जो पानी भरने के लिए नल में बाल्टी लगाये था, बाल्टी हटा ली, 'पहले आप ले लीजिए' उसने बुर्का ओढ़े औरत से कहा । जुबेदा ने आखों मे कृतज्ञता लिये उसकी ओर देखा और सुराही नल के नीचे लगा दी । नल से पानी धीरे-धीरे आ रहा था । वह भी बीच-बीच मे बद हो जाता, कुछ देर तक बद रहता, फिर धीरे-धीरे बूँदें रिसती-टपकती रहती और एकाएक तेज रफ्तार से आवाजे करता हुआ पानी गिरने लगता । जुबेदा का दिल तेज हवा में भागते बादलो जैसा हो रहा था । अस्थिर ! अशात ! क्या वह मा से हैदर के बारे में बता दे? उसके मुह से निकल गया—नहीं ! वैसे इस कठोर निर्णय से वह मर्माहत हो उठी । सुराही भर गयी तो वह शीघ्रतापूर्वक कदम बढ़ाती हुई वापस चल पड़ी । उसने चलते हुए पीछे मुडकर फिर देखा तीन व्यक्ति तांगे पर बैठे थे। चौथा व्यक्ति घोडे के मुह के नीचे रखा कनस्तर लेकर तांगे के पीछे कैरियर पर रख रहा था । आगे जाकर वह घोडा हांकने के स्थान पर बैठ गया । वह नीले रंग की लुगी और ऊपर से मलमल का कुर्ता पहने था । जुबेदा ने अंदर-ही-अदर कहा—'अरे वाह । पोशाक से तो जमींदार लग रहे हैं, जनाब ! पर शक्ल-सूरत से बिलकुल तांगेवाला !' तांगा चल पड़ा तो जुबेदा हड़बड़ाहट में प्रायः दौड़ते हुए चलने लगी । बीच-बीच में पीछे मुड़कर देख लेती । ऐसा करते हुए वह एक बार सामने पेड़ से टकराते-टकराते बची । सुराही का बहुत-सा पानी छलककर कपड़ों पर गिर पड़ा । घुटने के नीचे बुर्का भीग गया । अब तक चौथा व्यक्ति भी तांगे पर घोड़ा हांकने वाले स्थान पर बैठ चुका था । उसने घोड़े को मोड़ लिया और सीधी सड़क पर सरपट दौड़ा दिया । घोड़े के गले में बंधी घंटी का स्वर

गूंज उठा। दुख से भरी बदली जुबेदा की आंखो मे घिरी और बरसने लगी। इस बरसात को मां और गीता नहीं देख पायी। जुबेदा ने उमड़ते हुए आंसुओ को पोछ लिया, पर जितनी बार पोंछती, आंखें फिर बरस पड़ती। उसे पश्चात्ताप हो रहा था कि वह हैदर से पूछ नही सकी कि आखिर उसने घर मे अचानक, आग क्यों लगायी थी। अत्याचार क्यों किया?

लगभग पांच महीने बीत चुके। जब से गीता जुबेदा के गांव में आयी, विस्थापित-बोध से ग्रसित जीवन को नकारात्मक रूप से देखने लगी थी। वह सबेरे 6 बजे उठ जाती, घर की सफाई करती। किचन में जाकर अंगीठी सुलगाती। चाय बनाती। सोने के कमरे मे जाकर जुबेदा की बांह पकड़कर उठाती—'बेगम साहिबा, चाय हाजिर है।'

कभी-कभी जुबेदा झुंझलाकर कह देती—'तू मुझे मारकर ही रहेगी।' पर दूसरे ही क्षण आंखो में नींद और आलस लिये वह उठ जाती। गीता के इस तरह काम करने पर उसे कोफ्त होती।

'...अम्मीजान रोज मुझे डांटती है कि मै देर से क्यों उठती हूं और घर का काम तुझे करना पड़ता है। कम-से-कम मेरे जागने तक तो रुक जाया कर। देख, यार, सबेरे से उठकर राम-नाम जपते हुए घर का काम-काज करना बुढ़ियों का काम है।'

गीता उसकी हर बात का जवाब केवल मुस्कान से देती। आखिर हारकर जुबेदा कमरे मे चहलकदमी करने लगती। कभी-कभी गुस्से मे भरी बगीचे में जा बैठती, गीता उसके पीछे-पीछे चली आती। उसे मनाती और यह मान-मनौवल काफी देर तक चलता रहता। यह प्रायः रोज का किस्सा था। किस्सा क्या, आदत बन चुकी थी। यह आदत दोनो को आंतरिक सुख भी देती। दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहती और प्यार करती थीं।

जुबेदा अक्सर कहती, 'देख, री गीतू, मेरी कोई बहन नहीं। इसीलिए नही हुई कि तू जो पैदा हुई! खुदा ने सजा-संवारकर तुझे मेरी किस्मत की झोली में बहन के रूप मे डाल दिया। देखो, अब कभी साथ मत छोड़ना।'

गीता उसके गले में बाहें डाल देती, 'अरी, खोरी, अब तुझे मुझसे भला कौन छीनेगा? सच ! मैं लड़का होती, तो तेरे साथ निकाह पढ़वा लेती और तुझे लेकर जन्नत की सैर के लिए निकल पड़ती ।'

'–धत् ! जन्नत जाने की क्या पड़ी है? जन्नत तो यहीं, इसी धरती पर है । मेरे पिता जी कहा करते थे, 'कर भला, हो भला' खुदा और जन्नत दोनों इसी धरती पर हैं । इंसान को प्यार करना ही खुदा और जन्नत तक पहुंचने का रास्ता है ।' कभी कॉलेज के दिनों की यादों में कभी अमर, कभी सईदा के बारे में चर्चा करते दिन बीत जाता । दोनों मिलकर खाना बनातीं, कपड़े सीतीं । गांव के बाजार से घर के लिए सामान खरीदने जातीं । मां कपड़े सीने का काम आस-पास के घरों से ले आतीं । कपड़ों की कटिंग करतीं, सिलाई करतीं । कभी-कभी रात का खाना खाने के बाद भी देर तक सिलाई का काम करती रहतीं ।

मुंशीगंज में गीता और जुबेदा मां के साथ जिस मकान में रहती थीं, वह जुबेदा के मामू का था । विभाजन के बाद मामू जब कराची जाने लगे, तो यह मकान जुबेदा के नाम कर गये । मकान दोमंजिला था । आधा पक्का, आधा कच्चा । ऊपर खपरैल था । बड़ा-सा आंगन । आंगन के दूसरी ओर छोटा-सा बगीचा, जिसमें आम, केले, सुपारी और नारियल के पेड़ थे । आंगन में सिउली के कई पेड़ थे, जिनके फूल रात में खिल जाते और पूरे वातावरण को अपनी सुगंध से भर देते । सवेरे पेड़ के नीचे सफेद फूलों की चादर बिछा देते । गीता सोकर उठने के बाद, सबसे पहले उठकर सिउली पेड़ों के नीचे गिरे फूलों के पास जाती । बहुत सारे फूलों से अंजुरी भरकर आकाश की ओर उछा देती । आंचल में ढेर सारे फूल ले लेती । घर के प्रांगण में लगे पौधों से कुछ पत्ते, फूल लेकर इकेबाना बनाना या गुलदस्ता सजाना उसकी रोजमर्रा की प्रातःकालीन दिनचर्या थी ।

मां गीता से पहले उठ जातीं । हाथ-मुंह धोकर 'कुरान शरीफ' लेकर पाठ करतीं । सबेरे चाय नहीं पीतीं । जब तक कुरान शरीफ के 21 आयत नहीं पढ़ लेतीं, मुंह में पानी तक नहीं डालतीं । सवेरे सिर्फ फलाहार करतीं। दोपहर में भात, मछली का शोरबा और रात में सिर्फ थोड़ा-सा दूध पी लेतीं । रात देर तक कपड़ों की माप लेकर उनकी कटिंग करके सिलाई

करने में ध्यानस्थ हो जातीं । ढाका से भागकर गांव पहुंचने पर उनके पास जो कुछ थोड़े-से पैसे बचे थे, उनसे दो सिलाई मशीनें नारायणगंज जाकर स्वयं खरीद लायी थीं । जुबेदा ने कई बार मां को समझाना चाहा कि वे मामू जी को खत लिख दें कि किस तरह यहां दिन काट रहे हैं, परंतु मां को यह पसंद नहीं था । उनका आत्म-सम्मान सबसे बड़ा था । उन्होंने किसी के सामने जीवन भर हाथ नहीं फैलाया और अब भी किसी के आगे हाथ फैलाने को तैयार नहीं थीं । वे किसी की दया पर जिंदगी जीना नहीं चाहतीं । वे तो अपनी मेहनत की रोटी खायेंगी, भले ही उसके लिए उन्हें कितना ही कष्ट झेलना पड़े ।

एक दिन जुबेदा ने दुखी मन से कहा, 'मां, क्या इसी तरह हम इस गांव में पड़े सड़ते रहेंगे ? पापा की कितनी इच्छा थी कि मैं 'आवामी लीग' का कुछ काम करूं । सारे बांगला देश में आग लगी हुई है और हम यहां बस खाने, सोने, बहस करने में समय गंवा रहे हैं । यह भी कोई जीवन है भला ! घुट-घुटकर जीने में क्या रखा है ? मां, यह मकान बेच दो । हम नारायणगंज चले जायेंगे । वहां कोई काम-धंधा खोज लेंगे ।'

सवेरे रेडियो पर समाचार प्रसारित हो रहा था—भारतीय सेनाएं अतिक्रमण करके आगे बढ़ती चली जा रही हैं । पाकिस्तानी फौजें उनका मुकाबला कर रही हैं । सेना ने कई पुलों को नष्ट कर दिया है, ताकि भारतीय सेना आगे न बढ़ सके । ढाका के आस-पास के इलाकों में भी युद्ध की लपटें उठ रही हैं । पाकिस्तान ने मित्र-राष्ट्र अमरीका और चीन से सहायता की अपील की है । भारत की सारी सामरिक शक्ति मुक्ति-सेना के पीछे है ।

मां शांत होकर प्रसारण सुनती रहीं, फिर एक निश्वास छोड़ते हुए बोलीं, 'बेटी', बंगला देश की किस्मत को खुदा ने बलिदान के रक्त से लिखा है। हमने भारत को टूटते और पाकिस्तान को बनते देखा है । अब बंगलादेश को बनते और पाकिस्तान को टूटते देखूंगी । बंगलादेश और बंगाली जात को कोई समाप्त नहीं कर सकता । अपनी सोने की मिट्टी छोड़कर मैं कहीं नहीं जाऊंगी ।' मां की आंखें सजल हो उठीं । उन्होंने दायें हाथ से धरती को छूकर प्रणाम किया, फिर जुबेदा से बोलीं, 'तुम चाहो

तो 'आवामी लीग' का काम कर सकती हो । पर करोगी क्या?' जुबेदा कोई उत्तर न दे सकी । उनके बीच खामोशी छा गयी । मा कपडे सीने मे जुट गयी । सिलाई मशीन की आवाज उस खामोशी को तोड रही थी।

सवेरे गीता उठी तो उसका सिर भारी लग रहा था । कई दिनों से उसे रात मे ठीक से नीद नही आती । करवटें बदलते हुए रात के दूसरे पहर उसने देखा था, जुबेदा सोयी हुई है और मा सहन मे फर्श पर चटाई बिछाकर कपडे काटने मे व्यस्त हैं । उसने सोचा उठकर मा से कह दे—'बहुत रात हो गयी है, अब सो जाये ।' ओढी हुई चद्दर को परे हटाती हुई वह खडी हुई । बरामदे मे जलती लालटेन की रोशनी का एक टुकडा उसके कमरे मे टंगी दीवार घडी पर पड रहा था । रात के एक बजने जा रहे थे । वह बाथरूम गयी । बाथरूम से निकली और खडी होकर बरामदे के इस पार चटाई पर बैठी मा के व्यस्त-कर्मठ हाथो को कपडे काटते हुए देखती रही, फिर जाकर मा के करीब बैठ गयी ।

मा ने कपडे काटते हुए उससे पूछा, 'क्यो, बेटी, नीद नही आ रही? तू मुझे मना करने आयी है न? अभी मै थोडा-सा काम और करूगी । मुझे दो बजे के पहले मुई नींद आती ही नही ।'

गीता ने आत्मीयता के साथ कहा, 'मा, तू इतना कष्ट क्यों झेलती है? तुम्हारा इतना कठिन परिश्रम देखकर मुझे दुख होता है ।' गीता का मन हुआ कि वह उनके हाथ से कैची छीनकर स्वय कटिंग करने लगे, परंतु वैसा सभव न था । वह कपडों की कटिंग के बारे मे कुछ भी नहीं जानती थी । उसने दो बार मा से कहा, 'मा, अब सो जाओ ।'

मा ने कैंची परे रखते हुए उसकी ओर देखा । उनके होठो पर मद-मद मुस्कान उभर आयी । वे उठ खडी हुई । लेकिन लडखडाकर गिरते-गिरते बचीं । गीता ने उनकी ओर हाथ बढा दिया, लेकिन तब तक वे सभल गयी थीं ।

मा ने कहा, 'बेटी, उस कमरे मे डरती हो, तो मेरे ही साथ सो जाया करो ।'

गीता ने कहा, 'नही मा, डरने की कोई बात नही । जूबी भी तो है।'

मा ने कहा, 'बेटी, मै सोने जाती हू, तू भी जाकर सो ले ।'

मां अपने कमरे मे चली गयी । गीता भी जाकर चारपाई पर लेट गयी। उसने देखा जुबेदा सो गयी है । वह काफी देर तक सोने का असफल प्रयत्न करती रही । गीता ने सपना देखा कि एक घुमावदार रास्ते पर वह चल रही है । उसके चारो ओर कैक्टस के घने जगल और कटीली झाडिया फैली है । लंबे-लबे वृक्ष, जिनके सहस्रों हाथ हवा मे उठे हुए हैं, उन हाथो में विचित्र मुखों वाले साप, गिरगिट, छिपकलिया आदि झूल रही है । लग रहा था, वे वृक्ष उसे चारो ओर से घेरते आ रहे हैं । टक । टक । टक की आवाज क्रमश तीव्र होती जा रही है । सारा जगल एक खौफनाक अट्टहास से प्रतिध्वनित होने लगा है ।

हठात् उसकी आख खुल गयी तो देखा शरीर पसीने से तर-बतर है । हृदय की गति तेज है । सिर जल रहा है । वह बिस्तर से उठ नही पा रही है । भयानक आवाजों, आकृतियों के बारे मे सोच-सोचकर दिमाग फटा जा रहा है । सवेरे के चार बजे थे । उसने देखा जुबेदा मौज से खर्राटे भर रही है। बाहर मुर्गे की बाग सुनाई दी । उसे सपने वाली बात अंदर से मथे जा रही थी । वह कुछ देर तक सपने के बारे मे सोचती रही । फिर अपने को संयत करती हुई, भविष्य मे आने वाली यातनाओ, विपदाओ से लडने का पक्का इरादा करती हुई वह उठ खडी हुई । वह बरामदा पार करके आगन में आयी । उसने पूर्वाकाश की ओर देखा । उषा-काल की लालिमा फैल रही थी । बहुत सारे पछियो के झुड हवा मे चक्कर काटते हुए आसमान में पूरब से पश्चिम की ओर उड रहे थे । सवेरे की स्निग्धता, पछियो के कलरव से उसकी आत्मा मे प्रसन्नता भर उठी । वह सिउली के पेड के नीचे चली आयी । जमीन पर झरे हुए ढेर सारे सफेद फूलों को चुनकर उसने आचल मे भर लिया और फिर अन्यमनस्क-सी आचल के सारे फूलो को अजलि में भरकर आकाश की ओर उडा दिया । ऐसा करते हुए उसे अपनी मा की, ढाका के छोटे-से घर की याद हो आयी, जहां उसी तरह हर सुबह सिउली-फूलों को वह आकाश में उडाया करती थी और मा उसकी इन

प्रलयंकारी आवाजें । युद्ध के विमानों की कर्कश आवाजों से वायुमंडल थर्राने लगा । रेडियो पर हर आदमी, हर समय नये समाचार सुनने की आतुर प्रतीक्षा में उत्सुक रहने लगा ।

20 सितंबर, 70 की शाम को जैसोर रेडियो से एक छोटी-सी घोषणा हुई—'मुक्ति सेना ने जैसोर क्षेत्र को अपने कब्जे मे ले लिया । हारकर पीछे हटती हुई पाकिस्तानी सेना और रजाकार गावों को जला रहे है । पुलों को उडा रहे हैं, स्त्रियों का अपहरण कर रहे हैं । साधारण जनता सावधान रहे। अपने बचाव के लिए हर तरह से प्रस्तुत रहे ।'

जुबेदा ने मा से पूछा, 'मा, ऐसी स्थिति मे यहां भी...'

मा ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही कहा, 'बेटी, लडाई मे कहीं भी, कुछ भी हो सकता है । ऊपर बैठे खुदा से प्रार्थना कर कि वही हमारी रक्षा करे ।'

जुबेदा ने सुझाव दिया, 'फिर भी हमे अपने बचाव के लिए तैयारी कर लेनी चाहिए ।'

मां ने सिलाई मशीन रोक दी । दात से तागे को तोडकर कपडे को अलग किया और जुबेदा की ओर ममताभरी दृष्टि से देखते हुए बोली,...'जरा सूनूं तो, क्या उपाय करने जा रही है, मेरी लाडली बेटी? तूने देखा था, बेटी, घटनाएं किस तरह हठात् घट जाती हैं । आखों के सामने देखते-देखते इतनी बडी कोठी जलकर राख हो गयी । हम असहाय होकर अपना घर ढहते देखते खड़े रहे । उस दुर्घटना को तेरे पापा नहीं देख सके । हमसे रूठकर सदा के लिए चले गये । ट्रेन पर मार-काट देखा ही है। शायद भविष्य मे उससे भी भयानक दुर्घटनाएं घटें ।' कहते-कहते भावावेश में मा की आंखें सजल हो उठीं ।

जुबेदा दुखी मन से मां की बातों पर सोचने लगी ।

खामोशी तोड़ते हुए गीता ने एक उपाय सुझाया, 'सरसों का तेल कड़ाही में खौलने के लिए अंगीठी पर रख देते हैं । हम छत पर से आक्रमणकारियों को देखते रहेंगे वे लोग जब भी इधर बढ़ेंगे, उन पर गर्म तेल उड़ेल देंगे ।'

मां के दुखी चेहरे पर हंसी की रेखाएं खिंच आयीं, 'बेटी ! यह सब

हरकतों से कभी खुश होती थी, कभी नाराज ।

भारतीय जवानों के साथ 'मुक्ति सेना' पाकिस्तानी फौज को पीछे ढकेलती आगे बढ़ती जा रही थी । जैसोर, मैमन सिंह आदि मुक्ति सेना के अधिकार में आ गये थे । बंगलादेश की जनता के लिए यह धर्म-युद्ध उसकी स्वतंत्रता, और संस्कृति की सुरक्षा के लिए था । शेख मुजीबुर्रहमान को रावलपिंडी में कैद कर लेने से बंगलादेश की जनता के मन में पश्चिमी पाकिस्तान के प्रति नफरत और प्रतिशोध की भावना भर गयी थी । प्रत्येक स्थान, चाहे गांव हो या शहर, बसों, तांगों, रेलगाड़ियों, फुटपाथ, चौरास्ते, हाट-बाजार सभी जगह बड़े-बड़े अक्षरों में नारे लिखे पोस्टर दिखाई देने लगे । 'बंगबंधु जिंदाबाद ।' 'बंगलादेश जिंदाबाद', 'बंगलादेश हमारा है ।' बंगलादेश के हर स्वतंत्रता-प्रेमी नागरिक के होठों पर एक गीत सुनाई देने लगा—'ओ गो आमार सोनार बांगला, आमि तोमाय भालो बासि ।' (ओ मेरे सोने के बंगाल, मैं तुझे प्यार करता हूं) । बुद्धिजीवी मुक्ति संग्राम को अपनी वैचारिक क्रांति का संग्राम मानकर नयी कविताएं, कहानियां, लेख, नाटक लिख रहे थे । विचार-गोष्ठियों के अलावा भी वे गांव-गांव, कस्बे-कस्बे जाकर जनता को जागृत कर रहे थे । हर ओर बस, एक ही स्वर सुनाई दे रहा था—'ओ गो आमार सोनार बांगला, आमि तोके भालो बासि ।'

बंगला देश का प्रत्येक नागरिक धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठकर सांस्कृतिक चेतना और भाषा के प्रति समर्पित हो चुका था । बंगला भाषा, बंगलादेश हमारा अपना है । भाषा और संस्कृति की यही वह जमीन थी, जिस पर हर प्रकार का बलिदान देने के लिए हिंदू-मुसलमान एकजुट होकर संघर्ष-रत थे । 'जय बांगला' का नारा चारों ओर हवा में गूंजने लगा । 'जय बांगला' का नारा ही उनके जीवन का मंत्र था । स्वाधीन बंगलादेश उनका सपना था ।

17 दिसंबर को आधी रात भारत तथा पाकिस्तान ने युद्ध की घोषणा कर दी । बंगलादेश का ही नहीं, भारत का कण-कण जय बांगला के जयजयकार से गूंज उठा और गूंजने लगी हवा में भारी तोपों, तोपों की

प्रलयंकारी आवाजें । युद्ध के विमानों की कर्कश आवाजों से वायुमंडल थर्राने लगा । रेडियो पर हर आदमी, हर समय नये समाचार सुनने की आतुर प्रतीक्षा में उत्सुक रहने लगा ।

20 सितंबर, 70 की शाम को जैसोर रेडियो से एक छोटी-सी घोषणा हुई—'मुक्ति सेना ने जैसोर क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया । हारकर पीछे हटती हुई पाकिस्तानी सेना और रजाकार गांवों को जला रहे हैं । पुलों को उड़ा रहे हैं, स्त्रियों का अपहरण कर रहे हैं । साधारण जनता सावधान रहे। अपने बचाव के लिए हर तरह से प्रस्तुत रहें ।'

जुबेदा ने मां से पूछा, 'मां, ऐसी स्थिति में यहां भी...'

मां ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही कहा, 'बेटी, लड़ाई में कहीं भी, कुछ भी हो सकता है । ऊपर बैठे खुदा से प्रार्थना कर कि वही हमारी रक्षा करे ।'

जुबेदा ने सुझाव दिया, 'फिर भी हमें अपने बचाव के लिए तैयारी कर लेनी चाहिए ।'

मां ने सिलाई मशीन रोक दी । दांत से तागे को तोड़कर कपड़े को अलग किया और जुबेदा की ओर ममताभरी दृष्टि से देखते हुए बोली,...'जरा सुनूं तो, क्या उपाय करने जा रही है, मेरी लाडली बेटी? तूने देखा था, बेटी, घटनाएं किस तरह हठात् घट जाती हैं । आंखों के सामने देखते-देखते इतनी बड़ी कोठी जलकर राख हो गयी । हम असहाय होकर अपना घर ढहते देखते खड़े रहे । उस दुर्घटना को तेरे पापा नहीं देख सके । हमसे रूठकर सदा के लिए चले गये । ट्रेन पर मार-काट देखा ही है। शायद भविष्य में उससे भी भयानक दुर्घटनाएं घटें ।' कहते-कहते भावावेश में मां की आंखें सजल हो उठीं ।

जुबेदा दुखी मन से मां की बातों पर सोचने लगी ।

खामोशी तोड़ते हुए गीता ने एक उपाय सुझाया, 'सरसों का तेल कड़ाही में खौलने के लिए अंगीठी पर रख देते हैं । हम छत पर से आक्रमणकारियों को देखते रहेंगे वे लोग जब भी इधर बढ़ेंगे, उन पर गर्म तेल उड़ेल देंगे ।'

मां के दुखी चेहरे पर हंसी की रेखाएं खिंच आयीं, 'बेटी ! यह सब

दुश्मन से लड़ने की पुराने जमाने की तरकीबें हैं । अब नये-नये औजार, बंदूकें, मशीनगनें, तोपें बनी हैं । वे दूर से ही गोला बरसायेंगे । क्या इतनी दूर से तू उन पर खौलता हुआ गर्म तेल उड़ेल सकेगी?'

गीता झेंप गयी ।

जुबेदा ने चुटकी बजाते हुए दूसरा उपाय सुझाया, 'हमें आंगन में जल्दी से एक तहखाना खोद लेना चाहिए । गोला-बारी के समय उसमें छिप जायेंगे ।'

मां ने सिर झटक दिया, जैसे कह रही हो—बकवास ! वह बिना कुछ बोले सिलाई में लग गयी । खड़खड़ाती हुई सिलाई मशीन उन तीनों की चुप्पी को तोड़ रही थी । आकाश में एक हवाई जहाज तेजी से गुजर गया।

गीता ने जुबेदा की ओर देखा, जैसे वह कह रही हो—'कुछ-न-कुछ उपाय करने का समय आ गया ।'

जुबेदा गीता के करीब आ गयी । आत्मीयता से उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया । दोनों कुछ देर तक बिना कुछ बोले बैठी रहीं ।

मां ने कहा, 'बेटे, हिम्मत रखो । खुदा सब ठीक करेगा । देश के लिए कुरबानी देने में गर्व महसूस होना चाहिए । जनता के खून से ही देश की आजादी की किस्मत लिखी जाती है । बलिदानों से ही आजादी का वृक्ष फलता-फूलता है । अब बांगलादेश बनने से कोई रोक नहीं सकता।'

'आमार सोनार बांगला, आमि तोमाय भालो बासि—वे गीत की पंक्तियां गुनगुनाने लगीं । जुबेदा और गीता भी उनके साथ स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगीं ।

गीत समाप्त करके जुबेदा ने उठकर रेडियो खोल दिया । समाचार प्रसारित हो रहा था—खुलना और करीमगंज पर भारतीय सेना का आक्रमण। दोनों ओर से घमासान युद्ध । भारतीय सेना के दो सौ जवान मारे गये । हजारों घायल हो गये । पाकिस्तानी सेना जबर्दस्त मुकाबला कर रही है।

जुबेदा ने आकाशवाणी कलकत्ता पर स्विच घुमाया । उधर से भी

समाचार आ रहा था—मुक्ति सेना के कर्नल अमर चौधरी ने इस अभियान में साहसपूर्ण भूमिका निभायी ।

इसके पहले का समाचार वे सुन नहीं सकीं । जुबेदा खुशी से उछल पड़ी । गीता को बाहों में बांध लिया, फिर बोली, 'मन करता है गीतू, कि अमर भाई के पांव चूम लूं ।'

जुबेदा ने अपना हाथ चूमकर हवा में हिलाया ।

गीता उसे परे हटाती हुई बोली, 'हां, जब हम बेघर हुए, बेइज्जत हुए, तब उनका जौहर कहां गया था?'

जुबेदा ने उसके घुटने पर ताल देते हुए कहा, 'देख गीतू, तू चाहे जो कुछ कह ले, पर अमर भाई ने बहुत दिलेरी दिखाई है । हो सकता है गीतू, यह दिलेरी तुम्हारे कारण हो । मुझे लगता है, जब वे ढाका में तुझे खोज नहीं पाये और समझ गये कि या तो तुम मर चुकी हो...हाय मां । तू लाख बरस जिये ! हां, तभी उनके दिल में पाकिस्तानी अत्याचार के प्रति नफरत भर गयी होगी । कहने का सीधा-सीधा अर्थ यह हुआ कि इस लड़ाई में जय-विजय की चाभी तू है । बोल है न?'

गीता के होठों पर मुस्कान खिल उठी । उसके मुंह से निकला—'धत्', और वह उठकर दूसरे कमरे में चली गयी । उसकी आंखों में खुशी के आंसू थे । निराशा के गहन अंधकार के बीच आशा की एक छोटी-सी किरण दिखाई देने लगी थी । उसका अंतर एक अदृश्य रोमांच से भर उठा । इसी रोमांच और खुशी के कगार पर बैठी वह रो पड़ी थी । उसकी आंखों से अनवरत आंसू गिरते जा रहे थे । जैसे अचानक आंसुओं का बांध टूट गया हो । जुबेदा ने उसे उठाकर गहरे आलिंगन में बांध लिया । परंतु जुबेदा की आंखों से भी आंसू गिरने लगे । दोनों उस स्थिति में काफी देर एक-दूसरे को सांत्वना देती हुई रोती रहीं और रोती हुई सांत्वना देती रहीं ।

जुबेदा ने रुंआसे स्वर में कहा, 'देख री, गीतू, एक तेरी किस्मत है कि तुझे अमर जैसा देशभक्त मिला और एक मैं हूं, जिसे हैदर जैसा गद्दार, देशद्रोही...!'

गीता ने उसके होठों पर अपनी उंगली रख दी, 'बस ! चुप कर । इस तरह की बातें मत कर । इसमें हैदर मियां या हैदर जैसे सैकड़ों मुसलमान

बंगालियों का क्या दोष? सच तो यह है कि धर्म की राजनीति ने उन्हें अंधा बना दिया है। वे बंगलादेश की जनता का अच्छा-बुरा भूल गये हैं। उनकी आंखों में धर्म का रंग है और उनकी सोच की बागडोर हत्या और शोषण की राजनीति के हाथ में है।'

जुबेदा एकबारगी रो पड़ी, 'नहीं री, -- हैदर के बारे में मैं बहुत सुन चुकी हूं। मेरी शादी के पहले से ही वह बुरे तत्त्वों के साथ था। उसका काम छिनताई करना, डाके डालना, औरतों को बेआबरू करना था। यह बात मुझे निकाह होने के बाद मेरी फूफी ने बतायी थी, जब हैदर गुस्से से पागल गाली-गलौज पर तुला हुआ था और पापा उसे मना रहे थे। फूफी के पति पुलिस इंस्पेक्टर हैं। यह शादी दूर के रिश्ते की मौसी ने करायी थी। वे मां की बहन लगती हैं।'

गीता ने साश्चर्य जुबेदा की ओर देखकर धीरे स्वर में पूछा, 'तो क्या मां तुम्हारी असली मां नहीं हैं?'

'ना।' जुबेदा की आवाज भर्रा आयी।

'तो फिर?' गीता ने उससे पूछा।

जुबेदा ने बताया--'मेरी मां बचपन में ही खुदा को प्यारी हो गयी थी। असल में जिन्हें मैं मां कहती हूं, मां का दर्जा देती चली आयी हूं, वे मेरी मामी हैं। यह मकान उन्हीं का है। मामी और पिता जी एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। मामी की शादी पिता जी ने ही करायी थी। पाकिस्तान बनने पर जब मामा कराची जाने लगे, तो मामी स्टेशन पर गाड़ी पर पांव रखते-रखते नीचे उतर आयी। ना, मैं अपनी मिट्टी छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी। पिता जी ने बहुत समझाया, पर वे मानीं नहीं। मामा अकेले ही कराची चले गये। मुझे याद है, मैं बहुत छोटी थी। यही 4-5 साल की! दो चुटियों में नटखटपन बांधे स्टेशन पर मैं भी गयी थी। मामी मेरी मां के साथ दिन भर सामान-असबाब बांधती रहीं। तांगे बुलाये गये। एक तांगे में नौकर के साथ सामान रखा गया। दूसरे पर मामी, मामा, पिता जी, मां और मैं। उस वक्त तक मामी के कोई संतान नहीं हुई थी। वे मुझे बहुत दुलार-प्यार करती थीं। मैं अपनी बेसिर-पैर की बातों से उन्हें खूब हंसाती थी। हम सब स्टेशन पर पहुंच गये। सारा दिन इंतजार में बीता। सब

कोई थक गये, पर मामा थके नहीं । उन्हें तो कराची जल्दी-से-जल्दी पहुचने की लगी थी । वे लगातार स्टेशन पर चहलकदमी करते रहे । ट्रेन के आने के बारे मे स्टेशन मास्टर से सैकड़ो बार शिकवा-शिकायत करते रहे और इसी बीच मामी ने अब्बाजान से साफ-साफ कह दिया था कि वे कराची नही जायेगी । सुनकर पिता जी की आंखें आश्चर्य से फैल गयी । उस समय उनकी आखों मे जो भाव था, मुझे हमेशा याद रहता है । उन आखों में आश्चर्य भी था और आनद भी । आनद के साथ स्वच्छंद जीवन की कल्पना थी और एक रोमाचभरी जिंदगी जीने की इच्छा ! पिता जी ने मेरे गाल पर लबी-सी पप्पी दी और हौले से मामी ने दूसरे गाल को चूमा था। फिर मुझे मामी, यानी मा ने पिता जी की गोद से लेकर अपनी गोद में बिठा लिया । बैग से चाकलेट निकालकर मेरे हाथो में थमा दिया । बार-बार चूम-चूमकर मुझे खूब परेशान किया । मैंने जब यह पूछा कि मामी क्या तुम कराची नहीं जाओगी? मामा अकेले ही जायेंगे? तो पिता जी ने आखे तरेरकर मुझे झिड़क दिया । मैं रोने लगी । इतने में मामा आ गये और मामी से पूछ बैठे, 'जुबी बेटी क्यों रो रही है?' मामी कुछ बोलीं नहीं । पिता जी ने कहा, 'शैतानी कर रही है । कहती है, कराची जाऊंगी, मामा के साथ? मैं चीख उठी थी—नहीं, नही, मामू जी...' मैं आगे कुछ भी बोल पाती कि पिता जी ने लपककर मुझे गोद में उठा लिया और जोरों से चूमते हुए लेकर कुछ दूर बाहर टहलने लगे ।'

दूर के गाव में...कहीं कव्वाली हो रही थी । आवाज कभी बहुत मद्धिम हो जाती और हवा के साथ कभी तेज । तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

जुबेदा ने आंगन में जाकर देखा । कोई भी नहीं था । वह मां के कमरे में गयी । मां सो रही थी । मां के कमरे से लौट रही थी तो उसकी नजर मां के चप्पलों पर पड़ी, जो उसके सोने के कमरे के दरवाजे के पास पड़े थे । वह आकर बिस्तर पर गीता की बगल में पुन. लेट गयी ।

गीता ने पूछा, 'कौन था?'

जुबेदा ने अनमने भाव से उत्तर दिया, 'क्या पता, कौन था ।' वह गीता के और करीब आ गयी और अपना दायां हाथ फैलाकर गोल तकिये

पर एक टांग रखकर सोने की कोशिश करने लगी । उसे यह सोचकर बेचैनी हो रही थी कि शायद मां ने उसकी बातें सुन ली हैं ।

दरवाजे पर खड़ी-खड़ी मां सच ही उनकी सारी बातें सुन रही थी।

रात में गीता को ठीक से नींद नहीं आयी । सवेरा होते ही वह उठकर आंगन मे गयी । उगते सूरज का सुनहला प्रकाश हरे केले के पत्तों, नारियल और सुपारी के ऊंचे वृक्षों के ऊपर पड रहा था । अक्टूबर के दिन थे । हवा में ठंड थी । उसे अच्छा लगा । आंगन के दूसरे छोर पर 'मुर्गीहट्टा' है । उसने जाकर दरवाजा खोल दिया । एक-एक करके मुर्गियां बाहर निकल आयीं और आंगन में इधर-उधर फुदकने लगीं । गीता ने दाना लाकर जमीन में छितरा दिया । मुर्गियां दाने पर टूट पड़ीं । वे सब फुदक-फुदककर दाना चुगने लगी । वह जमीन पर बैठ गयी और मुर्गियों को दाना चुगते हुए देखती रही । बड़े मुर्गे ने बांग दी । सारी मुर्गियां दाना चुगना बंद करके मुर्गे की ओर देखने लगीं और फिर दुबारा दाना चुगने में लग गयीं ।

गीता अपने अंदर राहत महसूस कर रही थी । अमर के बारे में इन तीन महीनों में कोई भी समाचार उसे नहीं मिला था । ये तीन महीने उसके जीवन के त्रासद क्षण थे । उसने सोचा —"यदि जुबेदा आश्रय न देती, तो पता नहीं उसका क्या होता । उसके रोम-रोम जुबेदा के प्रति अनुगृहीत थे । उसी के स्नेह, प्यार और बंधुत्व ने उसे बचा लिया । लेकिन उससे भी अधिक कृतज्ञ वह ईश्वर की है, जिसने रजाकारों द्वारा उसकी इज्जत क्षत-विक्षत होने से बचायी । उसे अपने ऊपर विश्वास नहीं होता । वह इस तरह रजाकारों की गिरफ्त से भागकर अपना बचाव कैसे कर सकी? उसे यह भी विश्वास नहीं होता कि वह एक विद्रोहिणी भी हो सकती है । वह अपनी जिंदगी के बारे मे सोचती है, तो अपने प्रति घृणा से भर जाती है । गुंडों के प्रति घृणा और आक्रोश से दांत भिंच जाते हैं । प्रतिशोध की ज्वाला में उन नरपिशाचों को जला देने के संकल्प के साथ

उसकी मुट्ठियां बंध जाती हैं । वह कभी-कभी सोचती है । औरत पुरुष की काली करतूतों के सामने कितनी निरुपाय और कमजोर हो जाती है । यह बात उसने अपने अपहरण और बाद में उस छोटे-से अंधेरे कमरे के अंदर घुटती हुई जिंदगी जीते हुए बहुत करीब से देखी और महसूस की है । धर्म और राजनीति की आड़ में समाज के बुरे तत्त्व किस तरह लाभ उठाते हैं । वह सब उसकी आंखों के सामने घटित हो चुका है । वह लाख कोशिशों के बावजूद इन त्रासद, खौफनाक और निर्लज्जता के काले कारनामों को अपने मन और मस्तिष्क से हटा नहीं पाती । उसे हर क्षण लगता रहता है कि गुंडे नंगा छुरा लिये उसका पीछा कर रहे हैं और वह आत्मरक्षा के लिए बेतहाशा भाग रही है। भागना और अपनी सुरक्षा के लिए आश्रय पा लेना उसका अभीष्ट है । वह भागती जा रही है । कभी सीधी, कभी मुड़कर, दायें-बायें, दुर्गम ऊंचे-नीचे रास्तों पर वह भागती जा रही है । उसका जीवन अंधेरे जंगल के बीच मातम मनाती हवा-सा कांप रहा है । आह! कैसा खौफनाक दृश्य था । गुंडे उसे पकड़कर निर्वस्त्र कर रहे थे और वह द्रौपदी की तरह किसी कृष्ण को बुला नहीं सकती थी । उसका हाथ-मुंह उसी की साड़ी से बांधकर जीप के पीछे माल-असबाब की तरह फेंक दिया गया था । वह अपने को मुक्त करने की असफल कोशिश कर रही थी...।

रात में अमर के बारे में रेडियो पर समाचार सुनकर उसके अंदर खुशी की लहर उठी थी । वह अमर के बारे में बहुत कुछ जानना चाहती है पर ऐसा संभव नहीं । इस मुक्ति युद्ध में वह खोजना भी चाहे, तो अमर को आसानी से नहीं पा सकती । खोज पाने का कोई उपाय भी वह नहीं जानती । पता नहीं, वह कब और कहां किस मोर्चे पर लड़ रहा है । अमर के इस वीर-रूप के बारे में सोचकर उसे आंतरिक प्रसन्नता हुई । अमर के व्यक्तित्व के लिए समर्पण की चाह और भी बलवती हो उठी । उसके मन में अब अमर पहले से अधिक गौरवशाली और आराध्य बन गया । उसे सवेरा बहुत सुखकर लगा । उसने सोचा, वह जुबेदा के साथ आज दिन भर अच्छे-अच्छे व्यंजन बनाये । मछली, पुलाव, बैंगन भर्ता, खीर इत्यादि । उसने निश्चित किया कि आज रसोई का सारा काम वह स्वयं करेगी । वह

रसोईघर की ओर जा रही थी कि बाहर दरवाजे पर दस्तक हुई । एक आतंक उसके दिल और दिमाग पर छा गया । उसने मा को जगाने के लिए जैसे ही कमरे में कदम रक्खा तो देखा, मा उठकर चटाई समेट रही थी । उसने मा से पूछा कि क्या वह चाय बना लाये ।

मा ने अन्यमनस्क भाव से कहा, 'रहने दे, बेटी, मैं ही बनाऊगी।'

गीता कुछ और कहती कि दरवाजे पर दोबारा जोरों की दस्तक हुई । उसने मा से कहा, कि आज चाय वही बनायेगी ।

मां ने कहा, 'अच्छा, बेटी, तू ही बना । मै देखती हू कौन आया है । पता नही, सवेरे-सवेरे कौन है ।' वह दरवाजे तक गयी । पूछा, 'कौन है?'

बाहर से लड़खड़ाती हुई बूढ़ी आवाज आयी, 'मै रेशमा हूं ! दरवाजा खोलो ।'

मा ने दरवाजा खोल दिया । रेशमा हाथ में गठरी टागे बाहर खड़ी थी, मां ने उसे अंदर आने के लिए कहा । वह दरवाजा पार करके अंदर आ गयी। मा ने दरवाजा बंद कर लिया । रेशमा ने मां की ओर आश्चर्य भरी नजरों से देखा । मां समझ गयी कि वह इस तरह दिन में दरवाजा बद करने पर आश्चर्य प्रकट कर रही है ।

मां ने कहा, 'समय बहुत खराब है । चारों ओर लूट-मार मची है।

रेशमा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया, 'हां, पूरा देश जल रहा है।'

दोनों महिलाएं आंगन के आखिरी छोर पर सिउली पेड के नीचे आ गयी तो मां ने कहा, 'यहीं ठहरो ! मै चटाई लाती हू ।'

मां ने कमरे से चटायी लाकर बिछा दी । रेशमा थकान से आह भरते हुए चटाई पर पसर गयी । अचानक गठरी पर सिर रखकर, पीठ के बल लेट गयी । मा ने रसोई घर जाते हुए रेशमा से कहा कि वह आराम करे । थोड़ी देर मे नाश्ता भिजवा देंगी ।

गीता उस वक्त रसोईघर में चाय बना रही थी । मां ने उससे कहा कि

वह एक प्याला चाय बाहर रेशमा बुआ को दे आये । गीता एक कप चाय लेकर आंगन मे आयी । रेशमा को देखकर उसके मुह से चीख निकल गयी । चाय का प्याला उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ा । रेशमा उठकर बैठ गयी ।

गीता को पहचानते हुए बोली, 'अच्छा, तो तू यहां छिपी बैठी है । पर डर मत, बेटी, मै नारायणगंज से भागकर आ रही हूं ।'

गीता भागकर अंदर कमरे में पलंग पर जुबेदा के ऊपर जा गिरी । जुबेदा सो रही थी ।

वह 'हाय' की आवाज के साथ चौंककर जाग गयी, 'क्या हुआ, गीतू? इस तरह क्यों कांप रही है? बता तो सही ।'

गीता की आवाज जैसे गले मे रुंध-सी गयी थी । वह हांफते-कांपते बोली, 'कुछ मत पूछ, जूबी । वही खूसट बुढ़िया यहां आ गयी है । अब मैं बच नहीं सकती । गुंडे पीछे लगे हैं । वे मुझे उठाकर ले जायेंगे ।' वह बेतहाशा रो पड़ी ।

जुबेदा उसे आलिंगन मे बांधकर उसे चुप कराने लगी । तब तक मां भी आ गयी । वे कुछ समझ नहीं पा रही थीं । आखिर बात क्या है।

धीरज बंधने पर गीता ने मा और जुबेदा से सब कुछ बता दिया । किस तरह यह बुढ़िया रजाकारों के अड्डे पर दुःख की मारी लड़कियों की रखवाली करती है । किस तरह अपनी जान हथेली पर लेकर उसने उसे बांधा था और मौत की अंधेरी कोठरी से अपने को बचा लायी थी । किस तरह वह जुबेदा तक पहुंच सकी ।

जुबेदा ने मां से उस बुढ़िया के बारे में पूछा तो मां ने बताया, 'वे रिश्ते में तुम्हारे पिता की बुआ लगती हैं । रेशमा बुआ को तू भूल गयी बेटी। बचपन मे वे तेरे लिए फाजिल्का से रेवड़िया लाया करती थीं । बहुत दिनों से उनका अता-पता नहीं था । अचानक गायब हो गयी थीं । कुछ लोग कहते थे कि वे एक खटिक से मुहब्बत करती थीं । उसी के साथ ढाका भाग गयीं। कुछ लोग कहते थे कि पश्चिमी पाकिस्तान के फौजी उसे जीप में उठाकर ले गये ।'

जुबेदा ने मा से कहा, 'जो भी हो, मा, बुआ का इस वक्त यहां रहना खतरे से खाली नही । हो सकता है, रजाकार उसके पीछे हो । इस समय हममे से कोई नही बच सकता और फिर गीता की सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है । बुआ जासूसी करने ही यहा आयी है । उन्हें साफ-साफ कह दो कि कही और चली जाये । ऐसी कुलटा और नीच औरत के लिए हमारे दिल मे हमारे घर मे कोई जगह नही ।'

मा मौन थी ।

जुबेदा ने मां से फिर पूछा, 'क्या बात है, मा, तुम बोलती क्यो नही?'

मा ने कहा, 'बेटा, आये हुए मेहमान को कैसे कह दू कि चला जाये? उसके चरित्र के बारे मे सभी जानते है । कोई आश्रय तो क्या, फूटी आखो से भी उसे देखना नही पसद करता । लेकिन, शरण में आये हुए पापी को भी माफ कर देना चाहिए ।'

जुबेदा ने दृढता से कहा, 'नही, मा, ऐसी औरत को हम अपने घर मे जगह नही दे सकते । वह रजाकार गुडो की वासना मिटाने के लिए सैकडों निर्दोष लडकियो की रखवाली करती है । यातनाए देती है । ऐसी औरत को हम क्या, ईश्वर भी नही माफ कर सकता । उसे अभी, इसी वक्त निकालो।'

मा अनिश्चय भरी आखो से जुबेदा और गीता को देखती जा रही थी।

जुबेदा उठकर बरामदे मे आयी और गुस्से से बोली, 'बुआ, तुम अभी, इसी वक्त यहां से निकल जाओ ।'

रेशमा आख बद किये लेटी थी ।

जुबेदा की आवाज सुनकर उनकी आखे खुलकर फैल गयी । वह उठती हुई बोली, 'बेटी, इतनी दूर से थकी-मादी आ रही हू । तरस खा, बेटी ! मैं भला अब कहा जाऊगी? इतने दिनो बाद तुझे देखा है ।'

जुबेदा तड़पकर बीच में बोली, 'कहीं भी जाओ ! पर खुदा के लिए यहां से उठो । भागो । तुरंत । जल्दी ।'

निकल गयी । जाते-जाते उसके चेहरे पर कुत्सित भाव तन गये।

वह अस्फुट स्वर में बोली, 'बेटी, जा तो रही हूं, पर इसकी सजा ईश्वर तुम्हें देगा । मैं हैदर से सब कुछ बता दूंगी । इस भगोड़ी को, और तुम्हें भी देख लूंगी ।'

अमर की आखों मे पिछले दृश्य तैर रहे थे ...

14 मार्च, 1970 । सध्या के 4 बजे । ढाका रेसकोर्स मैदान । चारो ओर असख्य जन-समूह उमड रहा था ।

शेख मुजीब ने दस लाख की भीड को सबोधित करते हुए बगलादेश की मुक्ति के लिए आह्वान किया तो हर्षोल्लास से उमडती जनता की तालियो की गडगडाहट पूरे पाच मिनट तक वातावरण मे गूजती रही । पद्मा की ओर से आते हुए पक्षियो के उडते हुए झुंड भी अपना हर्ष प्रकट कर रहे थे । अपने कलरव से । लोग मुजीब के हर शब्द को कुरान के आयत की तरह मन्त्र-मुग्ध हृदयगम कर रहे थे । मुजीब का भाषण बहुत सक्षिप्त था।

भाषण समाप्ति पर अमर ने मच पर जाकर शेख मुजीब के सामने श्रद्धानत होकर प्रणाम किया । उनकी आज्ञा लेकर बोलना आरभ किया । अमर के हर शब्द मे क्राति का विस्फोट था । उसकी अग्निवाणी सुनकर छात्रों ने कई बार हर्ष-ध्वनि प्रकट की और तालिया बजी । देखते-देखते छात्र-सघर्ष-समिति के प्रस्ताव पर 'मुक्ति सेना' का गठन किया गया । इसका सुप्रीम कमांडर शेख मुजीबुर्रहमान को बनाया गया ।

उस शाम डूबते हुए सूरज तथा सध्याकाश की लालिमा मे असख्य बुद्धिजीवियों की हत्याओं, औरतों के शीलहरण, आत्म-क्रदन और असख्य विस्थापित जीवन के बीच, एक नयी आशा की किरण दिखाई दे रही थी । उस रात ढाका में घर-घर की दीवारों पर पोस्टर लगने लगे थे । रंग-बिरंगे अक्षरो से लिखा था— 'मुक्त बगलादेश—जिंदाबाद !' बंगबंधु—जिंदाबाद'।

एक ओर स्वतंत्र बंगलादेश का क्रांतिवाद उभर रहा था तथा दूसरी ओर पश्चिमी पाकिस्तान के पेशावरी, लाहौरी पठान सैनिक युद्ध के सामान लिये, बंगाली जाति का नामोनिशान मिटा देने के लिए कराची बंदरगाह से जहाजों मे सवार होकर चल पड़े थे । घर-घर से नवयुवकों, बुद्धिजीवियों को पकड़ा जा रहा था । उन्हें रात के अंधेरे में गुप्त स्थानों पर ले जाकर मौत के घाट उतारा जा रहा था । प्रत्येक युवक को गोली मारने के पहले वे कहते—'हमे पाकिस्तान चाहिए, बंगलादेश नहीं । पाकिस्तान—जिंदाबाद । इस पर युवक दृढ़ स्वर में बोल उठते—'बंगलादेश—जिंदाबाद ।' पर उनका नारा बीच में ही गोलियों से छलनी हो जाता । वे क्षत-विक्षत ढेर हो जाते। उनके रक्त से भीग-भीग जाती बंगलादेश की मुक्तमना सोने की धरती । रो उठती उस धरती की आत्मा। सहम उठती दिशाएं ।

15 मार्च, 1970 की सुबह । अंधेरे को चीरकर उगा हुआ सूरज जब बंगलादेश की धरती पर क्रांति-पुत्रों को आशीर्वाद देने आया, तो स्तब्ध रह गया । हजारों युवक-युवतियों की रक्तरंजित लाशें, सैकड़ों जले-ढहे मकान, वीरान गांव । चीत्कार करते भूखे-असहाय बूढ़े, बच्चे-स्त्रियां । यह सब हृदय-विदारक दृश्य देखकर उस दिन अमर ने दो हजार क्रांतिकारी युवकों के साथ शपथ ली थी, 'आजादी के लिए हम अपना खून देंगे । स्वतंत्र बंगला देश लेकर रहेंगे । जय बांगला ।'

जय बांगला के नारों के साथ पुलिस तथा सुरक्षावाहिनी के ऊपर धावा बोल दिया था । सेना और पुलिस ने गोलियां चलायीं । सैकड़ों छात्र धराशायी हो गये । इतिहास साक्षी है । उस दिन वहां तैनात सशस्त्र पुलिस सुरक्षावाहिनी का एक भी जवान निहत्थे क्रांतिकारियों से बचकर नहीं जा सका ।

इसके कुछ ही देर बाद फौज ने शहर को चारों ओर से घेर लिया । अमर अपने कुछ साथियों के साथ बचता-बचाता बड़ी मुश्किल से नगर-सीमा से बाहर निकल सका था । उसे अपनी सुरक्षा से अधिक अपने साथियों की सुरक्षा की फिक्र थी । घर जाना खतरे से खाली नहीं था । वहां जाते ही उसे पकड़कर गोली मार दी जायेगी । क्षणभर के लिए उसके मस्तिष्क में गीता का ध्यान आया । उस समय रात के 10 बजे थे । शहर

आतंक से स्तब्ध था । सड़क के मोड़ पर सशस्त्र पुलिस के दो सिपाही टहलते हुए दिखाई दिये । सड़क से निकलकर मुखर्जी पाद्धा की ओर जाने वाली गली के मोड़ पर एक रिक्शा खड़ा था । उसने ध्यान से देखकर अनुमान लगाया । रिक्शा खाली था, पर रिक्शावाला कहीं नजर नहीं आया ।

अमर सिपाहियों की आंख से बचने के लिए कुछ देर तक दीवार की आड़ में खड़ा रहा । सिपाही गश्त लगाते आगे बढ़ गये, तो वह छिपता हुआ गीता के घर के बरामदे में पहुंच गया ।

दरवाजा खुला था । उसने गीता का नाम लेकर कई बार पुकारा । अंदर से कोई उत्तर नहीं मिला । धीमे कदमों से वह मुख्य दरवाजे से अंदर गया । कमरे में कोई नहीं था । उसने पुन गीता को आवाज दी । इस बार भी कोई उत्तर नहीं मिला । वह आशंकित हो उठा । उसने पूरा घर छान मारा पर गीता नहीं मिली । उसने देखा आंगन के पीछे वाले कमरे में एक औरत औंधी पड़ी थी । वह तेज कदमों से वहां तक गया । उसके मुंह से आह निकल गयी । मां हिरण्यबाला देवी औंधी पड़ी थीं । कई लकीरें बनाता हुआ रक्त बह-बहकर काला पड़ गया था । उनके पेट और स्तनों में संगीनें चुभोकर उनकी हत्या की गयी थी । वह घुटनों के बल वहीं बैठ गया । हाथ से उस मृतप्राय शरीर का स्पर्श किया। नाड़ी पकड़कर देखा । उसे लगा कि शरीर प्राणहीन नहीं हुआ अभी । उसने मां को आवाज दी, परंतु कोई उत्तर नहीं । वह आंगन में आया । पानी लेने के लिए बाल्टी ली । नल खोला, पर उसमें से एक बूंद भी पानी नहीं निकला । चौरास्ते के पास ट्यूब-वेल से पानी लाकर मां के मुंह पर ठंडे छींटे देने लगा । मां के होंठों पर हल्की-सी थिरकन हुई । होंठ खुलने की चेष्टा में धीरे-धीरे कांपे, फिर सिकुड़कर यथावत् हो गये । अमर ने दोबारा पानी के छींटे दिये । इस बार सिर हिला, होंठ खोलने की कोशिश में अस्फुट शब्द बाहर आते-आते अवश-निरुपाय हो गये। अमर ने मां की अस्त-व्यस्त साड़ी को ठीक किया । एक घूंट पानी होंठों के बीच से मुंह में डाला । पांव की एड़ी हाथ से रगड़कर गर्म करने की कोशिश की । सिर पर हाथ फेरा और टूटते हुए स्वर से दोबारा पुकारा— मां ! मां ! देखो, मैं हूं । अमर ... । परंतु मां के होंठ खुले नहीं । उसे आशंका होने लगी, गीता को पाकिस्तानी रजाकार या सेना के पंजाबी मुसलमान उठा ले गये । उसने पूरे मकान का कोना-कोना खोज

लिया। चारों ओर बिखरे हुए कपड़े, बर्तन के सिवाय कोई नहीं था । पूजा-घर का और भी बुरा हाल था । वहां ईश्वर आसनहीन फर्श पर औंधे मुंह पड़े थे । शंख, धूपदानी, घंटी फूल इत्यादि बेतरतीब बिखरे थे । अमर को पूरी तरह विश्वास हो गया । गीता को सिपाही या रजाकार गुंडे अपनी हवश मिटाने के लिए पकड़कर ले गये हैं । उसकी आंखों में आवेशजनित क्रोध के अंगारे धधकने लगे । बंधी हुई मुट्ठियों का आवेश एक आक्रोशभरी चीख में बदल गया— हत्यारो ! प्रतिहिंसा की आग में जलता हुआ वह तेज कदमों से आकर मां के पास बैठ गया । सोचा, मां को कंधे पर उठाकर अस्पताल ले जाये। उसने मां को दोबारा आवाज दी—'मां ! मां !'

होंठों के बीच से अस्फुट-सी आवाज निकली । आंखें खुलकर बंद हो गयीं, 'ले गये ! सब कुछ छीनकर... ले गये । गी...गीता बेटी !' कहते-कहते उनके स्वर बुझ गये । सिर एक ओर लुढ़क गया । शरीर निष्प्राण हो गया।

अमर ने पास में पड़े चद्दर से उन्हें ढक दिया । घुटनों के बल बैठकर उसने अंतिम प्रणाम किया । दृढ़ आत्मविश्वास और संकल्प लेकर वहां से बाहर निकल पड़ा । बाहर निकलते ही उस पर कई तरफ से गोलियां चलने लगीं । वह बचने की कोशिश करते हुए मकान के अंदर आंगन में आ गया । आंगन में 'सिउली' के पेड़ पर चढ़कर छत पर गया । जिधर से गोलियां चली थी, उसने कंधे से लटकते झोले से तीन बम निकाले और बारी-बारी से उस तरफ फेंक दिया । बम विस्फोट के धुएं की दीवार के बीच वह छत से नीचे कूद गया और साहस सजोकर घिसटते हुए शीघ्रतापूर्वक पास ही खंडहर जैसे मकान में घुस गया । दीवार के पीछे बैठकर उसने कंधे से लटके झोले से डेटॉल तथा पट्टी निकालकर घाव की मरहमपट्टी की । उसने देखा गोली अंदर घुसी नहीं, बल्कि मांस को काटती हुई बाहर निकल गयी है ।

•

वह अपेक्षाकृत धीमी गति से और बड़ी कठिनाई से चल पा रहा था । चलते हुए टखनों में दर्द होता, तो वह कुछ देर के लिए टांगों की मालिश करता। इधर-उधर देख लेता । कहीं कोई पीछा तो नहीं कर रहा है । उसी बीच

गोली चलने की आवाजे आयी । गोली अमर के दायें पाव में जाघ के नीचे लगी थी । रक्त बह निकला ।

फिर भी आहत अवस्था में वह ढाका से काफी दूर चला आया । उसे पूरा विश्वास हो गया कि पुलिस अब उसका पीछा नहीं कर रही है । उसने मन-ही-मन सोचा—सडक पर चलना खतरे से खाली नही । पर यहा भी बैठकर विपत्ति बुलाना ठीक नही । वहा से चल देने को वह उठ खडा हुआ, पर दर्द से कराह उठा । आत्मविश्वास सहेजते हुए, वह शीघ्रतापूर्वक सडक की पटरी छोड़कर, पगडंडी की राह पर चल पडा । पगडडी खेतो के बीच से होती हुई एक बाग तक जाती थी ...।

बाग के पास ही छोटा-सा गाव था । रात के एक बजे थे । चारों ओर सुनसान था । आकाश मे तारे चमक रहे थे । मई का महीना था । फिर भी हवा में ठंडक थी । वह पसीने से तरबतर था । चार-पाच मील तक घिसट-घिसटकर तेज चलने से उसे बेहद थकान लग रही थी । उसने मन-ही-मन सोचा, यदि पकड लिया गया होता तो शायद वे गोलियो से उडा देते या यातना-शिविर मे रखते । टॉर्चर करते । पूछताछ करते । उसका गला प्यास के मारे सूख रहा था । उसे जोरों की भूख भी लगी थी । कंधे पर लटके झोले में पानी की बोतल थी । लेकिन उसमे एक बूंद भी पानी नहीं था । उसने बोतल को मुंह से लगाया । दो-चार बूद पानी उसकी जीभ पर चू गये । उसने बोतल को झोले में वापस रख लिया । रिवाल्वर भी उसी झोले मे था । बोतल रखते हुए उसका हाथ रिवाल्वर पर चला गया । उसने उसे झोले से निकालकर पीछे पैंट की जेब मे खोस लिया । चोट लगी टाग में काफी जोरों का दर्द हो रहा था। उसे महसूस हुआ कि अब और अधिक चल पाना संभव नहीं । कलाई में बधी घड़ी देखी । रात के डेढ बज रहे थे । सवेरा होने मे 3-4 घंटे की देर थी । इस बीच उसे निरापद स्थान की खोज करनी ही होगी । वह उठ खडा हुआ, लेकिन इस प्रकार उठकर खडे होने मे उसके टागो मे भयकर दर्द शुरू हो गया। वह धीरे-धीरे टेढी पगडडी पर चल पडा । दूर कुत्तो के भौंकने की आवाजें सुनाई पड रही थीं । उसने सोचा, जरूर आस-पास कोई गांव है । किंतु उसे डर भी लग रहा था कि अजाने गाव की ओर जाना सुरक्षित नहीं होगा । उसके पांव ठिठक गये । वह कुछेक पलो तक उधेड़बुन में पडा

सोचता रहा । फिर कोई निश्चय किया और आत्मविश्वास मे भरकर चल पडा।

गाव की सीमा तक पहुचकर वह एक पेड के नीचे बैठ गया । उस वक्त रात के चार बजे थे । उसने अनुमान लगाने की कोशिश की कि यह स्थान ढाका के पश्चिम में होना चाहिए या उत्तर-पश्चिम मे । उसने सोचा— गाव वालों को अपना क्या परिचय देगा । इस पर काफी देर तक वह माथापच्ची करता रहा । उसने निर्णय लिया कि वह कुछ नही बतायेगा । यदि कुछ बताना ही पडा तो कहेगा, ढाका विश्वविद्यालय का विद्यार्थी है । सडक-दुर्घटना मे टाग जख्मी हो गयी और वह आश्रय के लिए सडक से पैदल घिसटकर यहा पहुच गया है । लेकिन उसकी बात सच मान ली जायेगी या नहीं, इस बारे मे वह कुछ देर को असमजस से घिर गया । सडक के जिस स्थान से पगडडी शुरू होकर गाव तक आती है, वह स्थान यहा से लगभग 7-8 मील पडेगा और उसी स्थान से ढाका शहर भी लगभग उतना ही पडता है, फिर वह यहा क्यो आ गया ? और अगर कही उसकी तलाशी ली गयी ? पास मे पिस्तौल होने की बात से आशकित हो उठा । वह अजानी विपत्ति की आशका से सहम उठा । उसके झोले मे कुछ दवाइया, फर्स्ट-एड का सामान था । यह विचार आते ही उसे प्रसन्नता हुई कि कह देगा गावों मे दवा बाटने के लिए वह 'सोशल वर्क' की ड्यूटी कर रहा है । इस ख्याल से उसे अदर-ही-अदर राहत मिली । जो भी हो अनिश्चित विपत्ति के शैवाल में तिरकर वह सुरक्षित किनारे तक आ गया था । आकाश मे सवेरे की लालिमा उभरने लगी । सवेरे के पांच बजे थे । उसने देखा दो स्त्रिया उसके समीप से होकर खेतो की ओर जा रही है।

उसने कहा, 'आप बुरा मत मानिएगा, मै ढाका से आ रहा हू, छात्र हू । मेरा पाव सडक-दुर्घटना मे जख्मी हो गया है । मै सोशल-वर्कर हू । इस गाव मे सोशल-वर्क करने आया हू ।'

दोनो औरते ठिठक गयीं ।

उनमे से एक बोली, 'तो हम क्या करे ?'

अमर ने सविनय कहा, 'माफ कीजिएगा, बहन जी, मैं तो यहा किसी को जानता-पहचानता नही । ठहरने की कोई जगह मिल जायेगी ।' उसका

वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि प्रौढ महिला बोली, 'आप स्कूल मे जाकर ठहर जाइए । स्कूल में मास्टर जी प्रबध कर देगे । मास्टर जी का नाम है— अब्दुल रहमान । स्कूल मे ही रहते हैं ।'

दोनो औरते आगे बढ गयी और धान के खेतो के बीच ओझल हो गयी । उसने सोचा सभवत सवेरे के समय गाव की औरते दिशा-मैदाने के लिए निकली हैं या मजदूरिने है । खेतो मे काम करने जा रही हैं । उसका पहला अनुमान सही था । कुछ ही देर बाद दोनो वापस लौट रही थी । सवेरे के धुंधलके मे उसने अनुमान लगाया । पहली औरत जो आगे चल रही थी, बूढी थी तथा पीछे वाली युवती थी । दोनो औरतें उसके पास आकर खडी हो गयी।

अधेड औरत ने आत्मीयता से कहा, 'बेटा, यदि तुम चाहो तो मेरे घर भी ठहर सकते हो ।'

अमर ने अपनी बढी हुई दाढी खुजलाते हुए अनिश्चयात्मक भाव से उत्तर दिया, 'धन्यवाद !' खड़े होने की कोशिश की तो टाग मे भयकर दर्द होने लगा । उसके मुह से 'आह' निकल गयी । बिना कुछ बोले दोनो औरते आगे बढ गयी। वह भी दोनो महिलाओ के पीछे घिसटता हुआ धीरे-धीरे चलने लगा । थोडी देर मे वे गाव की टेढ़ी-मेढ़ी गलियो को पारकर एक टूटे-फूटे कच्चे मकान के द्वार पर पहुच गये । दोनो औरते दरवाजा खोलकर अदर चली गयी । उसने सोचा कि वह भी अदर चला जाये, पर इस तरह औरतो के साथ अंदर जाना उसे अटपटा लगा । वह बाहर ही खडा रहा ।

अब तक सवेरा हो चुका था । गाव मे चहल-पहल बढ गयी थी । उसे आशका होने लगी, गाव वालों की नजर उस पर पडते ही उसके बारे मे पूछेगे। कहा से आये ? क्या काम करते हो ? कहा जाना है ? इत्यादि । इस स्थिति मे वह भला क्या उत्तर देगा ? वह ठीक-ठीक निश्चय कर लेना चाहता था । उसने देखा, दीवारों पर पोस्टर लगे थे । 7, मार्च 1970 बगला देश की स्वाधीनता का दिन । 'शेख मुजीब—जिदाबाद ।' पोस्टर मे ऊपर बड़े-बड़े अक्षरो में नारे लिखे थे और उसी के ठीक नीचे बंगला देश के लोगो के ऊपर उठे हुए हाथों मे टूटी हुई हथकडिया चित्रित की गयी थी । अमर ने मन-ही-मन सोचा—इस गाव मे अवश्य 'मुक्ति वाहिनी' सैनिक होंगे । इस

सोचता रहा । फिर कोई निश्चय किया और आत्मविश्वास मे भरकर चल पडा।

गाव की सीमा तक पहुंचकर वह एक पेड के नीचे बैठ गया । उस वक्त रात के चार बजे थे । उसने अनुमान लगाने की कोशिश की कि यह स्थान ढाका के पश्चिम मे होना चाहिए या उत्तर-पश्चिम मे । उसने सोचा— गाव वालों को अपना क्या परिचय देगा । इस पर काफी देर तक वह माथापच्ची करता रहा । उसने निर्णय लिया कि वह कुछ नही बतायेगा । यदि कुछ बताना ही पडा तो कहेगा, ढाका विश्वविद्यालय का विद्यार्थी है । सडक-दुर्घटना मे टाग जख्मी हो गयी और वह आश्रय के लिए सडक से पैदल घिसटकर यहा पहुंच गया है । लेकिन उसकी बात सच मान ली जायेगी या नहीं, इस बारे मे वह कुछ देर को असमजस से घिर गया । सडक के जिस स्थान से पगडडी शुरू होकर गाव तक आती है, वह स्थान यहा से लगभग 7-8 मील पडेगा और उसी स्थान से ढाका शहर भी लगभग उतना ही पड़ता है, फिर वह यहा क्यो आ गया ? और अगर कहीं उसकी तलाशी ली गयी ? पास मे पिस्तौल होने की बात से आशकित हो उठा । वह अजानी विपत्ति की आशका से सहम उठा । उसके झोले मे कुछ दवाइया, फर्स्ट-एड का सामान था । यह विचार आते ही उसे प्रसन्नता हुई कि कह देगा गावो मे दवा बाटने के लिए वह 'सोशल वर्क' की ड्यूटी कर रहा है । इस ख्याल से उसे अदर-ही-अदर राहत मिली । जो भी हो अनिश्चित विपत्ति के शैवाल मे तिरकर वह सुरक्षित किनारे तक आ गया था । आकाश मे सवेरे की लालिमा उभरने लगी । सवेरे के पाच बजे थे । उसने देखा दो स्त्रिया उसके समीप से होकर खेतों की ओर जा रही हैं।

उसने कहा, 'आप बुरा मत मानिएगा, मै ढाका से आ रहा हू, छात्र हू । मेरा पाव सडक-दुर्घटना मे जख्मी हो गया है । मैं सोशल-वर्कर हू । इस गाव मे सोशल-वर्क करने आया हू ।'

दोनो औरतें ठिठक गयी ।

उनमे से एक बोली, 'तो हम क्या करें ?'

अमर ने सविनय कहा, 'माफ कीजिएगा, बहन जी, मैं तो यहा किसी को जानता-पहचानता नहीं । ठहरने की कोई जगह मिल जायेगी ।' उसका

वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि प्रौढ़ महिला बोली, 'आप स्कूल मे जाकर ठहर जाइए । स्कूल में मास्टर जी प्रबंध कर देगे । मास्टर जी का नाम है— अब्दुल रहमान । स्कूल मे ही रहते है ।'

दोनो औरतें आगे बढ़ गयी और धान के खेतों के बीच ओझल् हो गयी । उसने सोचा संभवतः सवेरे के समय गाव की औरते दिशा-मैदाने के लिए निकली हैं या मजदूरिने है । खेतो मे काम करने जा रही है । उसका पहला अनुमान सही था । कुछ ही देर बाद दोनो वापस लौट रही थी । सवेरे के धुधलके मे उसने अनुमान लगाया । पहली औरत जो आगे चल रही थी, बूढ़ी थी तथा पीछे वाली युवती थी । दोनो औरते उसके पास आकर खड़ी हो गयी।

अधेड़ औरत ने आत्मीयता से कहा, 'बेटा, यदि तुम चाहो तो मेरे घर भी ठहर सकते हो ।'

अमर ने अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी खुजलाते हुए अनिश्चयात्मक भाव से उत्तर दिया, 'धन्यवाद ।' खड़े होने की कोशिश की तो टाग मे भयकर दर्द होने लगा । उसके मुह से 'आह' निकल गयी । बिना कुछ बोले दोनो औरते आगे बढ़ गयी। वह भी दोनो महिलाओ के पीछे घिसटता हुआ धीरे-धीरे चलने लगा । थोड़ी देर मे वे गांव की टेढ़ी-मेढ़ी गलियो को पारकर एक टूटे-फूटे कच्चे मकान के द्वार पर पहुच गये । दोनो औरते दरवाजा खोलकर अदर चली गयी । उसने सोचा कि वह भी अंदर चला जाये, पर इस तरह औरतो के साथ अदर जाना उसे अटपटा लगा । वह बाहर ही खड़ा रहा ।

अब तक सवेरा हो चुका था । गांव मे चहल-पहल बढ़ गयी थी । उसे आशंका होने लगी, गाव वालों की नजर उस पर पड़ते ही उसके बारे मे पूछेगे। कहां से आये ? क्या काम करते हो ? कहा जाना है ? इत्यादि । इस स्थिति मे वह भला क्या उत्तर देगा ? वह ठीक-ठीक निश्चय कर लेना चाहता था । उसने देखा, दीवारों पर पोस्टर लगे थे । 7, मार्च 1970 बगला देश की स्वाधीनता का दिन । 'शेख मुजीब—जिदाबाद ।' पोस्टर में ऊपर बड़े-बड़े अक्षरो मे नारे लिखे थे और उसी के ठीक नीचे बगला देश के लोगों के ऊपर उठे हुए हाथों मे टूटी हुई हथकड़ियां चित्रित की गयी थीं । अमर ने मन-ही-मन सोचा—इस गांव मे अवश्य 'मुक्ति वाहिनी' सैनिक होगे । इस

विचार से उसे राहत मिली ।

अधेड औरत अदर से निकली और उसने उसे अदर आने के लिए कहा, 'आ जाओ, बेटा ।'

अमर को यह सबोधन अच्छा लगा । वह भीतर चला गया । एक चारपाई बिछी थी । महिला ने बैठने के लिए कहा । वह बैठ गया । चोट लगी टाग को हाथ से खीचकर चारपाई पर रखा । ऐसा करते हुए वह दर्द से कराह उठा । अब उसे साफ-साफ दिखाई दे रहा था, चोट के स्थान पर काफी सूजन थी । उसे आशका हुई कि कोई हड्डी जरूर टूटी है या बुरी तरह जख्मी हुई है ।

अब तक महिला चाय लेकर आ गयी थी, 'बेटा, तुम्हारा नाम क्या है ?' चाय का गिलास अमर के हाथों में थमाते हुए पूछा ।

अमर एक क्षण के लिए सोच मे पड गया । क्या वह अपना असली नाम बता दे । उसने मन-ही-मन निश्चय किया, नही, यदि किसी जासूस को पता चल गया कि अमर चौधरी भागकर यहा छिपा है तो... । उसके मुह से निकल गया, 'जी मेरा नाम असगर है— असगर मल्लिक ।'

उसका पाव बुरी तरह दर्द कर रहा था । उसने सोचा पैंट को हटाकर पाव को अच्छी तरह देख ले । पर उसी समय एक लडकी पकौडियो से भरी प्लेट लिये आयी और अचानक ही उसके मुह से निकल पडा, 'आप !'

अमर ने ध्यान से उस लडकी को देखा । वह सईदा थी । ढाका विश्वविद्यालय मे उसके साथ पढने वाली एम. ए की छात्रा । अमर के चेहरे पर प्रसन्नता खिल उठी । सईदा ने तिपाई खीचकर पकौडियो की प्लेट रख दी । एक दूसरी बेत की कुर्सी कमरे के कोने मे रक्खी थी, वह उठा लायी और बैठते हुए आनदोच्छ्वास से भरकर कहा, 'कैसा सयोग है !'

अमर ने पूछा, 'तुम यहा कैसे ? क्या यही तुम्हारा असली घर है ?'

सईदा कुछ देर के लिए मौन रही, फिर बोली, 'पहले आप कुछ खा-पी लीजिए, तब सारी बातें होगी । आप बहुत थके है । आखे लाल हो गयी हैं । लगता है कई रात से सोये नही । आपको तकलीफ हो रही होगी ।' उसने अमर की जख्मी टाग की ओर देखा और अचानक कुर्सी से बिना कुछ बोले उठकर तेज कदमो से अंदर चली गयी । कुछ ही देर में एक कटोरी में पिसी हुई हल्दी का लेप बनाकर ले आयी ।

'लीजिए, भाई जान, इसे लगाइए। इतनी सख्त चोट लगी है। कैसे हुआ यह सब ? क्या कोई एक्सिडेंट ?'

अमर ने सायास मुस्कान के साथ कहा, 'मुक्तिसग्राम का जख्म है। ठीक हो जायेगा।'

सईदा बोली, 'जनाब, मुक्तिसग्राम का जख्म टांगों मे नहीं, बल्कि दिल में होना चाहिए।'

अमर ने सईदा की सराहना करते हुए कहा, 'तुम धन्य हो। हां, आजादी, मुक्ति पाने के रास्ते इतने दुर्गम होते हैं कि बिना बलिदान और रक्त के उसे हासिल नही किया जा सकता। पुलिस के साथ मेरी मुठभेड़ हुई थी, ढाका में कुछ ठहरकर उसने सईदा से पूछा, 'ये तुम्हारी मा है क्या ?'

सईदा ने गभीर होते हुए उत्तर दिया, 'मा से भी बढकर। आश्रयदाता।'

'..आश्रयदाता ? क्या मतलब ?'

'बहुत लबी कहानी है। आपको सुनाकर दुखी नही करना चाहती।' सईदा के चेहरे पर दुख की गहरी रेखाएं खिंच आयीं। अमर के पूछने पर सईदा ने बताया, 'प्रथम बैसाख की छुट्टी पर गाव गयी थी। एक रात पश्चिमी पाकिस्तानी सेना के पिशाच सैनिकों ने गांव मे धावा बोल दिया। बड़े-बूढ़ों को मौत के घाट उतार दिया। गाव मे आग लगा दी। क्वांरी लड़कियों को बदूकों से डरा-धमकाकर एक ट्रक में भर लिया। हमारी आखों के सामने कुछ लड़कियों के साथ बलात्कार किया गया। हम सब कोई 14 लड़कियां थी। तीन दिन बाद टीटागज बदरगाह से एक जहाज द्वारा हमे कराची ले जाया गया। वहां हमारी नकली शादी एक पजाबी मुसलमान से कर दी गयी। निकाह की रात यह पता चला कि आततायी बगला देश की सभी क्वांरी लड़कियों की शादियां पश्चिमी पाकिस्तान के कट्टर मुसलमानों से करने का षड्यंत्र रच रहे हैं, जिससे बगाली सस्कृति पर कट्टर धार्मिक उर्दू भाषी पजाबी पाकिस्तानी सस्कृति हावी हो जाये और बगाली जात सदा के लिए अपनी भाषा और संस्कृति को भूल जाये। यही एक तरीका बच गया था, पूर्वी पाकिस्तान को अलग होने से बचाने का। पाकिस्तान का सैनिक शासक लोगों की भाषा, सस्कृति और व्यक्तिगत आजादी का हनन पाशविकता के बल पर कर रहा था। अंधे राजा के बहरे कानून की शूली पर मै बलिदान कर दी

गयी।' सईदा की हिचकियां बंध गयीं । उसने साडी के पल्ले से आंसू पोंछ लिये।

अमर ने सांत्वना दी, 'लीव योर स्पिरिट । हिम्मत रखो ।'

अंदर से सईदा की आश्रयदाता मासी आ गयी । उन्होंने, सईदा को रोते हुए देखकर पूछा, 'असगर बाबू, क्या तुम दोनों एक-दूसरे को जानते हो?'

अमर चौंक गया । सईदा भी आश्चर्य से अमर की ओर देखने लगी, 'मासी तुम्हें असगर क्यों कह रही हैं ?'

मासी बोली, 'हां । हां । असगर ही तो है । अभी-अभी नाम बताया था ।'

अमर हंस पड़ा । सईदा के दुखी चेहरे पर भी मुस्कान छा गयी ।

सईदा ने कहा, 'मासी, ये महाशय अमर चौधरी हैं, उर्फ असगर या अजगर ।' तीनों की मिली-जुली हंसी का ठहाका गूंज उठा । विषाद के बादल छंट गये ।

अमर ने मासी से क्षमा-याचना करते हुए कहा, 'गलत नाम बताकर रजाकारों के जासूसों से मैं अपने को बचाना चाहता था ।'

मासी ने हंसी के बीच कहा, 'मैं तो पहले ही समझ गयी थी, तुम ऐसे-वैसे नहीं हो ।'

सईदा ने मां से बताया, 'अमर भाई विश्वविद्यालय में 'छात्र संघ' के क्रांतिकारी नेता थे । मैं भी छात्र संघ की सक्रिय सदस्या थी । हम दोनों मिलकर शेख मुजीब के भाषणों के पर्चे बांटते थे । विश्वविद्यालय की दीवारों पर रात में पोस्टर चिपकाते थे । कभी-कभी पुलिस के हाथों में जाने से रोकने के लिए अमर भाई को गर्ल्स होस्टल में छिपा लेती थीं । अमर भाई लड़कियों की ड्रेस पहनकर बिलकुल लड़की लगते थे ।'

छात्र-जीवन के विविध प्रसंग के स्मरण से दोनों रोमांचित हो रहे थे।

उनकी बात-चीत को बीच में काटते हुए मासी ने कहा, 'सईदा बेटी, अब उठकर कुछ नास्ते-वास्ते का भी प्रबंध करो । दिन काफी चढ़ आया है । अमर भूखा होगा ।'

सईदा अंदर चली गयी तो मासी ने अमर से कहा, 'बेटा, तुम थोड़ा विश्राम

कर लो । थके हो ।'

नाश्ता करने के बाद अमर को कब नींद आ गयी, उसे पता भी न चला।

मासी ने आवाज देकर उसे जगाया, 'बेटा, उठो खाना तैयार है ।'

उसकी आख खुली तो देखा सामने मासी मुस्कराती हुई खड़ी है । उन्हीं से कुछ दूर सईदा बेत की कुर्सी पर बैठी कोई पुस्तक पढ रही है । उसने बैग से घड़ी निकालकर देखी । दिन के ग्यारह बज रहे थे । उसे याद हो आया, सवेरे सात बजे उसने नाश्ता लिया था । तीन-चार घटे सो लेने के बाद भी नींद के रुपहले बादल उसकी आखो मे घिरे थे । दिमाग कुछ राहत अनुभव कर रहा था । रात की प्रत्येक घटना उसके दिमाग पर फिर हावी हो गयी । उसे हर बात याद आ रही थी । पाव का दर्द अब कुछ कम था । उसने आहिस्ता-आहिस्ता अपना पाव सिकोड़ा-फैलाया । ऐसा करते हुए उसके घुटनो मे भयकर दर्द हुआ । उसने पाव को सीधा ही रहने दिया । तब तक मासी अंदर जा चुकी थी ।

उसने सईदा से पूछा, 'नहाने-वहाने का कोई प्रबध हो सकता है क्या ?'

सईदा ने किताब बद की । अमर की ओर देखते हुए बोली, 'अमर भाई ! आप नहाइए मत । सो रहे थे, तो मैने आपका माथा छूकर देखा है । आपको बुखार था । देखू तो, अब उतर गया है क्या ?'

सईदा कुर्सी से उठने लगी तो अमर ने खुद ही अपना सिर छूते हुए कहा, 'ना । अब नही है । बस, जरा सिर भारी है । नहाने से शायद कुछ ताजगी आ जायेगी । परेशान मत हो ।'

'...बाहर कुएं पर नहा लीजिए ।' सईदा ने कहा और उठकर अदर से बाल्टी, लोटा, रस्सी ले आयी, 'चलिए, भाई जान । मै आपके नहाने के लिए पानी भर दू ।'

अमर ने अपने बैग से लुंगी-तौलिया निकाला और हंसते हुए कहा, 'अरे, तू मुझे पानी भर देगी, तो मै नहाऊगा ? नहीं, रहने दे : मै स्वयं ही नहा लूंगा!' वह चारपाई से उठ खड़ा हुआ, लेकिन पाव के दर्द से कराह उठा । उसे लगा, इस स्थिति मे उसके लिए चार कदम भी चल पाना कठिन होगा । फिर

भी साहस संजोते हुए वह बाल्टी, रस्सी उठाकर धीरे-धीरे दरवाजा पारकर बाहर आ गया । उसने इधर-उधर देखा । पीछे-पीछे सईदा आ रही थी।

सईदा ने कहा, 'कुआ दाहिनी ओर अहाते में अमरूद और पपीते के पेडो के बीच में है ।'

वह उधर ही चला गया । आकाश साफ था । दिन की धूप चमक रही थी। कुए पर पहुंचकर उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ, कि झोला उसके कंधे से लटक रहा है । पता नहीं कब उसने लुगी बाहर निकालते हुए या निकालने की सोच के बीच ही उसने झोला कंधे पर टाग लिया था । वैसे भी झोले मे था ही क्या ? पायजामा, लुगी, कुर्त्ता, साबुन, दाढ़ी बनाने का सामान, डिटाल, लाल दवा, बैड एड डायरी और अखबार में छुपाकर रखी हुई पिस्तौल । दवाइयो का छोटा-सा कार्टन । कार्टन मे कारतूस बस, यही सब । झोला अपने साथ देखकर उसे अच्छा लगा । पता नही मासी या सईदा सामान को छूकर देखती हों ? सभव है सोते हुए सईदा ने जब उसका माथा छुआ था, तभी झोले की निगरानी भी की हो फिर सोचा, नही वह ऐसा नही कर सकती । उसने सभी आशकाओ को दिमाग से निकाल दिया । उसे लगा आदमी का दिमाग आपत्- स्थिति मे सशय और अनिश्चय के भाव से भरा हुआ होता है । आत्मीय भी पराये लगते है । इस विपत्ति मे सईदा और मासी ईश्वर की आश्चर्यजनक सहायता के रूप मे उसे अचानक मिल गये थे ।

उसने बाल्टी में रस्सी बाधी । गाठें देना उसे आता नहीं था । कई प्रकार से गाठे लगायी और जब निश्चय कर लिया कि बाल्टी कुए में खुलकर गिरेगी नही, तभी उसने एक हाथ से रस्सी को मजबूती के साथ पकडते हुए दूसरे हाथ से बाल्टी कुए मे डाल दी । पानी काफी नीचे था । उसने रस्सी ऊपर-नीचे की, जिससे बाल्टी पानी मे डूब सके ।

सईदा दरवाजे पर खडी-खडी अमर को कौतुक भरी आखों से देखकर हस रही थी । उसे अमर की किंकर्त्तव्यविमूढता पर दया आ रही थी । उसने सोचा कि वह कुए पर चली जाये और पानी भर दे । लेकिन वह नही गयी । उसने सोचा मुसीबत मे आदमी को अधिक स्वावलंबी बनना चाहिए । अपना काम अपने आप करने से हर मुसीबत से निस्तार मिलता है । मुसीबत में जो दूसरो

पर बोझ बनते है, सहारे के लिए हाथ-पाव मारते है, उन्हे मुसीबत कभी नही छोडती, बल्कि वे एक मुसीबत से दूसरी मे फसते चले जाते है ।

सईदा दरवाजे पर और अधिक देर तक खडी [illegible] सकी । वह अंदर रसोईघर मे चली आयी । मासी मछली तल रही थी । वह बरतन सजाने लगी।

मा ने पूछा, 'बेटी, अमर ने स्नान कर लिया क्या' ?

सईदा ने हसते हुए कहा, 'अमर भैया बाल्टी-रस्सी लेकर कुए से युद्ध कर रहे हैं । जीत जायेगे, तभी पानी मिलेगा और स्नान कर सकेंगे महाशय।'

मासी ने सईदा को झिडक दिया, 'बेटी, तू ही उसके लिए पानी भर देती । बेचारे का पाव जख्मी है । भला बाल्टी कैसे भर सकेगा । ले, तू रोटिया बना, मै देखती हू ।'

सईदा मासी की बाहे पकडकर रोकते हुए बोली, 'मासी, कुछ तो सीखने दो अमर भैया को । गाव के जीवन से परिचित होने दो । यदि एक बहादुर क्रातिकारी दो-चार बाल्टी पानी अपने नहाने के लिए नही भर सकता, तो वह बंगलादेश के मुक्तिसंग्राम मे पंजाबी सिपाहियो से कैसे लडेगा ?'

मासी सईदा के चेहरे की ओर देखकर मुस्करा उठीं । उन्हें लगा कि इसी आत्मविश्वास के बल पर वह कराची के खूखार गुडो के चगुल से बच सकी थी । मासी रोटिया बनाने मे लगी । सईदा अमर के लिए खाने की थाली सजाने लगी।

कुछ ही देर में अमर ने नहा लिया और कपडे बदलकर आ गया । सफेद पायजामा, मलमल का कुर्ता उस पर फब रहा था ।

सईदा ने उसे देखकर कहा, 'अमर भाई, आज तो आप चमक रहे हैं।'

दालान के कोने मे एक पुरानी तिपाई पडी थी, उठा लायी । बेत की कुर्सी के सामने रख दिया । अंदर से परोसी थाली लाकर तिपाई पर रखते हुए बोली, 'अमर भाई, खाना लग गया है । पर, हां, यह छोटा-सा गाव है । टेबल-चेयर की जगह बस, यह बेत की कुर्सी और टूटी हुई तिपाई है ।'

अमर कुर्सी पर बैठ गया । हसते हुए बोला, 'यही यहा उत्तम है ।' फिर

खाना खाते हुए बोला, 'इतना बढ़िया खाना खाकर भला कौन नहीं भाग्यशाली होगा ? यह सब तूने हीं बनाया है न ?'

सईदा अमर के बारे में सोच रही थी । वह चौंककर बोली, 'मैंने और मासी ने मिलकर बनाया है ।'

तभी मासी पुलाव की प्लेट लेकर बाहर आयी । पुलाव की प्लेट तिपाई पर रखते हुए बोली, 'क्यों बेटे, खाना पसद नहीं आया, क्या ?'

अमर ने उत्तर दिया, 'नहीं मासी, खाना बहुत अच्छा बना है । बहुत दिनों बाद इतना बढ़िया खाना मिला ।'

मासी ने उसे झिड़की दी, 'तुम मर्दों की आदत ही औरतों की झूठी प्रशंसा करने की होती है ।'

अमर झेंप गया । वह सिर नीचे करके खाने लगा । कुछ देर के लिए खामोशी छा गयी ।

मासी ने ही इस खामोशी को तोड़ा । उन्होंने सईदा से कहा, 'बेटी, मुर्गियों को चारा दे दे और हां, अंडो को लाकर बास्केट में रख देना ।'

सईदा उठकर दरवाजे के सामने 'मुर्गी हट्टा' की ओर चली गयी ।

मासी ने अमर से कहा, 'बेचारी तकदीर की मारी है । इतनी सुदर, सुशील लड़की बेसहारा हो गयी । ईश्वर की कृपा है कि उन जालिमों के अत्याचार से बच गयी ।'

अमर से उत्सुकतावश पूछा, 'मासी, यदि बुरा न मानो तो सईदा के बारे में सारी बातें मुझे बता दो । विश्वास करो, जो कुछ भी बताओगी, उसे गोपन ही रखूंगा ।'

मासी अनिच्छापूर्वक बोली, 'बेटे, तू तो सईदा को बहुत दिनों से जानता है। तुम्हारे साथ पढ़ती थी । उसी से पूछ लेना । मैं उसके जीवन की घटनाओं से बहुत दुखी रहती हूं । इस जन्म में मैं इस दुख से छुटकारा नहीं पा सकूंगी । सईदा मेरी अपनी संतान की तरह है । अब तो अपनी संतान से भी बढ़कर उससे मुझे मुहब्बत है । वह भी मुझे बहुत प्यार करती है । अब इस दुनिया में न तो मेरा कोई रह गया है और न सईदा का ।' मासी ने गहरी निश्वास छोड़ी । अमर की थाली में मछली का शोरवा [illegible] 'बेटे [illegible] में सकोच नहीं करना चाहिए । मेरे ताउ

जीवन में वह मात खाता ।' दु:ख के बोझ से भरी मासी के आत्मीय स्वर से ममता प्रस्फुटित हो रही थी । शोरबा देने के बाद मछली के दो टुकडे अमर के मना करने पर भी थाली में डालते हुए बोली, 'खा ले, बेटे, और भी हैं । यह मत सोच कि हमें भूखा रहना पडेगा । कल गाव के तालाब मे मछलिया पकडी गयी थी । मेरे हिस्से मे चार किलो आयी । कई दिनों से सईदा का मन बहुत भारी था । दिन भर बिस्तर पर पडी रहती है । सोती रहती है या रोती रहती है । उसे जब भी रोना आता है तो वह बिस्तर मे अपना मुह छिपाकर लेटी रहती है । समझाने पर भी नहीं उठती । मछलिया मैंने घडे मे पानी भरकर छोड दी थी और आज तुम अच्छे समय पर आ गये थे । मछलिया तुम्हारे भाग्य मे लिखी थी ।

सईदा अब तक मुर्गियों का दाना देकर लौट आयी थी । उसने आते ही बताया कि मुर्गे ने कई मुर्गियो को मुह से नोचकर घायल कर दिया है ।

मासी ने कहा, 'इस मुए मुर्गे को कल से अलग रखना ।'

सईदा का मन हुआ कि कह दे, मुर्गियो से अलग रहकर कही मर न जाये । पर कुछ बोली नही । उसने सोचा कही मासी और अमर मिलकर उसकी हंसी न उडायें ।

अब तक अमर खाकर उठ चुका था ।

मासी ने कहा कि वह आगन मे जाकर हाथ धो ले । सईदा लोटे मे पानी लेकर उसका हाथ धुलवाने लगी । बहुत करीब से अमर ने देखा सईदा के हाथ बहुत सुदर है । उसकी दृष्टि सईदा के चेहरे पर जा टिकी । उसने मन-ही-मन अनुमान लगाया कि वह 22 साल से अधिक की नहीं है ।

उसने पूछा, 'तेरी उमर क्या हो गयी ?'

सईदा ने हंसते हुए प्रश्न किया, 'अमर भाई, कही मेरी शादी की बात-वात चलाने का इरादा है क्या ? अभी दो ही साल तो हुए, हम साथ-साथ पढ़ते थे । एम ए. में थी तो बीस की और अब क्या उम्र होगी भला । आप ही बताइए !'

अमर ने कहा, 'बाईस ।'

'ना, ना, एकदम झूठ...' सईदा बीच मे चहक उठी । फिर सहज गभीरता चेहरे पर घिर आयी । उसी गभीरता के आवरण मे कहा, 'अब मेरी कोई उम्र

नहीं । कोई उम्मीद नहीं !' कुछ क्षणों का मौन दोनों के बीच छाया रहा।

सईदा बोली, 'अमर भाईजान, आप तो मेरी उम्र पर आ गये । लड़कियों की उम्र पूछना क्या अच्छी बात है ?'

अमर हंस पड़ा । हंसते-हंसते ही बोला, 'उम्र की बात उम्र वाले ही करते हैं !'

दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े । हाथ धोकर अमर जाकर बिस्तर पर बैठ गया । उसने आज अधिक खा लिया था । वह लेट गया । उसने दोनों टांगें फैला लीं । दर्द कुछ कम था । उसने दाहिनी टांग को फैलाया, सिकोड़ा और दोबार-तिबारा यही क्रम दोहराया । उसने कॉलेज के दिनों में ही स्पोर्ट्स-टीचर से सीखा था—चोट लगने पर उस खास जगह को अक्सर हिलाते-डुलाते रहना चाहिए । उससे चोट के ठीक होने में सहायता मिलती है । उसने तकिये को सिर के नीचे रख लिया और सीधे लेटकर सोचने लगा— अब क्या करना है। उसे ख्याल आया कि जैसोर में जियाउर रहमान मुक्तिवाहिनी के कैप्टन हैं। वे भी एम. ए. में उसके साथ पढ़ते थे । उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि यहां से उन्हीं के पास वह चला जाय । परंतु जैसोर जाना खतरे से खाली नहीं। चारों ओर पश्चिमी पाकिस्तानी जासूस घूम रहे हैं । रजाकारों के साथ मिलकर बंगलादेश की स्वतंत्रता के लिए समर्थन देने वालों को जड़ से मिटाया जा रहा है । गोलियां मार दिये जाने की सजाएं दी जा रही हैं । इस बात से अमर का मन खिन्न हो उठा । बंगलादेश की सोने की मिट्टी हत्या, खून और अत्याचार के कीचड़ से सनकर मलिन हो गयी है । बंगाली संस्कृति, भाषा-साहित्य, बंगाली सभ्यता को पंजाबी मुसलमानों ने जड़ से उखाड़ देने की कसम खा ली है । भारत से जो सहायता मिल रही है, क्या उसके बल पर यहां की जनता टिक सकेगी ? अब हमें अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष के लिए व्यापक पैमाने पर एकबद्ध होकर संघर्ष करना होगा, तभी विजय संभव है । उसने देखा बगल वाली खिड़की से मध्याह्न के बाद की धूप छनकर उसके कंधे पर भविष्य के उजाले के रूप में आशीष दे रही है ।

उस वक्त दिन के तीन बजे थे । सईदा पता नहीं कब आकर उसके सिरहाने खड़ी हो गयी थी । अमर को इसका आभास ही नहीं हुआ ।

सईदा ने अमर से पूछा, 'अमर भाई, दिवा-स्वप्न देख रहे हैं क्या ?' अमर को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सईदा अब तक उसके पास ही खड़ी उसके मौन एकालाप को महसूस रही थी ।

उसने सईदा से बैठ जाने के लिए कहा ।

वह बैठते हुए बोली, 'अमर भाई, यहां की स्थिति बहुत भयानक है । विपत्ति की सीमा नही । चारों ओर हत्या, लूट-मार, औरतो पर अत्याचार । आखिर यह कब तक चलता रहेगा ?'

अमर ने कहा, 'इसका अत तभी होगा, जब अपनी भाषा और सस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए हमारे अदर ताकत आयेगी और हम एकजुट होकर संघर्ष करेंगे । दासता, शोषण, अत्याचार से मुक्ति के लिए, सघर्ष के अतिरिक्त हमारे पास और कोई दूसरा विकल्प नही । जो कुछ भी हो अब हम खुले रास्ते पर निकल आये है ।' अमर के चेहरे पर आक्रोश और आत्मगौरव की मिली-जुली आभा चमकने लगी । सईदा ने कहा, 'अमर भाई, जीवन की जिस विभीषिका के बीच से बचकर अपनी बची-खुची इज्जत लेकर मै लौटी हू, मुझे तो चारों ओर अधेरा-ही-अधेरा दिखाई देता है । समझ मे नही आता, आखिर अपनी इस डगमगाती हुई नैया को किस पार ले जाऊगी । अब अचानक ही आपको यहा, इस सुदूर गाव में देखकर मेरे मन में जीवन के प्रति नया उत्साह दिखाई देने लगा है ।' कहते-कहते उसकी आवाज रुध गयी । आंखें सजल हो उठी।

अमर ने उत्सुकतावश पूछा, 'सईदा, तुम अपने बारे मे कुछ बताओगी नही ? तुम्हारे बारे में सभी कुछ जान लेने की मन मे उत्सुकता बनी हुई है।'

कुछ देर तक गहरा मौन सन्नाटा बुनता रहा ।

सईदा दुखी होते हुए बोली, 'बड़ी लंबी कहानी है, अमर भाई । मेरी जिंदगी में 3 मार्च, 1970 की रात एक अभिशाप बनकर आयी । उस दिन सारे ढाका शहर मे कर्फ्यू लगा दिया गया था । पिता जी आवामी पार्टी की मीटिंग में भाग लेने 'धान मंडी' गये थे । वहा से लौटते समय उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और गोली मारकर हत्या कर दी गयी । उनकी मौत की खबर भी दो दिनों बाद समाचार-पत्रों द्वारा प्राप्त हुई । उसी रात मेरे घर पर लगभग

पचास पश्चिमी पाकिस्तानी सैनिकों ने हमला किया । माँ, दोनों भाइयों, छ साल की छोटी बहन बानू की नृशंस हत्या करने के बाद मुझे उठाकर फौज की गाडी में बिठा लिया । उस पर और भी लडकियां थीं । गाडी में कई फौजी, जो आपस में पंजाबी-उर्दू बोल रहे थे, हमारे साथ छेड़खानी करते रहे । वे भूखे भेडिये की तरह रक्त-पिपासु आंखों से हमारी ओर ताक रहे थे । बीच-बीच में अपने कर्नल के सामने ही मेरे शरीर से खिलवाड करने लगते । मैं चीखू या चिल्लाऊं इसके पहले ही उन्होंने मेरे मुंह पर पट्टियां बांध दी । उनकी कामुकतापूर्ण हरकतों के सामने, उनकी इंसानियत मर गयी थी । वे नागरिक सुरक्षा जैसी नैतिकता या फौजी अनुशासन भी भूल चुके थे । मेरे साथ और भी पांच-छः लडकियां थीं । साठ-सत्तर लडकियां नंगे फर्श पर घायल अवस्था में कराह रही हैं । दर्द से छटपटा रही हैं । बैरक में मेरे ऊपर मनमाना अत्याचार किया गया । उन्होंने सामूहिक रूप से मेरी इज्जत ली । मैं विवश थी । मैंने आत्मघात करने की कोशिश की, परंतु वह भी न कर सकी । दूसरे ही दिन अन्य लडकियों के साथ बंद ट्रक द्वारा हमें टीटागंज भेज दिया गया और एक जहाज में सामान की तरह लाद दिया गया । और भी लडकियां पहले से ही जहाज के डैक पर तथा हॉलनुमा एक कमरे में घायल-कराहती अस्त-व्यस्त पडी थीं । मैंने लडखडाते हुए उठने की कोशिश की । पर उठ नहीं पायी । टांगें सीधी नहीं हो पा रही थीं । सारे शरीर में भयंकर दर्द उठ रहा था । प्यास के मारे गला सूख रहा था । केबिन की गोल खिडकी से उस दिन मैंने नीले आकाश और नीले समुद्र को गले मिलकर रोते देखा था । मेरे जीवन में झेले हुए क्रूर यातना का नीला जहर, मेरी आत्मा, मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग— धमनियों, मस्तिष्क के रेशे-रेशे में ज्वार-भाटा बनकर उमड-घुमड रहा था । लुटा हुआ जीवन लिये कितनी दूर, कहां जा रही थी, कुछ पता नहीं । जिंदगी के अंधेरे तलघर में उन सैकडों अभागी लड़कियों के भाग्य के साथ मेरा भी भाग्य बंध गया था । बस, इतनी-सी सांत्वना मन में थी कि जो उनके साथ होगा, वही मेरे साथ भी होना है । लगभग पंद्रह दिनों की यात्रा के बाद हम कराची पहुंचे । पहुंचने के बाद भी दो दिनों तक केबिन में ही रहना पड़ा । तीसरे दिन डैक पर बीभत्स चेहरों वाले लगभग दो सौ पाकिस्तानी मुसलमान, सैनिकों की देख-रेख में, हमारे ऊपर बोलियां बोलने के लिए जमा थे । जो सबसे ज्यादा बोली बोलता, एक

कैप्टन अपने रजिस्टर में उसका नाम, पता लिखता और हममें से जिसे जहां बोली पर बोली बोली जाती, उसके हवाले कर दिया जाता। यह एक हृदय विदारक दृश्य था।' सईदा के कंठ अवरुद्ध हो गये। उसकी आंखों से आंसुओं की कई बूंदें गिर पड़ी। भावुकता की स्थिति में कुछ देर तक वह सिसकती रही।

अमर ने उठकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे सांत्वना दी। फिर बुझी हुई टूटी आवाज में कहा, 'अमर भाई, आतंक से पीली पड़ी लड़कियां कोई विरोध नहीं कर रही थी। मेरा नंबर शायद आठवां था। हां, आठवां। मेरे ऊपर दो हजार रुपये की बोली बोली गयी। मेरे विरोध करने पर दो सैनिकों ने मुझे उठाकर केबिन से बाहर डैक पर साग-सब्जी के बोरे की तरह पटक दिया। बोली बोलने वाले पंजाबी मुसलमान ने मुझे गोद में उठा लिया। इस पर सैनिकों ने उल्लास में तालियां बजायीं। डैक से लगी सीढ़ी पर से वह मुझे गोद में लिये नीचे उतरने लगा। सीढ़ी काफी लंबी थी। छोटी-छोटी नावें सीढ़ी के नीचे खड़ी थी। मेरे मन में आया कि सब कुछ तो लुट गया, अब यह शरीर भर बचा है, वह भी अपवित्र हो गया। इस अपवित्र, अपमानित और लांछित, तार-तार हुए शरीर के लबादे को भी उतार फेंकूं। सीढ़ियां उतरते हुए वह आदमी मेरे और अपने शरीर के बोझ का संतुलन रख नहीं पा रहा था। एक दूसरा आदमी उसे पीछे से सहारा देता हुआ बार-बार उसे सचेत कर रहा था, 'आहिस्ता-आहिस्ता। संभालकर चलो।' मेरे मन ने पूरी तरह निश्चय कर लिया। अब अपने को समाप्त करने में ही भलाई है। बेची गयी, असम्मानित, लुटी हुई जिंदगी लेकर जीना नहीं चाहती थी। मेरे अंधेरे भविष्य की घुटन, यातनासिक्त असमर्थ आहें मन के कोने-कोने में गूंज रही थी। नहीं, अब और नहीं जीना। इसी निश्चय ने मुझे उस समय जिंदा कर दिया था। पलक झपकते ही उस पंजाबी मुसलमान की बांहों से निकलने के लिए छटपटाने लगी थी। मेरे हाथ-पांव बंधे थे। मैंने मुंह को उठाया। ध्यान से इधर-उधर देखा। पहली बार उसके चेहरे को गौर से देखा था। आह! उसकी खूंखार आंखों में-औरत के जिस्म के प्रति कामुक-कामना की आग धधक रही थी। चेहरे पर एक अजीब-सी ख़ौफनाक क्रूरता थी। तेजी के साथ मैंने सिर को ऊपर उठाया। मुंह उसके गालों तक ले गयी। मुझे याद है, उसकी दाढ़ी दांतों के बीच पकड़कर खूब जोरों से खींचा मैंने और वह सीढ़ियों से

लड़खड़ाया । क्षणभर में हम दोनों नीचे समुद्र के गहरे पानी में गिरे पड़े थे । पानी तक गिरते-गिरते मुझे लगा था मैं अब बचूंगी नहीं । उस क्षण मुझे पूरी तरह विश्वास हो गया था कि अब संसार से हमेशा के लिए अलग हो रही हूं । परंतु जब मेरी आंख खुली तो ईश्वर की भेजी हुई एक दयालु औरत मेरे सिर पर ममता भरा हाथ सहला रही थी । जानते हो अमर, वह औरत कौन है ?

अमर ने सईदा के चेहरे की ओर गहरी सहानुभूति और आत्मीयता से देखा ।

आंसुओं के बीच सईदा कुछ बोल नहीं पा रही थी । उसकी हिचकियां बंध गयीं । अमर जितना ही सांत्वना देता, उतना ही वह बिफर उठती । कुछ देर के बाद आत्मसंयत होते हुए सईदा ने बताया, 'अमर भाई, वह नेक औरत मासी है । आज वे मेरी मां से भी बढ़कर हैं । मैं किन शब्दों में उनकी बड़ाई करूं ? उन्हें धन्यवाद दूं, आभार व्यक्त करूं, मेरे पास शब्द नहीं । वे नहीं होतीं, तो जिस मृत्यु-मरण को मैं अत्याचार से मुक्ति का रास्ता समझती थी, वही मेरे बच जाने पर संभवतः पाप और यातना के घृणास्पद नरक के रूप में होता । बाद में मासी ने ही बताया था कि समुद्र की लहरों में डूबती-तिरती कराची बंदरगाह से 20 मील दूर मैं एक मछलियां पकड़ने वाले मछुआरे को मिली थी । उसने समझा, कोई लाश बही जा रही है । उसे विश्वास नहीं हुआ। अपनी नाव पास ले जाकर देखा तो पाया कि उस लाश में थोड़ी-सी जान बाकी है । उसने मुझे नाव पर लाद लिया और अपने झोंपड़े में ले आया । वहां मुझे नया जीवन मिला । मासी प्रतिदिन उस मछुआरे के यहां मछलियां खरीदने जाती थीं । मछुआरे ने ही मेरे बारे में जब मासी से बताया, तो वे मुझे बुर्का पहनाकर अपने घर ले गयीं । मेरी यातना-कथा सुनकर बोली थीं— 'बेटा, ईश्वर बड़ा दयालु है । मैं तुम्हारे पिता को जानती हूं । अब तू मेरी बेटी बनकर रह ।' मासी भी बंगलादेश की आजादी में अपने एकमात्र लड़के को खो चुकी हैं। उनके पति काफी पहले 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में छंब में मारे गये थे । उन्हें सैनिक पेंशन मिलने लगी । मुझे अपने पास रखकर वे मुसीबत नहीं मोल लेना चाहती थीं । एक दिन उन्होंने कहा—बेटी, चलो अब अपनी जन्म-भूमि चलेंगे । मुंशीगंज के पास शांतिपुर गांव में कुछ

जमीन-जायदाद है। उन्होने बडी मुश्किल से मेरा और अपना पासपोर्ट बनवाया। वहा का घर बेचकर पानी की जहाज से यहा चले आये। हां, एक यातना-शिविर मे बच-बचाकर अब दूसरी यातना-शिविर में आ गयी हू। अब उन तमाम सारी त्रासद घटनाओ को भूल जाना चाहती हूं। परंतु जिदगी के कोमल मन पर क्रूर यातनाओ और अत्याचार ने इतने गहरे दाग लगा दिये कि उन्हें आसुओ से धोना या स्थान-परिवर्तन द्वारा भूल पाना सभव नही लगता। मेरे मन में उन सभी नर-पिशाचो के लिए घृणा, आक्रोश और प्रतिशोध की भावना है। मै महसूस करती हू कि पश्चिमी पाकिस्तानियों ने इस सोने की धरती को यातना-शिविर के रूप में बदल दिया है। मुझे विश्वास है कि बंगलादेश अवश्य एक दिन स्वतन्त्र, सार्वभौम राष्ट्र बनेगा, लेकिन इस आजादी के सग्राम में मुझ जैसी लडकी को जो मूल्य चुकाना पड़ा, क्या वह सब वापस मिल सकेगा?' सईदा कहते-कहते फूट पडी। रोते-रोते हिचकियां बध गयीं। अपने चेहरे को दोनो हाथो के बीच छुपा लिया। अमर के बार-बार सात्वना देने पर भी वह काफी देर तक रोती रही। बहुत दिनो का सहेजा-सभाला भावना का बाध जब टूटता है, तो सात्वना के शब्द बहते हुए जलावेग को और भी तीव्र गतिमय बना देते हैं।

मासी अपने कमरे से निकली। सईदा को रोते देखकर उसे अपनी बाहो मे भर लिया। उसे अपने से चिपकाकर वह सिर पर ममता भरा हाथ फेरने लगीं। पर ऐसा करते हुए वे स्वय भी भावुक हो गयी थी। आखो से आसुओ की धाराए बहने लगी थी। अमर नि शब्द, मौन, बैठा देखता रहा बगलादेश के मुक्तिसग्राम की दो महान बलिदानी आत्माओ को।

रात का भोजन करने के बाद सईदा के साथ मासी बैठकखाने मे आकर बैठ गयी। अमर बिजली के प्रकाश में डायरी में कुछ लिख रहा था।

सईदा ने पूछा, 'भाईजान, लिखने की आदत अभी तक है क्या?'

अमर ने उत्तर दिया, 'समय मिलने पर कुछ लिख लेता हूं।'

सईदा ने जिद् की, 'कुछ सुनाइए न।'

अमर ने टाल दिया। उसका मन सईदा की दु ख भरी जीवनकथा से इतना भर आया था कि कविताएं सुनाने का कोई मूड नही था। उसने अनमने भाव से

कहा, 'नहीं, इस समय कुछ सुना नहीं पाऊंगा ।' पर उसने बताया, 'आजकल कविताओं से अधिक लेख लिख रहा हूं । कई पत्रों में छपे भी हैं, पर सेंसर होने के कारण पूरा छप नहीं पाता । कुछ कविताएं कलकत्ता की पत्र-पत्रिकाओं में छपी हैं। कलकत्ता के लेखकों और कलाकारों ने हमारे मुक्तिसंग्राम को अत्यधिक समर्थन दिया है । भारत और पश्चिम बंगाल ने 'बंगला देश' के मुक्ति संग्राम के लिए जो वैचारिक और राजनीतिक भूमिका निभायी है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है । उसे न तो हम और न ही इतिहास कभी भुला सकता है ।' उसने डायरी बंद कर दी । डायरी और कलम वापस झोले में रखते हुए पूछा, 'यहां आवामी पार्टी का कोई केंद्र है क्या ?'

मासी ने बताया, 'गांव से थोड़ी ही दूर पर सुल्तानगंज बाजार है । वहां आवामी पार्टी का ऑफिस है । कुछ कार्यकर्त्ता इस गांव में भी हैं, लेकिन मैं उन पर विश्वास नहीं करती । हर जगह पाकिस्तानी जासूस भेष बदलकर घूम रहे हैं । अच्छा होगा कि तुम पार्टी ऑफिस को ही विश्वसनीय समझो ।'

अमर ने घड़ी देखी । शाम के 6 बजे थे । पूछा, 'क्या घर में रेडियो है ?'

सईदा ने कहा, 'हां, है । अभी लायी ।' वह एक छोटा-सा ट्रांजिस्टर रेडियो अंदर से ले आयी । स्विच ऑन किया । बाउल गीत आ रहा था । उसने कहा, 'समाचार प्रसारण का समय होने वाला है ।'

बाउल गीत के बाद समाचार आने लगे तो तीनों मौन भाव से सुनने लगे । बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान ने बंगलादेश के लोगों से सरकार को किसी प्रकार का कर न देने का आह्वान किया है । सभी सरकारी कर्मचारियों को निर्देश दिया है कि हर तरह के प्रशासनिक विषयों पर केवल आवामी पार्टी से ही निर्देश प्राप्त करें । ईस्ट बंगाल राइफल के जवानों ने बंगाली प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया है । ढाका के वरिष्ठ न्यायाधीशों ने लैफ्टिनेंट जनरल टिक्का खान को पूर्वी पाकिस्तान के प्रशासक के रूप में शपथ खिलाने से इंकार कर दिया । पूरे बंगलादेश में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' के लिए बंगबंधु ने जनता का आह्वान किया है। तभी गोलियां चलने की आवाजें आने लगीं और समाचार प्रसारित होना बीच में ही बंद हो गया ।

अमर ने आशंका प्रकट की, 'पाकिस्तानी फौजों ने रेडियो स्टेशन पर भी

धावा बोल दिया है ।' उसने आत्मविश्वास से भरकर कहा, 'अब हमारी स्वतंत्रता निश्चित है । उसे कोई रोक नही सकता । गुंडाराज समाप्त होनेवाला है ।' एक नये उत्साह में भरकर वह उठ खडा हुआ । झोला कंधे पे लटकाया । मासी से आज्ञा ली, 'मासी, क्या मे पार्टी के ऑफिस तक जा सकता हूं । जाना जरूरी है । मेरा यहा चुपचाप बैठे रहना देश के हित के लिए ठीक नही । थोडी देर में लौट आऊंगा ।'

मासी बोली, 'बेटा, रास्ता ठीक नहीं । ठहरो, मै भी तुम्हारे साथ चलती हू ।' तभी सईदा ने जिद्द की, 'मासी मैं भी चलूगी ।'

मासी ने उसे रोक दिया, 'ना बेटी' घर पर रह । अदर से अच्छी तरह दरवाजा बंद कर ले । तेरा इस वक्त बाहर जाना ठीक नही ।'

अमर ने मौसी को भी समझाया कि उसे कोई दिक्कत नही होगी । वह अकेला ही चला जायेगा, पर मासी ने उसकी एक भी न सुनी । वे अदर गयीं और झटपट तैयार होकर आ गयी ।

दोनों बाहर आ गये तो सईदा ने दरवाजा बद करते हुए अमर से कहा, 'भाई जान, देर मत लगाना ।' दोनों कुछ दूर चले गये तो उसने अधखुले दरवाजे से चिल्लाकर कहा, 'अमर भाई, टॉर्च तो लेते जाइए ।'

अमर ने कहा, 'मेरे झोले में टॉर्च है ।'

सईदा ने दोबारा सचेत करते हुए कहा, 'जल्दी लौटना ।'

रेशमा बुआ अपने अपमान से तिलमिला उठी थीं । औरत सब कुछ सह सकती है, पर अपना अपमान कभी भी सहन नही कर सकती । और वह भी अपने ही स्वजनों द्वारा किया गया अपमान । उस अपमान का बदला लेने मे उसकी सारी शक्ति एकजुट होकर काम करने लगती है । बदले की आग में भले ही उसका या उसके स्वजनो का सर्वस्व जलकर भस्म हो जाये । बदले से भले ही बाद में उसका अपना ही सब कुछ मिट जाये । प्रतारणा और अपमान—बाघ की ढेर पर खड़ी रेशमा ने पल भर मे अपना रंग बदल लिया । वह चोट खायी नागिन की तरह फुफकार उठी । उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह इस अपमान का बदला अवश्य लेकर रहेगी । मुशीगंज गाव से निकलकर वह सड़क पर आ

गयी । कुछ देर के लिए घने आम-वृक्ष के नीचे बैठ गयी । दो दिन पहले नारायणगंज की अंधेरी जिंदगी से मुक्त होकर जिस आनंद से विह्वल हो उठी थी, आज उसी आनंद को अपमान का काला अजगर डस गया था । उसने सोचा, फिर हैदर के पास वापस जाना क्या ठीक होगा ? हैदर का चेहरा उनके दिमाग मे तैर गया । हाथ मे चाबुक लिये, आखों मे हिंसा और क्रूरता की आग लिये वह पूछेगा । क्यों उसका हुक्म मानने से इंकार कर दिया ? तब... ? तब वह भला क्या उत्तर देगी । वह भय से सिहर गयी । नही...नही,' हैदर कभी माफ नहीं करेगा । हो सकता है, वह यातनाएं दे, मारे, अपमान करे । गालियों और नफरत से दुत्कारे । उस स्थिति मे क्या वह अपमान आज के अपमान से बडा नही ? उसके मन के कोने मे छिपा त्रिया-चरित्र प्रकट हो गया— हैदर को मनाना उनके बाये हाथ का खेल है । एक कामुक, चरित्रहीन, ऐय्याश, धन के लोभी व्यक्ति को औरत अपने त्रिया-चरित्र के जाल मे सहज ही बाध सकती है । जिस लडकी की खोज उसने पूरे अट्ठाईस दिनो तक की थी, वही आज बडी आसानी से मिल गयी थी । एक बार गीता का भयाक्रात चेहरा उसकी आखो के सामने घूम गया । उसकी अपनी ही चचेरी बहन फातिमा के शब्द उसके दिमाग मे आघात करने लगे— मेरी बेटी नही चाहती कि तुम यहां रहो। अपनी कोई दूसरी व्यवस्था कर लो । जुबेदा की दुत्कार ने उसे जैसे चाबुक लगा दिया हो ।

'मामी, तुम यहा क्या करने आयी हो ? जाओ यहा से, निकलो ।'

रेशमा ने अदर-ही-अदर निश्चय किया यह सब उस कलमुही गीता की वजह से हुआ । उस हरामजादी ने ही उन सबके कान भरे है । उनके मुह से निकल गया—'शैतान की लड़की, तुझे इसका मजा जरूर चखाऊंगी।'

आश्विन के दिन थे । सड़क के दोनों ओर धान की हरियाली के बीच नारियल और केले के बागान । गांव, पेडों, झाडियों के झुरमुटों से घिरा हुआ। ढाका और नारायणगंज को जोडने वाले इस राष्ट्रीय मार्ग पर यातायात की बहुतायत रहती है । इस यातायात में फौज की गाडिया, ट्रकें और जीपें ही अधिक चलती है । पूर्वी पाकिस्तान मे आपत्-स्थिति लागू होने के बाद प्राइवेट बसें कम हो गयी थी । दिन के ग्यारह बजे थे । रेशमा को जोरों की भूख लगी थी । उसके दिमाग में फिर फातिमा बीबी खड़ी हो गयी । बड़ी मगरूर औरत

है। नाश्ता या एक प्याला चाय तक के लिए नही पूछा। ऊपर से अपमानित करके निकाल दिया। सूअर की बच्ची को देख लूगी। उसका साहस उठकर अचानक खड़ा हो गया। उसकी आखो मे नयी चमक छा गयी। उसने सोचा—हैदर मेरी जासूसी पर खुश होगा। खुश ही नही होगा, इनाम भी देगा। सच, मैने कितना बडा काम अनजाने ही कर दिखाया। जिस शैतान की बच्ची को खोजने मे हैदर ने अपनी सारी शक्ति लगा दी, वही यहा मिल गयी।

आत्मविश्वास से प्रसन्न होते हुए रेशमा ने गठरी उठायी और बस-स्टॉप की बगल मे झाड-फूस की झोपड़ी मे बनी चाय की दुकान के सामने काठ की बेंच पर जा बैठी। आते समय बस भाड़ा देने के बाद उसके पास, जो पैसे बचे थे, आंचल में बाध लिया था। गाठ खोलकर गिना। कुल आठ रुपये साठ पैसे बचे थे। गिनकर बस-भाड़ा पाच रुपये आंचल में बाध लिया। बाकी तीन रुपये साठ पैसे अलग से रुमाल मे बाध लिया।

दुकान का छोकरा गिलास मे चाय लाकर रेशमा के सामने बेंच पर रख गया। गिलास फूटा था और उसमे से चाय रिस रही थी।

उनकी तेज निगाहो ने यह देख लिया और उस छोकरे पर बरस पडी, 'ऐ छोकरा, देखता नही ? अंधा है क्या ? फूटे गिलास में चाय दे रहा है। ले जा इसे वापस। दूसरी चाय ला और सुन, कुछ खाने को भी। जलेबी और समोसे। कितना क्या ? अरे, क्या मन-दो मन खाऊंगी ? चार समोसे और एक सौ ग्राम जलेबियां ला। चल फूट।'

लड़के ने गिलास नहीं उठाया और अदर चला गया तो रेशमा गुस्से से चिल्ला उठी, 'अरे, यह छोकरा अंधा ही नही, बहरा भी है। मै क्या कह रही हू, सुनता ही नही। या अल्लाह ! कैसा जमाना आया है। इस देश में सभी का दिमाग फिर गया है।'

उसकी इस बात पर दुकान के अंदर बैठे दो युवक तथा दुकान का मालिक हंस पड़े। छोकरा भी मुस्करा उठा।

लड़के ने चार समोसे और जलेबियां एक केले के पत्ते मे रखकर रेशमा बुआ के सामने बेंच पर रख दिया। अब तक फूटे गिलास की आधी चाय बह चुकी थी।

रेशमा उस लड़के पर फिर बरस पड़ी, 'क्यों रे ! तू सुनता नही ? ले जा

यह चाय । दूसरी ले आ । देख, सारी चाय बह गयी ।'

लडके ने अपनी हंसी बटोरते हुए कहा, 'गिलास तो भरा था । आधा कैसे हो गया ।'

इस पर रेशमा गुस्से से फुफकारने लगी, 'मैं पी गयी ? हा, हा, मैं पी गयी । कैसा लडका है । मजाक करता है । जबान चलाता है ।'

लडके ने गिलास उठाते हुए बुढिया की बात दुहरा दी, 'सबका दिमाग फिर गया है ।' और हंस पडा ।

रेशमा इस चोट से बचने के लिए समोसे खाने लगी । समोसे गर्म थे । मुह जलने लगा । बाहर की हवा से मुह में लिये गर्म समोसे ठंडा करने की नीयत से उन्होने मुह खोल दिया । लडका अभी तक रेशमा की ओर देख रहा था । होटल के लोग रेशमा की इस हरकत पर खिलखिला पडे । रेशमा ने मुंह बंद कर लिया । धीरे-धीरे गर्म समोसे खाने लगी ।

मुशीगज से नारायणगज जानेवाली बस आ गयी तो मासी ने शीघ्रता मे बचे हुए समोसे आचल मे बाध लिये । चिल्लाते हुए बोली, 'छोकरा' चाय रहने दे । समोसे के पैसे ले ले । जरा जल्दी । ओ भैया कंडक्टर, जरा रोके रहना । इस बूढी को लेते चलो ।'

लडका चाय बना रहा था । उससे पैसे लेने आया नहीं । वह खुद ही चलकर दुकान मालिक के पास गयी और पैसे देते हुए बोली, 'कैसा बदमाश छोकरा है । न सुनता है, न देखता है ।' फिर लडके की ओर आग्नेय नेत्रों से देखा । काउटर पर पैसे देकर भागती हुई जाकर बस पर चढ गयी । बस की खिडकी से उसने चाय की दुकान और छोकरे को घृणापूर्वक देखा। अब तक लडका दुकान के बाहर आकर खडा हो गया था । बस छूटने लगी, तो उसने हाथ में खाली गिलास ऊपर उठाते हुए जीभ दिखाकर चिल्लाया, 'चाय गर्म । चाय गर्म । चाय गर्म ।'

पाकिस्तानी सेना द्वारा असंख्य बगाली जनता पर भयानक अत्याचार की निंदा सारी दुनिया के नेता और समाचार पत्रों ने की । आत्म रक्षार्थ भागते हुए लाखों शरणार्थियों की दर्दभरी कहानियों से प्रतिदिन अखबार भरे रहते । बंगबंधु

द्वारा घोषित बगला देश की पूर्ण स्वाधीनता को लेकर पाकिस्तानी शासक अत्यधिक चिंतित थे । पाकिस्तान ने अपनी जल, थल और वायुसेना का अधिक-से-अधिक जमाव पूर्वी पाकिस्तान मे कर लिया । पाकिस्तानी सेना और मुक्ति सेना के बीच घमासान लडाई प्रारभ हो गयी । शहर से लेकर गांव-गाव स्वतत्र बगला देश के मुक्ति सग्राम के लिए आम जनता एकजुट हो गयी ।

मुंशीगज से आठ मील दूर । 2 मार्च की रात आवामीलीग की विशाल जनसभा में अमर जब पहुंचा तो उसे मच पर बैठे कई नेताओ ने पहचान लिया। शेख मसूर अली, मौलाना रिजवी, स्वईदुलहक चौधरी, ढाका विश्वविद्यालय में उसके प्रोफेसर रह चुके थे । सभी ने उसका समादर करके मंच पर बीच में बैठाया ।

मौलाना रिजवी ने उपस्थित जन-समूह से अमर का परिचय कराते हुए कहा, 'अमर एक देशभक्त, क्रातिकारी युवक है, जिसने बंगलादेश के मुक्ति सग्राम के लिए सब कुछ समर्पित कर दिया है । इस युवक को अपने देश के लिए कितना बड़ा बलिदान देना पडा, उसे बगाली जनता कभी नही भूलेगी।' कहते-कहते मौलाना रिजवी का गला कापने लगा । शब्द लडखडाने लगे । रुंधे हुए कंठ से ही उन्होने रुक-रुककर कहा था, 'भाइयो! यह जो अमर चौधरी आज की इस महत्त्वपूर्ण जनसभा में अचानक ही उपस्थित हुआ है, उसे पाकर हम सभी को नया साहस, नया बल मिला है । देश की जनता समय के साथ सब कुछ भूल जाती है, परतु एक बात कभी नही भूलती । वह है देशभक्तों और क्रातिकारियो का देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान । क्रातिकारियो का रक्त-गौरव हर वसत में टेसू के लाल-लाल फूलो के रूप मे फूलता है । ग्रीष्म मे क्रातिकारी का आकुल मन—झझावात के रूप मे, वर्षा में नया अकुर बनकर और शिशिर मे रंग-बिरंगे फूलो के वेश मे दिखाई देता है। स्वतत्रता के लिए बलिदान होने वाले क्रातिकारी का रक्त देश के निर्माण और उत्थान की आधारशिला होती है । अमर चौधरी के भरे-पूरे परिवार की आहुति, स्वतत्र बगला देश कभी नहीं भूलेगा ।'

शांतनुदास ने खडे होकर नारा लगाया—अमर चौधरी—जिदाबाद!' स्वतंत्र बगलादेश—जिदाबाद ! वंगबंधु—जिंदाबाद ।'

उपस्थित जनसमूह ने नारे को दोहराया । मौलाना रिजवी सभा के सभापति थे । उन्होने अमर से कुछ बोलने के लिए कहा । अमर ने पीछे मुडकर देखा, मासी की आंखों से आसू बह रहे थे ।

सजल नेत्रो को आंचल में छुपाते हुए रुंधे हुए कंठ से अस्फुट शब्द सुनाई दिये थे —'अल्लाह तुझे सलामत रक्खे, बेटा । मुझे नहीं मालूम था कि तू इस मिट्टी का इतना बडा लाल है ।'

अमर माइक के सामने जा खडा हुआ । उपस्थित जनता ने खडे होकर तालिया बजायीं । तालियों की गडगडाहट से वातावरण दो मिनट तक गूंजता रहा । वह जब तक बोलता रहा, सभा में खामोशी छायी रही । सभी तन्मय होकर उसके भाषण का एक-एक शब्द मौन भाव से सुन रहे थे। बीच-बीच में तालियों की गडगडाहट से आधी रात की गहरी निस्तब्धता टूट जाती और उसके भाषण के शब्दो की प्रतिध्वनियां अधेरे का सीना चीरते हुए दूर-दूर तक प्रतिध्वनित होती रही । 'बगला देश की स्वाधीनता सुनिश्चित है । स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । बंगलादेश की पवित्र सोने की मिट्टी पर यातना, अत्याचार, रक्तपात और क्रूरता नहीं चल सकती । बंगला देश की महान जनता अपनी भाषा और सस्कृति की रक्षा करना जानती है । हमें अपने लक्ष्य से बर्बरता का दानव परास्त नही कर सकता । जिन्होने बीस वर्षों तक सिर्फ हमारा शोषण किया, हमारी धरती की पैदावार, उसकी धन-सपदा को हडपते रहे,' हमें आर्थिक रूप से कमजोर, अपग बनाकर हम पर शासन करते रहे, आज तक उनकी राजनीति, हमारी आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक स्वतन्त्रता का हनन करती रही । चुनावों में आवामी लीग की विजय को वे बगाली विजय कहते हैं । हमारे मानवीय अधिकारों को हमसे छीन रहे हैं । बार-बार वादे कर रहे है कि असेंबली की मीटिंग बुलायेंगे । परतु हर बार वे अपने पैंतरे बदल रहे हैं । क्योंकि उनके मन में पूर्व निर्धारित छल है। वे नहीं चाहते है कि बगबंधु पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने । बंधुओ, अब समय आ गया है कि उनकी हर साजिश, हर षड्यन्त्र के ऊपर से हम पर्दा हटा दें और उन्हें दिखा दें कि स्वतंत्र बंगलादेश की नियति हमसे कोई शक्ति छीन नही सकती । हमारी एकता को तोड नहीं सकती ।'

जोरों से तालियों की गडगडाहट हुई और उसी के साथ अचानक गोलिया

चलने लगी। भगदड़ मच गयी। मंच पर बैठे नेता शीघ्रतापूर्वक नीचे उतरकर आत्मरक्षार्थ इधर-उधर भागने लगे। अमर मंच से नहीं उतरा। वह लोगों को शांत कर रहा था। तभी तेज रोशनी से उसकी आखें मिचमिचाने लगीं।

मासी किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी अमर का हाथ पकड़कर नीचे ले जाने की कोशिश में गिरते-गिरते बची। उनकी घबराई हुई आवाज उस कोलाहल में पर-कटे पक्षी की तरह फड़फड़ाने लगी, 'बेटे अमर! तू समझता क्यों नहीं? पाकिस्तानी फौज निहत्थे लोगों को मार रही है। यहां से भाग चल।' वे अमर के सामने आकर अमर को पीछे ले जाने के लिए ढकेलने लगीं। तभी गोली आकर उनकी पीठ में लगी। उनके मुंह से निकला, 'या अल्लाह! जालिमों ने मुझे भी नहीं छोड़ा। बेटे अमर, सईदा का ख्याल...' कहते-कहते वे अचेत होकर गिर पड़ीं। अमर ने मासी को दोनों हाथों से सहारा देकर उठाया। मंच की सीढ़ियां उतरकर समीप ही कार्यकर्त्ताओं के लिए बनाये गये कैंप में ले जाकर फर्श पर लिटा दिया। पीठ से रक्त बह रहा था। बहुत सारा रक्त अमर के कपड़ों पर लग गया। मौलाना रिजवी और पंकजदास घबराये हुए खड़े थे। कुछ कार्यकर्त्ता घायल होकर कराह रहे थे। अभी भी गोलियां चल रही थीं।

मौलाना रिजवी ने अमर के करीब आकर उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'बेटे, इस माहौल में हम कुछ नहीं कर सकते। गोलियों के सामने जनता की आवाज को कुचला जा रहा है। न जाने कितने बेगुनाहों का खून बहाया जा रहा है। या खुदा। तू मेहरबान है। बंगलादेश की रक्षा कर।' वे भावुकता में रोने लगे।

मासी नीचे पड़ी कराह रही थी। गोली पीठ से होती हुई उनके कलेजे तक धंस गयी थी।

अमर ने घुटने के बल मासी के पास बैठते हुए कहा, 'प्यारी मासी, इस सबका दोष मुझ पर ही है। मेरे कारण ही तुम्हें यहां आना पड़ा। मैं सईदा को क्या जवाब दूंगा?'

मां ने आंखें खोलकर अमर के असहाय, दुखी चेहरे की ओर देखा। कातर-स्वर में बोलीं, 'बेटा, आज मैं बहुत खुश हूं। इस देश के लिए मेरी

कुर्बानी मुझे शांति देगी । तुम जाओ, बेटे । अपना काम करो । सईदा राह देखती होगी । उसे मेरी आशीष देना । तुम लोग बंगलादेश की आजादी के लिए कभी हार मत मानना । अच्छा, बेटा,.. अल. विदा ।' मासी का चेहरा बुझ गया ।

अमर ने घुटनों के बल बैठकर कुछ क्षण के लिए मासी की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की । मौलाना रिजवी तथा दूसरे नेताओं ने भी ऐसा किया । लाश को आवामी पार्टी के झंडे से ढक दिया गया।

अमर ने मासी की लाश छूकर प्रतिज्ञा की—'मासी, तुम्हारी मौत का बदला एक-एक से लूंगा ।' वह तेजी के साथ कैंप से बाहर निकल गया।

कैंप की तरफ पाकिस्तानी सेना का एक दस्ता मशीनगनों से गोलियां बरसाता चला आ रहा था । अमर पास ही बरगद के पेड़ के पीछे छुप गया । बैग से अपनी पिस्तौल निकालकर उसमें गोलियां भरीं । उसने देखा 10-12 सैनिक कैंप को चारों ओर से घेरते धीरे-धीरे बढ़ रहे थे । तभी कैंप से एक-एक करके तीन बम उन सैनिकों की ओर फेंके गये । जबरदस्त धमाका हुआ । धुएं की दीवार घिर गयी । अमर ने उसी क्षण गोलियां दागनी शुरू कर दीं । एक-दो-तीन-चार कुल चार सैनिक धराशायी हो गये। बाकी मैदान में पेड़ों की ओट से मशीनगनों से गोलियां चलाने लगे । कैंप के अंदर से ईंट-पत्थर, जो भी हाथ लगा सैनिकों की ओर फेंके जाने लगे । अमर को खुशी हुई । अब ये बचे-खुचे सैनिक बच नहीं पायेंगे । उसने निशाना साधकर गोलियां चलायीं । उसने देखा दो सैनिक उसकी ओर बढ़े चले आ रहे थे । उसने निशाना साधकर गोली चलायी एक के सीने में गोली लगी । वह गिर पड़ा । अमर की टांग में अभी भी दर्द हो रहा था । जमीन पर घिसट-घिसटकर तीन सैनिक उसकी ओर फायर करते हुए बढ़ रहे थे । उसके पास अब अधिक गोलियां नहीं बची थीं । उन गोलियों से कुछ भी नहीं हो सकता था । सैनिकों के पास आधुनिकतम अमरीकी और चीनी मशीनगनें थीं । उसने पेड़ के नीचे बैठकर निशाना साधा । गोली, पंजाबी सैनिक का सिर छेदती हुई निकल गयी । एक चीख उसके मुंह से निकली—'या खुदा !' और वहीं चित्त हो गया । उसके पीछे बढ़ते हुए दो सैनिकों ने लेटकर मशीनगनों से फायर किये । अमर से करीब दस गज की दूरी पर थे । अमर अपनी टांग में उठ रहे दर्द की चिंता न करते हुए

क्रोधित शेर की तरह छलांग लगाकर उन दोनों सिपाहियों पर टूट पड़ा । उस मल्लयुद्ध में अमर ने दोनों को मार गिराया और उन सिपाहियों की मशीनगनें छीन ली । लगभग तीस सैनिक आहत अवस्था मे कराह रहे थे और इससे अधिक निहत हो चुके थे । वह शीघ्रतापूर्वक कैंप के अदर चला गया। शातनुदास, मौलाना रिजवी तथा दूसरे नेता और कार्यकर्त्ता अमर को बधाइयां देने लगे । अमर ने कंधे से टंगी मशीनगनें उन सबके बीच बाटकर उन्हें हिदायत दी कि वे शीघ्र ही यहा से जाकर सुरक्षित स्थान मे छिप जाये । फौज इसका बदला लेने तुरंत यहां आ पहुंचेगी । चलते हुए उसने मासी की लाश की तरफ सजल नेत्रों से देखा । नतमस्तक होकर अतिम प्रणाम किया और सभी के साथ कैंप से बाहर निकलकर धान के खेतों के बीच ओझल हो गया ।

रेशमा बेगमपुर पहुची तो रात के आठ बज गये थे । हवेली के दरवाजे पर हल्की रोशनी मे बिहारी और अहमद फर्श पर बिछी चटाई पर बैठे ताश की बाजी में उलझे थे ।

रेशमा ने सहमे और भयातुर कदमों से धीरे-धीरे आगे बढ़कर आवाज दी, 'बेटा अहमद । मै आ गयी ।'

उसकी आवाज से बिहारी और अहमद दोनों चौंक गये । अहमद ने अपनी गर्दन बायीं तरफ घुमाकर देखा। रेशमा बुआ गठरी सिर पर लिये खड़ी थी ।

अहमद ने बिहारी को आख मारी । दबी जुबान में बोला, 'चुड़ैल पीछा नहीं छोड़ेगी ।' फिर उसे हैदर की बात याद हो आयी, 'जब भी बूढ़ी खूसट वापस आये, उसके हाथ-पाव बाधकर कमरे मे डाल देना ।'

उसने बिहारी से कहा, 'उस्ताद का हुक्म है कि इसे... ।'

'हां, हा, याद है..' बिहारी कुछ सोचते हुए बीच मे बोला।

एक झटके के साथ दोनों उठे । अपनी ओर अहमद और बिहारी को बढ़ते देखकर रेशमा भय से थर-थर कापने लगी । उसके मुंह से सायास निकल पड़ा, 'बेटे, मैने उस लड़की को खोज लिया है । हैदर सुनेगा तो मुझे जरूर इनाम देगा। या अल्लाह । थकान के मारे मरी जा रही हू।'

रेशमा की बात सुनकर अहमद ने हाथ बढ़ाकर बिहारी को रोक लिया। दोनो ठिठक गये ।

अहमद ने पूछा, 'किस लडकी की बात कर रही हो, बुआ ?'

बुआ समझ गयी कि उसकी बात का असर हुआ है । उसने अदर-ही-अदर सात्वना की सास ली । गठरी उतारकर नीचे रख दी और धम्म से बैठ गयी । आह भरती हुई बोली, 'अरे, बेटा, क्या बताऊं । आजकल बस की सवारी करना एक मुसीबत है । बस वाले जानवरो की तरह आदमियों को ठूंस लेते है। अदर सास लेना मुश्किल हो जाता है । बस की छत पर, पायदान पर, लोग बदरो की तरह लटकते चलते है । या अल्लाह' इस देश का भला हो । आदमी कहा से कहा पहुच गया ।' कहते-कहते वह ठिठक गयी । उसने देखा कि अहमद और बिहारी खडे उसकी ओर आश्चर्य से घूर रहे हैं ।

उसने पूछा, 'हैदर बेटा कब लौटेगा । वह राड मुंशीगज में छिपी है। उसे जल्दी-से-जल्दी पकडना होगा, नही तो हम सभी किसी भी समय मुसीबत मे पड सकते है ।'

बिहारी आवेश मे आते हुए बोला, 'बुआ, तुम बार-बार यह क्या पहेलिया बुझा रही हो ? कौन मुंशीगज में है ?'

घृणा बुआ के मुह पर फैल गयी । विकृत स्वर मे बोली, 'अरे, वही जुबेदा! साथ में राड को भी पाल रखा है । हा, वही हरामजादी ! जो कुछ दिन पहले मेरे हाथ-पाव बाधकर यहा से भाग निकली थी ।'

अहमद बिहारी से बोला, 'मिया, कुछ माजरा समझ मे आ रहा है या नही ? छोडो इसे, चलो अपनी बाजी चलते है । हैदर भाई के आने पर इस खूसट का फैसला अपने आप हो जायेगा ।'

दोनों जाकर फर्श पर बिछी चारपाई पर बैठ गये और ताश के पत्तों में उलझ गये । बुआ की जान मे जान आ गयी । जैसे उसका पुनर्जन्म हुआ हो। उसने राहत की सास ली, ईश्वर को धन्यवाद दिया । इस राहत से उसकी थकान गायब हो गयी थी । वह रसोईघर की ओर चली गयी । रसोईघर मे एक नयी औरत उसकी जगह खाना पका रही थी ।

बुआ को देखकर उस औरत ने पूछा, 'आप कौन हैं ?'

बुआ ने उसे आक्रोशपूर्ण नजरो से देखा । रसोई में सारी चीजों पर तीखी नजर दौडायी । चूल्हे पर पक रहे मास की गध उसकी नाक से उतरकर उसके पेट की भूख को और भी तीव्र कर गयी । उसने उस औरत से बेरुखी से कहा,

'मै,..मै हैदर की बुआ हू । और तू कौन है ? कहा से आयी ? क्या नाम है तेरा ?'

औरत ने शकालु दृष्टि से उसे ऊपर से नीचे तक देखा । वह कुछ बोलती कि बुआ रसोई के अदर पहुंच गयी थी । एक-एक चीज को जाचने-परखने लगी । सभी चीजों को उसने अलग-अलग डिब्बों में अपने हाथ से सजाया था। आटा, चावल, दाल, नमक, तेल, मसाले, लेकिन अब वे सारे डिब्बे इधर-उधर बेतरतीब हो रहे थे । वह उन्हें ठीक करते हुए बोली—'औरत को रसोईघर सजाकर रखना चाहिए । फूहड कही की !' उसने उस औरत को अपमानित करना चाहा ।

औरत तुनककर बोली, 'देखिए, आप चाहे जो भी हों, किचेन से बाहर चलकर बैठिए । हैदर भैया के आने पर आपका परिचय अवश्य मिल जायेगा । अभी तो यहा से खिसकिए ।'

बुआ उस अपरिचित औरत की अपमानजनक बात से तिलमिला उठी । जहा उसकी भूख की तीव्र ज्वाला को रसोईघर में पकते मास ने और भी तीव्र कर दिया था, वही उस औरत के अपमान से वह चोट खायी नागिन की तरह फुफकार उठी, 'अरे, तेरी यह मजाल ! मुझे आखे दिखा रही है । मुझे बाहर जाने के लिए कह रही है । मै कहती हू, तू बाहर जा । तुझ जैसी फूहड औरत को खाना पकाना नही आता । सारे रसोईघर का सत्यानाश करके रख दिया है।' वह रसोईघर का पुन निरीक्षण करने लगी ।

औरत आवेश में तिलमिला उठी, पर कुछ बोली नही । उसने शीघ्रतापूर्वक हाथ धोया । आचल मे हाथ पोंछती, पांव पटकती किचेन से बाहर निकल गयी । जाते-जाते बोली, 'इसका दड तुझे भुगतना पडेगा । आने दे हैदर भैया को, तब देखूगी तुझे ।'

बुआ ने उसकी ओर आग्नेय नेत्रों से देखा । उसके बाहर जाने के बाद शीघ्रतापूर्वक ताक पर रखी नमक की शीशी खोलकर ढेर सारा नमक, दाल की केतली का ढक्कन खोलकर डाल दिया । करछुल से दाल को अच्छी तरह घोंटकर केतली का ढक्कन यथावत् ढंक दिया । कोयले के चूल्हे पर पतीले मे मांस पक रहा था जल्दबाजी मे उसका ढक्कन खोलते हुए उसके हाथ जल गये । उसमे भी ढेर सारा नमक और बुकी हुई मिर्च डाल दी और जिस जल्दबाजी मे

उसने यह सब किया था, उससे भी तेजी से ढक्कन बंद कर दिया । वह शीघ्रतापूर्वक रसोई से बाहर निकल आयी ।

उसने देखा कि वह औरत बिहारी से उसकी शिकायत कर रही है । उसके हर शब्द रेशमा बुआ के तेज कानों को सुनाई पड रहे थे । वह तमतमा उठी । गुस्से से आग-बबूला होकर बड़ी तीव्र गति से जाकर पीछे उस औरत के जूड़े को दोनो हाथों से पकडा । जोरो से पीछे की ओर ढकेला । एक वीभत्स आवाज में चीख उठी थी बुआ, 'क्यों री चुड़ैल, मुझे खूसट कहती है । मैंने क्या बिगाड़ा है तेरा ? तूने अपने को समझ क्या रखा है ?'

वह औरत पलटकर रेशमा बुआ के हाथों से अपने जूड़े को छुड़ाने की कोशिश में संघर्ष करने लगी । दोनो में एक-दूसरे से गुत्थमगुत्था शुरू हो गयी। एक-दूसरे की दाव से बचने की कोशिश में नये-नये दाव लगाने लगी । वह औरत रेशमा से हारती हुई भी हार नही मान रही थी और रेशमा बुआ जीतती हुई भी जीत मानने को तैयार नहीं थी। दोनो के कपडे अस्त-व्यस्त हो गये । सिर के बाल खुलकर इधर-उधर बेतरतीब हो आये । रेशमा ने उस औरत का एक पाव अपने पाव से आगे की ओर खीचा और दोनो हाथों से जोरों से धक्का दिया। वह उतान गिर पडी ।

बुआ अपनी विजय पर गर्व करते हुए दात पीसते हुए बोली, 'ले' और लड़ेगी ? बडी आयी है लडने वाली छिनाल कही की ! अभी तुझ जैसी दस चुड़ैलों को मै ठीक कर सकती हूं । समझ क्या रखा है ! इस हवेली मे मेरा हुक्म चलता है ।' अब तक तीतर-बटेर की तरह लडती दोनो औरतों के मल्ल-युद्ध को बिहारी और अहमद देखते रहे थे और तालिया बजा-बजाकर एक-दूसरे को और लड़ने के लिए उकसाने लगे । औरत के जोरों से चित्त गिर जाने पर अहमद ने हाथ को मुंह मे डालकर जोरो से सीटी बजायी । बिहारी उठकर उस औरत की नाक के पास हाथ रखकर देखने लगा ।

'अभी जिंदा है, अहमद भाई, इस तरह की औरतें जल्दी मरा नहीं करतीं।' उसकी आखे गुस्से में फैली हुई रेशमा बुआ की ओर ताक रही थीं ।

उसी वक्त एक जीप आकर हवेली के बाहर खडी हुई । बिहारी और अहमद सचेत हो गये । हैदर को आता देखकर रेशमा ने बनावटी ढंग से रोना शुरू कर दिया । जमीन पर शीघ्रता से बैठ गयी । अपने पांवों को इस तरह

दोनों हाथों से मींजने लगी जैसे जोरों की चोट लगी हो। दूसरी औरत बेहोशी के नाटक का समापन करते हुए अब तक उठ बैठी थी।

उन दोनों के पास आकर हैदर ठिठक गया।

अहमद व्यंग्यात्मक लहजे में बोला, 'गुरु, रेशमा बुआ तशरीफ लायी है। इस बेचारी हरफाना को जंग मे हरा दिया और अब जीत की खुशी में रो रही है।'

बिहारी बोला, 'उस्ताद लोग जंग में जीतने के बाद खुश होते हैं, पर यह बुआ भी अपने ढंग की निराली हैं। जीतकर रो रही है।'

रेशमा रोते-रोते हिचकियां लेते हुए बोली, 'अरे, बेटा, इस निगोडी ने मेरे शरीर का भुर्ता बना दिया। सारा शरीर दर्द के मारे कांप रहा है। सत्यानाश हो इस डायन का।'

हरफाना उठ खडी हुई। हैदर को देखकर उसका हौसला बढ़ गया। चोट खायी हुई धमनियों में जोश का नया रक्त तेजी से चक्कर काटने लगा। उसने झपटकर रेशमा के बाल जोरों से पकडा और आगे-पीछे झकझोर दिया। भिंचे हुए दांतों के बीच से प्रतिशोधात्मक कर्कश शब्द निकले, 'क्यों री मुई, झूठ बोलते हुए शर्म नहीं आती। तूने मुझे मारा कि मैंने तुझे! बोल! मुझे गालियां दी। मारा-पीटा। ढकेल दिया। मेरे बाल नोंचे। कपड़े फाड़ दिये। ऊपर से अपने को बेगुनाह साबित करती है? हैदर भैया के सामने अब बोल कि इस हवेली में सिर्फ तेरा हुक्म चलता है?'

रेशमा बुआ पिट रही थी, रो रही थी, कसमें खा रही थी, अपनी गलतियों के लिए माफी मांग रही थी।

तभी हैदर ने कर्कश स्वर में डांटा, 'बंद करो यह सब नाटक। जाओ, अपना-अपना काम करो।'

हरफाना ने रेशमा को छोड़ दिया और अपनी अस्त-व्यस्त साड़ी संभालने लगी।

रेशमा का रोना बंद हो गया। वह पराजित, अपमानित और भयभीत आंखों से हैदर को देखते हुए रुंधे कंठ से बोली, 'बेटा, मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं किया। जैसे हुकुम दिया, किया। जब से ये कमीनी लड़कियां भाग गयी थी, उन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने की मैंने कसम खायी थी। वह कसम

पूरी करने के लिए चली गयी थी । तुमसे नही बता सकी । इसके लिए तुम जो चाहे, *सजा दो । मैने उस लडकी का पता लगा लिया है* जो मेरा हाथ-पांव बाधकर दूसरी लडकियो के साथ भाग गयी थी । वह मुशीगज मे है । मेरी चचेरी बहन के यहा छिपी है । मेरी उस चचेरी बहन की लडकी से तुम्हारा निकाह हुआ था न, हा, वही । विश्वास करो बेटा, मैने तुम्हारे बारे मे उन्हे कुछ भी नहीं बताया । वह लडकी उन्ही के घर में है । मैने सोचा, यह खबर तुम्हें जल्दी-से-जल्दी दे दू । वहां मै एक पल भी नही रुकी । वे लोग तो ठहर जाने की जिद्द कर रहे थे, पर मै बिना खाये-पीये ही चल दी । बेटा; दिन भर से भूखी आयी हू । यहा पहुचते ही इस औरत ने, क्या नाम है इसका, हरफाना की बच्ची मार-मार कर... ।' बुआ रोने लगी ।

हरफाना ने प्रतिवाद किया तो हैदर ने कर्कश नेत्रो से उसकी ओर देखा । वह कुछ कहती-कहती सहमकर रुक गयी ।

हैदर, वही पडी हुई एक कुर्सी पर बैठते हुए रेशमा बुआ से बोला, 'बुआ, तुम बिना बताये यहा से चली गयी, यह ठीक नही किया ।' वह चितित हो उठा । उसके खूखार-कुत्सित चेहरे पर चिता की रेखाएं अपने तेज नाखून के छाप छोड़ गयीं । उसके मुह से निकला, 'अब देखूगा ।' उसके होंठों पर विद्रूप अट्टहास उभर आया । हसते-हसते वह एकाएक चुप हो गया । उसने दोनों औरतो को तथा बिहारी और अहमद को अपना-अपना काम करने के लिए कह दिया । और खामोश हो गया । गहरी सोच मे डूबे हैदर को लगा, उसकी जिंदगी के नष्ट होने के पीछे उसकी सास, उसकी बीवी जुबेदा, उसके घर-परिवार का जितना बडा हाथ रहा है, उतना बडा हाथ उसके दोस्तो या राजनीति का नही । दोस्तो की सगति ने जहां उसकी जिंदगी को पीने, खाने, रोज-ब-रोज नयी लडकियो के शरीर से खेलने की आजादी दी, वहीं राजनीति ने उसे दौलत भी दी । लड़कियों के व्यापार में लाखों रुपये मिले । उसने याद किया । लगभग सात सौ बगाली लडकियों को पजाबी मुसलमानों के हाथ बेचकर जो पैसा कमाया, उससे सारी जिंदगी मौज के साथ बिता सकता है । परंतु किस्मत उसके जीवन के कोरे कागज पर जहां एक ओर औरतें बेचने के लोभ-लाभ का दुष्कृत अपराध लिख रही थी, वहीं दूसरी ओर उसके वैवाहिक जीवन का अलगाव, हिंसा, बलात्कार और पैशाचिक कारनामों के अनेक

अध्याय भी लिखती जा रही थी । शादी के बाद हैदर प्रतिहिंसा और आक्रोश की उत्तेजना से चौबीस घंटे ग्रसित रहने लगा है । सोते हुए भी उसे खौफनाक सपने आते रहते हैं । वह अचानक अकेले में बड़बड़ाने लगता । कभी-कभी उसकी लंबी चीख पूरे वातावरण भर छा जाती । वह जागकर उठ बैठता है, पसीने से तर-बतर शरीर थर-थर कांप रहा होता । सांसें तेजी से चलतीं । सपने में घटित सब कुछ याद होने लगता । लाशों के पहाड़ पर खड़ी दैत्याकार छाया अट्टहास कर रही है । एक खूबसूरत औरत उसे बुला रही है । वह औरत उसकी बीवी की तरह ही लग रही है । शादी के जोड़े पहने, पारदर्शी पर्दे के अंदर से उसका गोरा मुखड़ा, लाल अधर, माथे पर बिंदिया झलक रही है और झलमल झलक रहा है उसका प्रस्फुटित यौवन । एक हाथ से वह इशारा करके उसे ही बुला रही है । हां, उसे ही ! पर वह जितनी ही तीव्रगति से चलकर, दौड़कर उसे पकड़ने की कोशिश करता है, औरत का और उसके बीच का अंतर बढ़ता ही जाता है । उसके पावों के नीचे असंख्य लाशें पड़ी हैं । वीभत्स चेहरों वाली नंगी लाशें । ध्यान से उनकी ओर देखता है वह । लाशों के असंख्य हाथ ऊपर उठे हुए हैं । जोरों की चीख हैदर के मुंह से निकलती है, 'नहीं, नहीं ।' वह कुर्सी से लुढ़ककर गिर पड़ा ।

सभी उसके पास दौड़कर आ गये । रेशमा बुआ डरते-डरते हैदर के सिर पर ममता भरा हाथ फेरने लगी । उन्होंने हरफाना से कुछ इस तरह आत्मीय स्वर में पानी लाने को कहा, जैसे उसके साथ कोई लड़ाई ही नहीं हुई ।

हैदर उठकर खड़ा होता हुआ अहमद से बोला, 'इतना थका था कि नींद आ गयी । भूख लगी है । कुछ खाऊंगा ।'

रेशमा रसोई की तरफ जाने लगी तो हैदर ने पूछा, 'बुआ, वह कौन-सा गांव है, जहां तुम उस लौंडी को देखकर आयी हो ? यानी जहां तुम्हारी चचेरी बहन रहती है ? क्या नाम है उसका ?'

रेशमा बुआ ने उत्तर दिया, 'मुंशीगंज ।'

उस वक्त रात के दो बजे थे । खटखटाहट की आवाज सुनकर सईदा ने अंदर से आवाज दी, 'कौन ?'

'मैं हू अमर' अमर ने कहा ।

सईदा ने उठकर दरवाजा खोल दिया । लालटेन के मद्धिम प्रकाश में अमर के कपडे रक्त से सने हुए देखकर वह सहम गयी । आश्चर्यचकित होते हुए बोली, 'यह क्या, अमर भाई, सब ठीक तो है ? मौसी कहा हैं ?'

अमर ने सिर झुका लिया । दुखी कंठ से बोला, 'मौसी अब हमसे दूर चली गयी । हत्यारो ने उन्हें भी नही छोडा ।'

सईदा तूफान में ढहते हुए पेड की तरह अमर के ऊपर गिर पड़ी । एकबारगी मुह से चीख निकली, 'नहीं - नही - नहीं । ऐसा नही हो सकता । हाय, अब मैं क्या करूंगी । कहा जाऊंगी !'

अमर ने उसे सात्वना देते हुए कहा, 'हिम्मत रखो, सईदा ! ईश्वर को शायद यही पसद था । वह हमें यातनाओं की आग मे तपा-तपाकर पक्का करना चाहता है । अब समय नही है । मैं तुम्हें लेने आया हू । तुम्हें अभी, इसी वक्त निर्णय लेना होगा । फौजी गुडे सारे गाव को घेरकर अत्याचार करेंगे । उसमें तुम बच नही पाओगी । तुम्हे मेरे साथ चलना है ।'

सईदा आसुओं को पोछते हुए बोली, 'भाई जान ! अब यहां रहकर क्या करूगी, जब मेरा सहारा ही छिन गया ?' वह रो पडी ।

मासी की याद उसे अंदर से तडपा रही थी । उसके जीवन की झेली हुई यातनाओ के बीच दोबारा जी लेने के सपनों ने उस वृक्ष पर जो नीड़ बनाये थे, वह अचानक ही तूफान मे नष्ट हो गया । अब वह कहा जायेगी भला ? भाग्य देवता से पूछना चाहती है कि आखिर वह कहां जाये, क्या करे ?

निश्चयात्मक ढंग से उसने अमर से कहा, 'मैं आपके साथ चलूंगी, अमर भाई !' वह घर के अंदर गयी । हर ओर मासी की चीजें पडी थीं । वह फिर बिखर गयी । उसने कुछ आवश्यक सामान एक झोले में रख लिया । दीवार पर टंगे मासी के चित्र को नमस्कार किया । सजल आंखों में सावन-भादो घिर आया । एक साहस भरे निश्चय ने उसे राहत दी ।

उसने अमर से कहा, 'चलो, मैं तैयार हू । मासी हमें आशीर्वाद दे रही हैं। अब हमारी असली लडाई शुरू हो रही है ।'

अमर ने कंधे से लटकी बंदूक उसे थमाते हुए पूछा, 'चलाना आता है।'

सईदा ने कहा, 'कॉलेज में एन. सी. सी. में सीखा था। पर वहां तो साधारण बदूकें चलाना ही सिखाया जाता था। यह तो मशीनगन जान पड़ती है।'

'जान क्या पड़ती है, मशीनगन ही है।' अमर ने कहा, 'जल्दी करो। समय नहीं है।' सईदा चलने के लिए प्रस्तुत हुई तो अमर ने पूछा, 'घर में कुछ खाने को भी है ? हो तो झोले में ले लो। पता नहीं किन परिस्थितियों में रहना पड़े। मुझे भूख भी जोरों की लगी है।'

सईदा ने लालटेन लिया। किचेन में जाकर जो भी बासी खाना बचा था, टिफिन बक्स में भरा। किचेन की एक-एक चीज को दुखी नजर से देखा। क्षण भर के लिए लगा जैसे मासी उससे कह रही हों, 'बेटी, इतने से क्या होगा ? तू तो अभी बच्ची है। खूब खाओ। मौज से रहो।' मासी उससे ये वाक्य प्रायः ही बोलती रहती थीं। उसकी आखों से आसुओं के कई कतरे ढलक पड़े।

वह टिफिन बक्स लिये हुए बैठक खाने में आयी। दीवार पर मासी की तस्वीर लटक रही थी। उसने तस्वीर को पुन नमस्कार किया। रुंधे कंठ से बोली, 'मासी, मैं अब क्या करूं ? इस दुनिया में मुझे तुम्हारी ममता देने वाला कहां है ?' वह रो पड़ी।

उसके रोने की आवाज सुनकर अमर बैठक खाने में आकर सईदा को साहस बंधाते हुए बोला, 'सईदा, मासी ने तुझे मां जैसा प्यार दिया। मैं वादा करता हूं कि तुझे अपनी बहन जैसा प्यार दूंगा।'

सईदा अमर के सीने से लग गयी उसके सीने में मुंह छुपाये हिचकियां लेकर काफी देर तक रोती रही। फिर जैसे उसने भावुकता की खोल को उतार फेंका। अंदर साहस जागृत हो गया। उसने मासी की तस्वीर के सामने प्रतिज्ञा ली, 'मासी, मैं अब उन राक्षसों से बदला लूंगी। मुझे आशीर्वाद दो, जिन राक्षसों ने मेरा जीवन नष्ट किया, यातनाएं दीं। तुम्हें मुझसे छीन लिया, अब उनसे बदला लेने के लिए, बंगलादेश की मुक्ति के लिए मैं अपने जान की बाजी लगा दूंगी। यह मेरी प्रतिज्ञा है। मुझे आशीर्वाद दो, मां ! तूने अपने जीवन की आहुति देकर मेरे रक्त में नया विश्वास भर दिया है। अलविदा ! नये साहस, नयी प्रतिज्ञाएं लेकर वह अमर के पीछे-पीछे दरवाजे से बाहर निकल आयी। दरवाजे में ताला बंद किया। चाभी अमर को थमाते हुए बोली, 'यह मासी के

घर की चाभी है । मेरे भाग्य की चाभी । संहालकर रखना, भाई जान।'

अमर कुछ बोला नहीं । उसने हाथ बढाकर चाभी ले ली ।

दोनों रात के गहरे अंधकार में गाव से बाहर निकल पड़े । उस वक्त रात के एक बजे थे । पूरा गाव निद्रा में मग्न था । उस निस्तब्धता को बीच-बीच में कुत्तो के भौकने की आवाजें तोड रही थीं ।

रेशमा बुआ के चले जाने के बाद गीता ने चिंतित होते हुए मा से कहा, 'मां, वह चुडैल जरूर कोई नयी चाल चलेगी ।'

उसने मा से बुआ के बारे मे सब कुछ बता दिया । किस प्रकार वह लड़कियों के अपहरण मे, उनके रख-रखाव में हैदर की मदद करती है । इतना सब कुछ जान लेने के बाद जुबेदा का मन घृणा और क्षोभ से भर उठा । उसे अपनी जिंदगी से नफरत होने लगी । उसने सोचा, किस्मत ने उसे जलते हुए रेगिस्तान मे पटक दिया है । एक-एक पल अकल्पनीय दु खों में बीत रहे हैं। दिन का चैन और रातो की नींद छीन ली गयी है । जिंदगी से वितृष्णा की भावना ने उसे इस कदर अकेला कर दिया है, जहां शादी, गृहस्थी पुनर्मिलन की आकाक्षाएं, वैवाहिक जीवन की खुशियों की कल्पनाएं थोड़ी भी शाति नहीं दे पातीं । उसकी एक ऐसे व्यक्ति के साथ शादी कर दी गयी, जो पाकिस्तानी सेना का मुखबिर हैदर अली है । उससे स्पष्ट लगा, उसके सारे सपने, सारे अरमान चूर-चूर हो गये है । खुशियो के ऊपर काली आंधी छा गयी है, जिसकी चपेट मे उसकी आस्थाओं की इमारत ढह गयी है । ईश्वर का कैसा क्रूर विधान है यह ? इतनी बड़ी सजा आखिर क्यों मिली मुझे ? क्या अपराध किया था मैंने ? उसकी आंखे भर आयी । सिसकियो में डूब गयी वह । गीता ने उसे बाहों में भर लिया । सांत्वना देती हुई स्वयं भी रोने लगी । दोनों काफी देर तक एक-दूसरे से बंधी रोती रहीं ।

मा ने आकर समझाया, 'बेटी, इस तरह साहस हारने से जीवन में निराशा ही मिलती है । जीवन की बाजी हार जाना मनुष्य की असमर्थता हो सकती है, पर उस हार का डटकर मुकाबला करना चाहिए । मनुष्य को अपने जीवन के

सपनो को आसुओ की धारा के बीच डुबोना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें दूसरो की भलाई के लिए, देश के लिएं बलिदान कर देना चाहिए । हमें अपने निजी दु ख-दर्द को देश की आजादी और उसकी भलाई के लिए बलिदान कर देना चाहिए । शेखमुजीब को हम सभी बगला देशवासियो को सहयोग देना चाहिए।'

वह जुमा का दिन था । इस दिन दोनो महिलाएं भूखी रहती । नमाज पढ़ने के बाद ही कुछ थोड़ा-सा फलाहार करतीं । दिन के ग्यारह बज रहे थे । उन्होंने सोचा— दोनों लडकियो को खाना बनाने मे तकलीफ होगी । वह स्वय ही खाना बनाकर रख दे । रोजा खोलने के बाद खा लेगी । वह चूल्हा जलाने लगीं । धुएं से उन्हें जोरों की खासी आयी । खासते हुए वे दोहरी हो गयी ।

उन्हें बेतरह खासते हुए देख जुबेदा दौडकर आ गयी और उन्हें परे हटाते हुए बोली, 'मा, मैंने कितनी बार कहा कि तुम अपनी सेहत पर ध्यान दो । धुए से बचो । तुम मेरा एक भी कहा नही मानती ।'

मां अपनी खासी जबरन रोकते हुए बोली, 'बेटी, कुछ काम नही करूगी तो शरीर और भी बीमार हो जायेगा । आज तुम...' वह कुछ और बोलती कि जोरों की खासी आयी ।

खासते हुए वह नल की ओर तेज कदमों से चली गयी । बुरी तरह खासते हुए कफ के साथ उसके मुह से ढेर सारा रक्त गिर पड़ा । उसका सिर घूम गया। तीव्र वेदना से कराह उठी । उन्होने कुल्ला करने के लिए नल खोला । उसमे से एक बूंद भी पानी नहीं आया । नीचे बाल्टी मे पानी रखा था । भरी बाल्टी मे लोटा डुबोकर पानी लिया और कुल्ला करने लगीं । उसी समय उन्हें दोबारा जोरों की खासी आयी । वह खासते हुए वही बैठ गयी ।

जुबेदा ने तब ईंधन जला लिया और मा के पास चली आयी । कफ के साथ ढेर सारा काला-लाल रक्त देखकर वह एकबारगी चीख उठी, 'मां, मां, तू बीमार है और मुझे पता भी नहीं । मां, मैं अभी डॉक्टर के पास ले चलती हूं।'

मां मना करते हुए बोलीं, 'ना, बेटी, रहने दे । मुझे कुछ नहीं हुआ । जरा-सा खासी आयी है । ठीक हो जाऊंगी ।

जुबेदा बोली, 'तू ऐसे नहीं जायेगी । मैं जाकर रहीम चाचा को बुला

लाती हू । वे अभी डिस्पेंसरी मे मिल जायेंगे । गीता तू तब तक मां की देख-भाल कर ।'

वह मा को सहारा देकर अदर आयी और पलग पर लिटा दिया । सिर पर हाथ रखकर देखा, माथा गर्म तवे की तरह जल रहा था ।

जुबेदा डॉ. रहीम खा के घर पहुची तो देखा डिस्पेसरी के गेट पर ताला लगा है । उसे आश्चर्य हुआ । दिन के बारह बज रहे थे । यह समय प्रायः खाने का होता है पर डॉ. साहब गायब है । उनके परिवार के लोग भी दिखाई नही देते । वह कुछ समझ नही पायी । वह गाव के बाउल-गायक बलाई ठाकुर को जानती थी । वे 'बाउल गीत' के लिए उस अचल मे प्रसिद्ध थे । बलाई'दा कमरे मे बैठे इकतारे पर नजरुल गीत पर आधारित मनमोहक धुन बजा रहे थे । ....अग्निवीणा साधो । क्राति के गीत गाओ । गाव-गाव, प्राण-प्राण में नवोल्लास जगाओ ... ।

जुबेदा कुछ देर तक दरवाजे पर खडी गीत की मनमोहक धुन सुनती रही। फिर अनमने मन से कमरे के अदर चली आयी ।

बलाई'दा ने एकतारा बजाना बद कर दिया । जुबेदा को देखते हुए बोले, 'कौन ? जुबी बेटी ! आ जा ।'

जुबेदा ने पूछा, 'बलाई'दा, डॉक्टर रहीम की डिस्पेंसरी में ताला लगा है। अडोस-पडोस के दरवाजों मे भी ताले लगे है । कुछ समझ में नहीं आता । मां बहुत बीमार है । उनकी हालत गभीर है ।'

बलाई'दा ने बताया, 'बेटी, फौज आयी थी । सिपाही गाव के सभी युवकों को पकड़कर ले गये । औरतों पर अत्याचार किया ।'

कहते-कहते बलाई, दा के नेत्र सजल हो उठे । कुछ देर अपने को संयत करते रहे, फिर आश्वस्त होते हुए बोले, 'कुछ दिन पहले आवामी पार्टी की मीटिंग हो रही थी । मदसरा मैदान में बहुत से नेता जमा थे । फौज ने मीटिंग पर अचानक गोलियां चला दीं । हजारों लोग मारे गये । कुछ युवक क्रातिकारियों ने भी फौज के कई सिपाहियों को मार डाला । सुना है अमर चौधरी नाम के किसी नेता तथा आवाम्री पार्टी के अन्य नेताओं को पकड़ने के लिए फौज गाव-गाव घूम रही है । अत्याचार कर रही है । सभी से पूछताछ कर रही है।'

जुबेदा के मुह से निकल गया, 'क्या ? अमर चौधरी ?'

बलाई'दा ने स्वीकारात्मक ढंग से सिर हिलाया, 'हा, बेटी, अमर चौधरी। बहुत बहादुर है । ईश्वर ऐसे हजारो लाल बगलादेश की धरती पर पैदा करे।'

जुबेदा का चेहरा आनंद से खिल उठा । उसके मुह से निकला-'वाह, मेरे शेर !'

बलाई'दा ने पूछा, 'बेटी, तुम अमर को जानती हो क्या ?'

जुबेदा ने कहा, 'देश के क्रातिकारी नेता को भला कौन नही जानता ?' उसने अदर-ही-अदर सोचा । यहा जनाब आये है तो जरूर कही-न-कहीं मिल जायेगे ।

बलाई'दा से अमर के बारे मे दोबारा पूछने पर उन्होने बताया, 'वे कहा गये, यह तो कहना मुश्किल है । आस-पास के गावो मे नही है । हे ईश्वर ! बगलादेश की सहायता करो ।' कहते-कहते बलाई'दा की आखो से अश्रुधारा बहने लगी । उन्होने पास ही रखा एकतारा उठा लिया और रवीद्रनाथ के गीत की धुन बजाने लगे :

मम दु खेर साधन यबे करिनु निवेदन भव चरनतले ।
शुभ लग्न गेलो चोले... ।

जुबेदा कोने मे पडा मोढ़ा उठा लायी । उस पर बैठकर तन्मयता से गीत सुनने लगी । अमर के बारे में छोटी-सी जानकारी से उसका मन-मस्तिष्क असीमित आनंद से घनीभूत हो रहा था । कुछ देर के लिए मा के बारे में उसकी चिंता गायब हो गयी ।

गीत समाप्त करते हुए बलाई'दा ने इकतारा रख दिया । उनकी आखों से अब भी आसू गिर रहे थे । कुछ देर तक मौन दोनो के बीच छाया रहा।

जुबेदा ने बलाई'दा से पूछा, 'क्या और कोई डॉक्टर या हकीम आस-पास के गाव में नहीं मिल जायेगा ?'

बलाई'दा ने एकतारा की ओर दुखी आखों से देखते हुए रुंधे कंठ से कहा,

'मा, मुझे थोड़ा पानी पिला दो ।' उन्होंने अपने पावों से कंबल हटा दिया । उनकी टांग से रक्त बह रहा था । बहुत-सा रक्त बिस्तर पर जम गया था । जुबेदा के मुह से चीख निकल गयी ।

'यह क्या बलाई'दा, 'आपको बहुत चोट लगी है और आप-- ?'

बलाई'दा ने अस्फुट स्वर मे कहा, 'उन आततायियों ने मुझे भी गोली का निशाना बना दिया । किसी तरह घिसट-घिसटकर इस कुटिया में आ पहुंचा, नही तो. ।' पाव को ऊपर उठाने की कोशिश में वे दर्द से कराह उठे।

जुबेदा उठकर शीघ्रतापूर्वक भीतर के कमरे मे गयी । बाल्टी मे थोड़ा-सा पानी रखा था, गिलास भर पानी लाकर बलाई'दा के हाथ में थमा दिया । बलाई'दा ने कांपते हुए हाथों से गिलास पकड़ा और एक सांस मे पानी पीकर खाली गिलास चारपाई के नीचे रखने लगे तो जुबेदा ने गिलास थाम लिया।

उसने बलाई'दा से पूछा, 'घर मे कोई दवा है ?' उत्तर मे बलाई'दा ठठाकर हंस पड़े, फिर गहरे विषाद भरे मन से बोले, 'बेटी, लगता है अब मेरा समय करीब आ गया है । क्या होगी दवा ?' वे चारपाई पर लेट गये । धीरे-धीरे आखें बुझने लगीं ।

जुबेदा ने कहा, 'बलाई' दा आप अपने ऊपर इतना बड़ा अन्याय नहीं कर सकते । आप बंगला देश के एक महान कलाकार है । आपने अपने गीतों से इस देश की धरती के लोगो को जगाया है । उनकी नसो मे नव जीवन का संचार किया है । आप इतनी जल्दी हमे छोड़कर नही जा सकते । उसने अपनी साड़ी का आंचल फाड़ा और बलाई'दा के रिसते टांग मे पट्टी बांध दी । और शीघ्रतापूर्वक उठकर जाते-जाते बोली, 'मैं जब तक डॉक्टर लेकर न आऊं, आप आराम कीजिए ।' बलाई'दा ने आंखे बंद कर ली । दोनों आंखों से अश्रुधारा बह निकली ।

जुबेदा के दिमाग में बीमार मा का चेहरा टंग गया । उसने सोचा गीता असहाय मा के पास बैठी उनकी सिर दबाती होगी । या हो सकता है गर्म पानी कर रही हो । गर्म सैंक देने पर मां की छाती का दर्द कुछ कम हो जाता है । कुछ देर के

लिए खानी बन जाती है। या खून की उल्टियां की होंगी मां ने और बेहोश पड़ी होंगी। उनका मन असम्भावित दुर्घटना की आशंका से बेचैन हो उठा। उसके मुंह से निकला, 'ईश्वर, रक्षा करना।' फिर उसने अमर के बारे में सोचा तो जनाब क्रांतिकारी नेता बन गये? उसे ढाका विश्वविद्यालय के दिनों की घटनाएं याद हो आयीं। अमर और गीता के प्रणय-प्रसंग। विश्वविद्यालय की कई महत्त्वपूर्ण स्थितियां एक-एक कर स्मृतियों के द्वार खोलने लगी। उसने सोचा वह घर जाकर गीता को अमर के बारे में सूचना देगी तो वह सचमुच आनंद से नाच उठेगी। और मां...। मां के बारे में सोचकर फिर चिंतित हो उठी। उसे घर से चले लगभग घंटा भर हो गया था। अब तक मां की पता नहीं क्या दशा हुई होगी। किसी-न-किसी डॉक्टर की खोज करनी ही होगी। बलाई' दा के लिए भी डॉक्टर लाना जरूरी है। आह, कितना बड़ा घाव पैर में है। उसे याद हो आया, करीमगंज बाजार यहां से लगभग दो मील की दूरी पर है। वहां डॉक्टर अम्लान मित्रा की काफी अच्छी डिस्पेंसरी है।

बलाई'दा से विदा लेकर जुबेदा के पांव द्रुतगति से करीमगंज के रास्ते पर चल पड़े। दिन के साढ़े बारह बजे थे, आकाश स्वच्छ था, धूप तेज थी। क्वार के दिन थे। धूप में चलते हुए जुबेदा आशंकित हो रही थी — पाकिस्तानी फौज का कोई दस्ता इधर से गुजर तो नहीं रहा? उस आशंका से मुक्ति पाने के लिए वह बार-बार चारों ओर नजर दौड़ाती जाती। इक्का-दुक्का लोगों के खेतों में काम करने के अलावा रास्ते भर कोई आदमी दिखाई नहीं दिया। करीमगंज को जोड़ने वाली सड़क खेतों के बीच से जाती थी। सड़क के दोनों ओर धान के लहलहाते खेत थे। किसान औरतें खेतों से काम कर वापस लौट रही थीं। उनके पीछे छोटे-बड़े बच्चे थे।

सड़क पर सामने से आती हुई औरत से जुबेदा ने पूछा, 'डॉक्टर मित्रा क्या अभी मिल जायेंगे?'

औरत उस लड़की को नीचे से ऊपर तक देखकर बोली, 'क्या पता!' और पीछे मुड़कर देखते हुई चली गयी।

जुबेदा उस औरत के उत्तर देने के लहजे पर मुस्करा उठी। वह करीमगंज पहुंच गयी।

डॉ. मित्रा अपनी डिस्पेंसरी बंद करके कहीं जाने वाले ही थे। जुबेदा ने मां

और बलाई'दा के बारे मे उनसे बताया ।

डॉ. मित्रा कुछ देर तक अनिश्चयात्मक भाव से चिताग्रस्त खडे रहे । फिर जुबेदा के कंधे को आत्मीय भाव से थपथपाते हुए बोले, 'साहस रक्खो । सब ठीक हो जायेगा । चलो ।'

स्कूटर पर जुबेदा डाक्टर मित्रा के पीछे बैठ गयी । स्कूटर स्टार्ट हुआ और मुशीगज गाव के रास्ते पर चल पड़ा ।

जुबेदा और गीता के बारे मे बुआ से जानकारी पाने के बाद हैदर विक्षिप्त-सा रहने लगा । वह दो दिनो तक घर से नही निकला । इस बीच उसका काम बिहारी और अहमद करते रहे । पिछले दो दिनो में खुलना और अखौरा से कुछ अपहृत लडकिया कैंप मे लायी गयी थी । हैदर शराब के नशे में अक्सर धुत रहता । उसी स्थिति मे कैंप का मुआयना करता । आधी रात की निविड निस्तब्धता के बीच उसकी वासना मनपसंद लड़की की इज्जत से खेलने के लिए उन्मत्त हो उठती । उसका बर्बर पशुत्व, असहाय चीखो और आहत क्रंदनो के ऊपर हावी हो उठता । उसके आततायी आक्रमण से कोई भी लडकी आज तक नहीं बच पायी । पर इधर दो दिनो से वह शराब पीता हुआ अपने कमरे में बैठा रहा ।

दूसरे दिन शाम को नशे मे धुत वह मेज पर पडी दारू की बोतल से खेलते हुए बडबडाया, 'कोई मेरे हाथ से बचकर नही जा सकती । वह हरामजादी बचकर कैसे निकल गयी ।' उसका इशारा गीता की ओर था । वह दोबारा बुदबुदाया, 'ऐसी लडकी को शरण भी दी तो मेरी बीवी ने ! या अल्लाह ! मैं कितना हतभागा हूं ।'

रेशमा हैदर के कमरे मे नाश्ता दे गयी । डर के मारे कुछ भी पूछने का उसका साहस नहीं हुआ । अहमद और बिहारी अपने सरदार के बदले हुए व्यवहार और उसकी हरकत को सशय भरी नजरों से देख रहे थे । उनकी समझ में नही आ रहा था कि वे किस तरह हैदर को समझाये । उसे नसीहत दे या उसकी अकर्मण्यता पर गालिया दें ।

इस बीच अहमद ने बुआ से कई बार पूछा था, 'हैदर मिया इतना बदलते

...आ रहे हैं। इसका कारण क्या है ?'

पहले तो बुआ मौन रही पर बिहारी और अहमद के बार-बार आग्रह करने पर बुआ अपने को रो [illegible] दस्तावेज़ को खोलकर उन्होंने रहस्य [illegible] ना मत। यह सब उसी बेहया [illegible]। अरे वही... उसकी बीवी। [illegible] होते न होते ही तलाक।'

अहमद ने बुआ का पाव छूकर कहा, 'बुआ, तुम्हारे समान दुनिया में कोई भी औरत नहीं। तुम महान हो।'

अहमद की बात सुनकर बुआ आत्मसम्मान से गज भर ऊपर उठ गयी।

तभी बिहारी ने बुआ की सुंदरता की प्रशसा की, 'बुआ, तुम जवानी मे कितनी सुंदर रही होगी। बाप रे बाप।'

अहमद ने बिहारी को डाटा, 'तू बड़ा अहमक है। बुआ अभी भी किसी जवान औरत से कम है क्या ? देखा नहीं, कैसे हरफाना बीबी का झोंटा पकड़कर जमीन पर पटक दिया। चारो खाने चित्त। पर बुआ, तुमने उस बेचारी को इतना क्यों मारा ? सच बताओ, बुआ, मास और दाल मे इतना नमक उसने ही डाला था या दाल मे कुछ काला है ?' कहते-कहते अहमद बुआ की आंखो की ओर देखकर मुस्कराया।

ढेर सारे असमंजस के बीच मंद मुस्कान बुआ के होठों पर खिल उठी। वह कह उठी, 'अरे बेटा, यहं भी कोई पूछने की बात है ? वह खूसट थी ही ऐसी।' बोलते हुए उसके होठों पर व्यग्य की रहस्यमय मुस्कान घिर आयी। उन्होंने बताया, 'नमक और मिर्च मैने ही डाला था।'

इस पर दोनों हंस पडे थे। अहमद ने बुआ की सूझ-बूझ और नाटक की प्रशंसा की।

बिहारी ने पूछा, 'बुआ, यह तो बताओ, हैदर मियां ने शादी कब कर ली ? हम तो इस बारे में कुछ जानते ही नहीं।'

पहले तो बुआ ने बहाना बनाकर टालने का प्रयत्न किया पर बिहारी के बार-बार आग्रह करने पर धीरे स्वर में बोली, 'मुंशीगंज में मेरी चचेरी बहन

रहती है । उसकी लडकी के साथ हैदर का निकाह ढाका मे हुआ था । साल भर पहले । लडकी के बाप मौलाना अल्कादरी ढाका के नामी रईस थे । बहुत बूढ़े आदमी थे । लडकी बहुत पढ़ी-लिखी है, पर क्या कहू, बेटा, हैदर की किस्मत ही फूटी निकली । निकाह की रात लडकी अपने प्रेमी से बद कमरे मे ..छि ..छि .. छि । मैने अपनी आखों से देखा था, उसका प्रेमी कोई पजाबी सरदार था । उसने शादी मे आकर उसे उपहार दिया और बाहों में भरकर दूसरे कमरे मे उठा ले गया । हाय री निगोडी ! कैसी निर्लज्ज लडकी थी । उसके साथ हस-हस कर बाते कर रही थी । मैने तो उसी समय हैदर से सब कुछ बता दिया । सुनते ही हैदर गुस्से से आग-बबूला हो गया । अपने अपमान का बदला लेने के लिए उसने पूरी कोठी मे आग लगा दी और फरार हो गया । सच, अहमद बेटा, खुदा जानता है, हैदर का उसमें कोई कसूर नही । एक औरत ने उसे हैवान बना दिया । कलमुही को आखिर क्या मिला ? न प्रेमी मिला और न पति । हमारे हैदर ने तो सैकडो लड़कियों के साथ खेला-खाया । ऐश किया । उसकी जूती से । पडी रह जलती, तरसती ।' बुआ के होंठ घृणा से फैल गये ।

अहमद फुसफुसाकर बोला, 'बुआ, धीरे बोलो । हैदर मियां सुनेगे तो हरफाना बेगम की तरह तुम्हे भी.. ।'

बुआ ने सशकित नेत्रो से इधर-उधर देखा । अपने दोनों कान छूते हुए भयभीत-सी बोली, 'बेटा, मैं हैदर को बहुत चाहती हू । खुदाबद से प्रार्थना करती हूं कि उसे सदा सही-सलामत रखे ।'

बिहारी ने बुआ से पूछा, 'हैदर सरदार ने आग कैसे लगायी ? वहां तो वह दूल्हे के भेष मे थे । कितने सारे बाराती रहे होगे । इस अग्निकाड की क्या जरूरत थी ? लडकी का कोई प्रेमी था, सरदार दूसरी शादी कर लेता । लडकियों की कमी है क्या ?'

बुआ की शकालु-पैनी आखे हैदर के कमरे की ओर चली गयीं । फिर आश्वस्त होते हुए बोली, 'बेटा, यह बहुत बडी दुघर्टना है । किसी से कहना नहीं । हैदर बेटा को वह लडकी बहुत पसद थी । वह शायराना ख्याल की पढ़ी-लिखी सुदर लडकी थी । उसके बारे में मेरे भाई जान ने बडी-बडी बातें फैला रखी थीं । लडकी लाखों मे एक है । लडकी बडी तेज है । आधुनिक है

और न जाने कितनी सारी तारीफो के पुल बाधे थे । हैदर के दिलो-दिमाग मे वह लडकी समा गयी थी । निकाह के बाद जनवासे मे जब खबर फैली कि लडकी का कोई प्रेमी आकर लडकी से प्रेम कर रहा है तो कुछ देर तक हैदर अपने को काबू मे रखने की कोशिश करता रहा फिर अचानक ही वह गुसल के बहाने बाहर निकला । मै दीवानखाने में मौलाना साहब से कुछ बाते कर रही थी।

उनसे मैने पूछा था । 'यह दूल्हा कहा भागा जा रहा है ?'

उन्होने कहा, 'तुम्ही देखो ।'

उनकी बात मानकर हैदर के पीछे-पीछे चली गयी । हैदर उस कोठी के चारो ओर कुछ पल ताक-झाक करता रहा । तभी उसके दो दोस्त भी आ गये। दोस्तों को किसी बहाने उसने जनवासे मे वापस भेज दिया । उनसे फुसफुसाकर कुछ बोला था । मै सुन नही पायी । मौलाना के मकान के पास मोटर गैरेज था । वह अदर गया और पैट्रोल से भरा टीन लाकर कोठी के पिछले हिस्से से छत पर उडेल दिया । पाकेट से लाइटर निकाला। या अल्लाह। मेरे मुह से निकल गया । हैदर ने आग की लपटो की तेज रोशनी मे मुझे देख लिया । दौडकर मेरा मुह दबाये खीचकर गैरेज मे ले गया । उसकी आखो से गुस्से की चिनगारिया निकल रही थी ।

मुझसे बोला, 'बुआ, एक शब्द भी बोली या चिल्लाने की कोशिश की तो जान से... ।' या अल्लाह, भगवान न करे ऐसी शादिया हो । वह मुई जुबैदा न जाने किस मनहूस घडी मे पैदा हुई थी । देखते-देखते चारों ओर आग की लपटें और लोगो का शोर-शराबा उठ रहा था । मौलाना की वह खूबसूरत कोठी, जो राजमहल जैसी थी, आग की लपटों के बीच जल रही थी । वहा से मुझे लेकर हैदर भागा । तबसे मै उसके साथ जैसोर, खुलना, नारायणगज आदि स्थानों पर भागती रही और अत मे यहा तुम लोगों के बीच खुदा ने ला पटका।'

अहमद बोला, 'फिर उस लडकी का कोई पता नहीं चला ?'

बुआ का मुह घृणा से फैल गया, 'अरे, बेटा, ऐसी निगोड़ी लड़कियों को शैतान अपने पास रखता है ।' बुआ कुछ देर तक चुप रही । उसने इधर-उधर देखकर किंचित् आश्वस्त होते हुए बताया, 'उस मुई का पता चल गया है ।

शैतान की बच्ची । मा-बेटी ने बेचारे मौलाना को खा लिया । इतनी बडी उनकी ढाका की रियासत को खाक मे मिला दिया । अब गाव में भागकर रह रही है दोनो । अपने साय उस लडकी को भी रख लिया है । वही ! जो यहां से कुछ दिन पहले रात में भाग गयी थी । हा— हा, वही । हैदर भैया को मैने सब कुछ बता दिया । आखिर मैने उसे खोज ही निकाला । मुझसे भागकर भला जायेगी कहा चुडैल । अब हैदर उसे मजा चखायेगा ।'

बिहारी ने अहमद की ओर देखा । नाटकीय ढंग से मुह ऊपर-नीचे हिलाते हुए आख मारी । हैदर के बारे मे इतना कुछ जानकर दोनों को जो खुशी हुई थी, वह कई बोतल अच्छी शराब पीकर और मास-पुलाव खाकर भी उन्हे वैसा मजा नही आया होगा । सबेरे से ही अपने सरदार को पीते हुए देखकर दोनो ने भी कुछ ज्यादा ही चढा ली थी ।

बुआ ने ढेर सारा पुलाव, खीर और गोश्त पकाया था ।

अहमद ने बुआ को छेडते हुए कहा, 'कुछ भी हो, बुआ, तू लाजवाब है । इतना लजीज गोश्त बनाती है । तूने हुरफाना की झुटैया पकडकर इतने जोरो से लगी मारी थी कि बेचारी यहा से नौ-दो ग्यारह हो गयी ।'

बिहारी नशे मे बुआ की प्रशसा करते हुए शायरी के अदाज मे बोला, 'बुआ, तेरी आखे बडी-बडी । तू फूल भी है और सुनहरी फुलझडी ।'

अहमद और बिहारी जोरो से हस पडे । बुआ अपनी आखो में दोनों के प्रति कुछ प्रेम, कुछ तिरस्कार लिये हुए बोली, 'अरे, शैतानो हटो, भागो यहां से! मेरे साथ मसखरी करते हो ।'

तभी धम् से कोई चीज गिरी थी । चीज नही गिरी । दरवाजा खुला था । तीनों एकाएक सहम गये । हैदर नशे मे धुत कमरे के दरवाजे पर खडा था । उसके एक हाथ में बोतल थमी थी । अत्यधिक नशे के कारण उसका शरीर झूम रहा था । उसकी आरक्त आखो में प्रतिहिंसा, घृणा और आक्रोश की ज्वालाएं धधक रही थी । वह दो-तीन कदम आगे बढ़ा । पास में कुर्सी पडी थी । वह उस पर बेतरतीब पसर गया । पांवों को सीधा फैला लिया । हाथ मे थमी दारू को मुह से लगाया और एक सांस में बोतल खाली करते हुए उसे जोरो से बुआ की ओर फेंक दिया। बुआ तेजी से परे हट गयी । बोतल सामने की दीवार से जा टकरायी । बिहारी और अहमद सकते मे आ गये । बुआ भय के मारे कापने

लगी ।

हैदर ने रौबीले स्वर में बुआ से पूछा, 'बुआ, तुम मेरे निकाह पर मौजूद थी न ? ओ मेरी बीवी की खाला ! मेरी बुआ । मेरी बु - आ - आ. ।' वह पागलो की तरह हंसने लगा और हंसते-हंसते ही अचानक खामोश हो गया । उसका चेहरा तन गया ।

अहमद, विहारी और बुआ सास रोके अगले क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे । सरदार के गुस्से से वे तीनों परिचित थे । गुस्से में वह कुछ भी कर सकता है । पर सरदार उस क्षण तीनों में से किसी से बिना कुछ बोले कुर्सी पर बैठ गया । वह उन तीनों को डर से कापते हुए देखकर सायास हंस पड़ा । फिर अपनी हंसी रोकते हुए गभीर हो गया । अचानक ही मुह पर तेजी से आयी गंभीरता पर खूखार-क्रूरता घिर आयी ।

उसने अहमद को हुक्म दिया, 'शाम को मुशीगज चलने का इतजाम करो, सुना । जीप मे पचास गैलन पेट्रोल भरवा लो । फुल टंकी । खाने-पीने का सामान भी रख लेना ।'

एक दिन जुबेदा के बार-बार आग्रह करने पर गीता ने बताया था । 'हैदर मिया के ही कैंप से मै बचकर भागी थी ।' कहते-कहते गीता की आखे सजल हो उठी। गला रुंध गया । कुछ क्षण अपने को संयत करती रही और फिर बोली, 'तुझे दु ख होगा, जुबी । पर यह कितनी बडी अनहोनी है । विश्वास नहीं होता कि ऐसा कुछ जीवन मे घटित हो सकता है । मैं और तुम कॉलेज के दिनो में क्या-क्या सुनहरे सपनो का ताना-बाना बुना करती थी । न हमारी पढ़ाई पूरी हो सकी और न ही पूरी हुई जीवन की साधे । सजाये हुए सपने कुसमय की अंधी आंधी में जड़-विच्छिन्न हो गये । मै ठीक-ठीक कह सकती हू, जुबी, कि हैदर मिया पश्चिमी पाकिस्तानी गुडों के हाथो की कठपुतली बन गये है । वे अपनी ही मिट्टी को अपवित्र कर रहे हैं । अपनी ही बहनों के ऊपर अत्याचार कर रहे है । अपनी मिट्टी को कलंकित कर रहे है ।'

'बस-बस, रहने दे, गीतू ! अब और नहीं सुना जाता । मन करता है इस जीवन को समाप्त कर डालू । जितनी प्रार्थना, जितना छल, जितनी आत्मयंत्रणा झेली है मैंने, अब असह्य हो उठा है यह घिनौना जीवन ।' जुबेदा

घुटनो के बीच माथा छुपाकर फफककर रो पडी ।

गीता उसे बाहों मे भीचकर उठाते हुए बोली, 'रो मत, जुबी ! यह विधाता की क्रूर लीला है । नही तो हमने किसी का क्या बिगाडा था भला ? अच्छे-सुदर जीवन की कल्पनाए की और दाता ने आचल मे डाल दिये आसू और यत्रणा ।

मा ने जुबेदा से कहा, 'यह औरत बडी खतरनाक है । जाकर चारो तरफ हमारी बदनामी करेगी । मनगढत बाते करेगी । झूठा प्रचार करेगी ।'

जुबेदा ने मा से पूछा, 'मा, एक बात बताओ । क्या यह औरत मेरी शादी पर बारात मे आयी थी ।'

मा ने बताया— 'हा-हा, आयी थी । लडके की बुआ लगती है । इसी के बहकावे मे आकर मौलाना साहब ने शादी के लिए स्वीकृति दी थी ।'

जुबेदा ने दोबारा मा से पूछा, 'मा, तुझे याद है' मिया ने जब हमारे घर में आग लगायी थी तो उनके साथ यह औरत भी लापता हो गयी थी । कुछ ने बताया था कि दूल्हा एक औरत के साथ भाग गया । यह खूसट.. क्या नाम बताया . हा, रेशमा ही वह औरत थी ।'

मा ने कहा, 'हा, बेटी, पर तू कैसे जानती है यह सब ?'

'मुझे दूसरे ही दिन सब पता चल गया था । अच्छा हुआ, यहा से यह औरत भगा दी गयी । चुडैल कही की ।'

गीता ने जुबेदा को बताया, 'जुबी, यह औरत अब भी हैदर मिया के साथ रहती है । हैदर मिया... ।' बोलते-बोलते हुए सोचकर गीता चुप हो गयी ।

जुबेदा गीता के पास आकर उसका मुह ताकते हुए बोली, 'क्या बात है, गीतू, तू कुछ छिपा रही है ? बता न साफ-साफ ।'

'नही, रहने दे । ओफ ! मेरा सिर दर्द के मारे फटा जा रहा है ।'

'बोल तो सही ! तुझे मेरी कसम !' जुबेदा ने हठ मे गीता की बाह पकड ली ।

'ना, रहने दे ।' गीता ने अनमने मन से कहा ।

'तू पागल मत बन । बता न सही-सही । मुझसे क्या छिपाती है ? हम दोनो हमेशा एक थी । सुख मे, दुख मे एक और साथ-साथ ! .हर आने वाली

मुसीबतों का सामना करेंगे साथ-साथ।

मां अब तक चारपाई पर बैठी कुछ सोच रही थीं। वे बीच में खासने लगतीं। खासी को दबाते हुए वे अपने कमरे की ओर चली गयीं, पर उनकी आंखों से आंसुओं के तार टूट-टूटकर उनके कपोलों पर चू रहे थे।

जुबेदा मां को सांत्वना देने के लिए तेज कदमों से चलकर आयी। गीता भी पीछे-पीछे चली आयी।

मां बोलीं, 'गीता बेटी, जुबेदा की तरह ही तू भी मेरी बेटी है। मैं एक ही सलाह तुम दोनों को देना चाहती हूं। देख, बेटी, आदमी जीवन में अच्छे जीवन की इच्छा करता है, परंतु यदि भाग्य की मार से बुरे दिन आ जायें, तो जीवन में आंसू बहाकर, निराश होकर, थककर या हार मानकर भविष्य की आशाएं त्याग देना कायरता है। जीवन में अस्तित्व की लड़ाई जन्म से मरने तक निरंतर चलती रहती है। जीवन को आंसुओं के पैमाने से नहीं, बल्कि हिम्मत और जिंदादिली से नापना चाहिए। मैं तुम दोनों से भी यही चाहूंगी।'

मां को जोरों की खासी आयी। इस बार वे काफी देर तक खासती रहीं। उन्हें कै हुई और कै में ढेर सारा लाल-काला रक्त गिरा।

जुबेदा ने घबड़ाकर गीता से कहा, 'गीतू! देख तो मां कैसी हो रही हैं। हाय, क्या करूं? हे ईश्वर, तू ही हमें सहारा दे!' उसकी आंखें सजल हो उठीं।

मां हांफते हुए अशक्त कदमों से चलकर बिस्तर पर लेट गयीं। उनकी सांसें तेज चल रही थीं। खासते-खासते वह बुरी तरह हांफ रही थीं। खासी कुछ देर के लिए बंद हो गयी। उन्होंने कहा, 'जुबी बेटी! तुम लोग कुछ खा लो। काफी देर हो गयी। सवेरे भी नाश्ता नहीं किया।'

'ना, मां! अभी भूख नहीं है। तुम्हारे लिए, सूप बनाकर लाती हूं।'

'क्यों री, तुम दोनों तो भूखी रहोगी और मुझे सूप पिलाओगी?'

जुबेदा के कुछ बोलने से पहले ही गीता ने कहा, 'मां, हम तीनों कुछ-न-कुछ खा लेंगे। चल, जुबी! अच्छा, तू यहीं बैठ, मां के पास। मैं सूप बना लाती हूं। फिर पूछा, 'गीली खिचड़ी बना लूं? आज तो बाजरा आया नहीं। हड़ताल के कारण बाजार कई दिनों से बंद है।'

मा ने उसे अपने पास बुलाया । फिर गीता का मुह ताकते हुए बोली, 'बेटी, जुबी ने बड़ी यातनाएं सही है । इसके भविष्य के बारे मे सोचते हुए, पता नही क्यो, मेरी आखो में आसू आ जाते है । इसका आदमी इतना खराब होगा, मैने कभी कल्पना भी नहीं की थी । जब उसने घर मे आग लगायी थी, तभी मै समझ गयी थी, आग हमारे घर मे नही, हमारी किस्मत मे लगायी गयी है।'

जुबेदा उठकर मां का सिर दबाने लगी । फिर बोली, 'मां, तू चिंता मत कर । सब ठीक हो जायेगा । हां, याद आया । तेरी दवा खाने का समय हो गया है ।' जुबेदा ने आखो के इशारे से गीता को कहा कि वह किचेन में जाकर कुछ बना ले ।

उस समय दोपहर के एक बज रहे थे । उसने मेज पर पड़ी दवाइयों में से 'विकोसिल' की दो गोलिया लेकर मा को खिला दी और गिलास में पानी लेकर बायें हाथ से मा सहारा देकर उठाते हुए, दाहिने हाथ मे थमे गिलास को मां के होठो से लगा दिया ।

दवा खाकर मा लेट गयी तो जुबेदा ने कहा, 'अब तू थोड़ी देर आराम कर ले । मै किचेन मे जाती हू । गीता परेशान हो रही होगी ।'

मा ने कहा, 'बेटी, कुछ पैसे अलमारी मे रखे है, ले लो । यह लो ।' उन्होने आचल खींचकर चाभी का गुच्छा खोला । फिर उसे जुबेदा की ओर बढाते हुए बोली, 'अब इसे अपने ही पास रखो ।' बोलते-बोलते वे बुरी तरह खासने लगीं ।

25 मार्च, 1971 को बगबंधु की गिरफ्तारी के साथ पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ता भूमिगत हो गये थे । सेना की क्रूरता के कारण पूर्वी पाकिस्तान में त्राहि-त्राहि मच गयी थी । मार्शल-लॉ प्रशासन की सैनिक कार्यवाही द्वारा शांति और सुरक्षा बनाये रखने के पर्दे के पीछे आम लोगो के प्रति घृणा, प्रतिहिंसा और 'सबक सिखाने' का कुकृत्य आरभ हो चुका था । कौमिल्ला, जैसोर, नारायणगंज, चटगांव, ढाका आदि शहरों से लेकर गाव-गाव में अवामी पार्टी के कार्यकर्त्ताओ तथा बुद्धिजीवियों की हत्या होने लगी । बगबंधु

के प्रति वफादार नागरिकों के घरों को जला दिये जाने तथा औरतों पर सामूहिक बलात्कार तथा हत्याकांड से सारी दुनिया में क्षोभ की लहर फैल गयी। अस्सी लाख लोग बेघर होकर नृशंस मौत, भूख और अत्याचारों से बचने के लिए अपने बच्चों, स्त्रियों के साथ पश्चिम बंगाल, आसाम, त्रिपुरा की ओर भागने लगे। सड़कों पर, स्टेशन-प्लेटफार्म पर शरणार्थी शिविरों में शरणार्थियों की भीड़ बढ़ने लगी। हर तरह के यातायात साधनों के माध्यम से लोग भाग रहे थे। असहाय, अपंग, बूढ़े, जिनकी आंखों में सेना द्वारा किये गये निर्मम अत्याचार के भयावह दृश्य और बेबस आंसू थे, घिसट-घिसटकर आत्म-रक्षार्थ सुरक्षा की खोज में भाग रहे थे। वे स्त्रियां, जिनके पति-मां-बाप स्वजनों के सामने ही उनकी इज्जत लूटी गयी थी, नये आश्रय की खोज में भाग रही थीं। इस भगदड़ में वे बूढ़े माता-पिता भी थे, जिनकी बहू-बेटियों को उनकी आंखों के सामने नंगा कर सामूहिक बलात्कार किया गया था और गुप्तांगों में रायफल डालकर नृशंस हत्याएं कर दी गयी थीं। घर-परिवार से छूटे असहाय लावारिस बच्चे भीड़ में भूख-प्यास से रोते-सिसकते चल नहीं पा रहे थे। उनके कोमल, नंगे पांव पथरीली सड़क की चुभन को झेल नहीं पा रहे थे। कुछ बच्चों के पांवों से रक्त बह रहा था और वे अपनी हथेलियों में बहते हुए आंसू पोंछ रहे थे। इस प्रकार भागते हुए लोगों के चेहरे भय और आशंका से पीले पड़ गये थे। शीघ्र ही किसी सुरक्षित स्थान पर आश्रय की खोज की तीव्र इच्छा लोगों के थके पांवों में एक नया जीवन, नया जोश पैदा कर रही थी। बूढ़े अपनी छड़ी का सहारा लेकर तेज चलने की कोशिश में हांफ रहे थे। छोटे बच्चे, जो भूख से चल नहीं पा रहे थे, मां-बाप की झिड़कियां सह रहे थे। अधिक मचलने पर माताएं उन्हें बेवजह पीट रही थीं। उनका हाथ पकड़कर तीव्र गति से चलती हुई उन्हें घसीट रही थीं। अपने आगे बढ़ते जाते पति या बड़े-बूढ़े को आवाज लगाकर, कुछ देर ठहरकर सुस्ता लेने, पानी पीने या कुछ खा-पी लेने के लिए आग्रह कर रही थी। उस समय व्यक्तिगत भूख-प्यास, सामूहिक आत्म-संकट बन गयी थी। कुछ क्षण रुककर खा-पी लेने या खाने-पीने लायक जो कुछ भी मिल सके, जुटा पाने का समय ही कहां था? सभी का एक ही गंतव्य था। जितनी जल्दी हो सके, पूर्वी पाकिस्तान की सीमा से बाहर, निरापद स्थान पर पहुंचकर आश्रय की खोज करना। बच्चों की

भूखी-प्यासी- रोती आवाजें, उनका बिलखना, घायलों की कातर-वेदना से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गयी थी आत्मरक्षा की चिंता । आश्रय की खोज । वे अपना देश, अपनी जमीन, घर-गांव छोड़कर भारत की सीमा की ओर भाग रहे थे । उनके दिमाग में यह बात स्पष्ट थी कि जो कुछ छोड़कर वे जा रहे है या छोड़े जाने पर बाध्य हुए है, वह फिर वापस मिलने वाला नहीं । फिर भी उनका निश्चय था कि इस यातना-शिविर से उनकी प्राण-रक्षा, अस्तित्व-रक्षा, सम्मान-रक्षा भारत में ही संभव है ।

सभवत दुनिया में जर-जमीन, औरत से बढ़कर आदमी की अपनी जिजीविषा और आत्ममर्यादा होती है । पहले और दूसरे महायुद्ध में लाखों लोग बेघरबार होकर, नये जीवन, नये आश्रय के लिए आत्मसघर्ष करते रहे । दूसरे देश में शरण लेकर नये जीवन का प्रारभ करते रहे । यहूदी जाति ने सबसे अधिक बलिदान दिया और आज वह दुनिया की सर्व सपन्न शक्तिशाली जाति है । इतिहास गवाह है, 'सोनार बगाल' के लोगों ने विश्व की किसी भी कौम से कहीं अधिक बलिदान दिया है और इतिहास साक्षी है कि आत्ममर्यादा, संस्कृति और भाषा के लिए असख्य लोगों का बलिदान कभी भी व्यर्थ नहीं जाता । अपनी जमीन से विच्छिन्न, उजड़े, विस्थापित, अभागे लोगों के जीवन में नया प्रभात आता ही है । सुख-समृद्धि का नया सूरज कभी-न-कभी शरणार्थी जीवन को ज्योतिर्मय करता ही है । उनके आत्म-सम्मान का गौरव नया कीर्तिमान स्थापित करता ही है । सोनार बंगाल की भूमि पर न जाने कितने दुष्कृतियों के अत्याचारों से घिर काली आधी के बीच नये जीवन, नये विश्वास, नयी आशाओ की कोमल लतरें टूट-उजड़कर तहस-नहस होती रहेंगी । अभी सैकड़ो वर्ष लगेंगे, इस टूटे-उजड़े जीवन को सभालने, नया रूप देने मे । बगला देश को फिर से नवनिर्मित करने में ।

विस्थापित आदमी अपने सिर पर त्रासद क्रूर स्थितियों का बोझ उठाये चलता रहता है । नये जीवन के साथ आत्मसात् करने की कोशिश में पुराने संदर्भों को न भुला पाने की असमर्थता, उसके मस्तिष्क को अधड़ में उजड़े हुए छप्पर-घर जैसा बना जाती है । जहां उसके अतीत छप्पर-घर में दीवारें होती हैं, दरवाजे और खिड़कियां होती हैं, परतु छत के नाम पर सिर्फ नीला मुक्त आकाश होता है और उसका वर्तमान बिना छत के मकान के बीच असुरक्षित

रहता है । वह अतीत को भुला नहीं पाता और भविष्य को असुरक्षित महसूस करता हुआ, वर्तमान के संघर्षों में उलझकर अभाव, असंतोष और पीड़ा के बीच आहत-मन लिये संघर्ष करता रहता है । अस्तित्व के ऊबड़-खाबड़, मग्न रास्ते पर लहूलुहान चलता है । चलना ही चाहिए । यही अस्तित्व के बचाव का तरीका है । विस्थापित जीवन अमानवीय संस्कार सृजित करता है। इसी अमानवीय संस्कार के साथ संघर्ष कर रहे लाखों पूर्वी पाकिस्तान के, बंगाली जहां कहीं भी विस्थापित होकर गये, वहां नये जीवन का प्रारंभ किया। परंतु मस्तिष्क में अतीत में झेली गयी यातनाओं और अनिश्चित भविष्य के सपनों के बीच नये जीवन जीने की कठिन परिस्थितियों ने उनके संपूर्ण जीवन पर उदासी और कुंठित आत्मबोध के संस्कार आरोपित कर दिये।

आतंक, भूख और भयावह स्थितियों के बीच नये जीवन-आश्रय की खोज में चलते हुए असंख्य स्त्रियों, पुरुषों, वृद्धों की भीड़ देखकर कोई भी पूछ सकता था—कि क्या इस शताब्दी में सभ्यता और अस्त्रों की होड़ के साथ इस धरती पर असहनीय अमानुषिक अत्याचार भी चलता रहता है । स्वेच्छाचारी राजनीति लोगों से उनके आत्मीय, उनके घर, उनकी आत्म-मर्यादा, उनका सर्वस्व छीनकर अनिश्चित जीवन जीने के लिए बाध्य कर देती है । राजनीति की नग्न क्रूरता लोगों को उनकी संस्कृति, उनके धर्म, उनकी भाषा, उनकी स्वतंत्रता से वंचित कर उन्हें अपने देश, अपनी जमीन से अलग कर बेसहारा, असहाय अवस्था में छोड़ देती है । राजनीति अपनी महत्त्वाकांक्षा को बनाये रखने के लिए हर विरोध को जड़-विच्छिन्न करती आयी है । आह ! यह कैसा अन्याय है । कैसा अत्याचार है । निरीह नागरिकों के रक्त से अंधी राजनीति के वृक्ष को सींचना और राष्ट्रवादी, धार्मिक नारे लगाना, मात्र प्रवंचना को दुहराने की अमानवीय प्रक्रिया है । इस अराजक राजनीति के वृक्ष की छाया में विस्थापित लोगों को आश्रय तो नहीं मिला, हां, उनके बलिदान ने एक नये देश को जन्म दिया और जन्म दिया एक नयी प्रतिज्ञा, नये आत्मविश्वास को, जिसके लिए पूर्वी बंगाल के लोगों को इतिहास सदा स्मरण करेगा । इस वृक्ष-बीज में अभी अंकुर नहीं लगे, छाया देने की बात तो दूर रही । पर इस सोनार बंगाल की वसंत-वाही शस्य-श्यामला के बीच जनमानस की शुभेच्छा के उगे वृक्षों ने

दुखी-असहाय लोगों को यथेष्ट छाया दी है । स्वतंत्र बंगला देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले उन देश-भक्तों को आने वाला समय कभी भूल नही पायेगा । कभी भुला नही सकता ।

सेना के साथ हुई मुठभेड के बाद अमर ने निश्चय किया कि देश में एक मजबूत सगठित मोर्चा होना बहुत जरूरी है । उसने मुक्ति-सेना को अच्छे रूप में सगठित करने का काम शुरू कर दिया । विस्थापितों के लिए उसने जगह-जगह कैंप लगाये । आवश्यक दवाइयां, रोटी, कपडो का प्रबंध किया । पर दिन-प्रतिदिन शरणार्थियों की बढती हुई भीड के सामने उसके सारे प्रबंध कमजोर पडते जा रहे थे । वह स्वयं गाव-गाव कपड़े, बर्तन, चावल जुटाने के अभियान में मुक्तिवाहिनी के स्वयं सेवको के साथ जुट गया था ।

उस दिन दोपहर के एक बजे थे । नारायणगज सडक पर जीप द्वारा अमर तीन मुक्ति सैनिकों के साथ रसूलपुर गाव से चदा इकट्ठा कर मुशीगज की तरफ जा रहा था । उसकी जीप के आगे एक स्कूटर पर पीछे की सीट पर बैठी लडकी कुछ जानी-पहचानी-सी लगी । जीप अमर चला रहा था । उसने ओवरटेक करके जीप को स्कूटर के सामने रोक दिया । जीप से उतर पडा । उसके साथ अन्य मुक्ति सैनिक भी नीचे उतर पड़े ।

स्कूटर की पिछली सीट पर बैठी लडकी को देखकर वह खुशी से चीख पडा, 'अरे, जुबी, तुम ।'

जुबेदा आश्चर्य से अमर के चेहरे को देख रही थी ।

'अमर भैया, आप !' खुशी से उसकी आखों में आंसू आ गये ।

डॉक्टर अम्लान मिश्रा कभी अमर को, कभी जुबेदा को जिज्ञासु भाव से देख रहे थे ।

जुबेदा ने सोचा, गीता के बारे में अमर से सब कुछ बता दे, पर दूसरे ही क्षण उसने निश्चय किया कि अमर को आश्चर्य में डालकर देखा जाये । उसने अमर से पूछा, 'भाई जान, कहां आक्रमण की तैयारी हो रही है ?'

अमर की पोशाक किसी मिलिटरी ऑफिसर से कम न थी । हरे रंग की खाकी वर्दी । सिर पर सैनिक टोपी । कंधे से लटकती स्टेनगन । कमर में चमड़े

की मोटी पेटी । एक तरफ पिस्तौल तथा दूसरी ओर करौली टंगी थी । उसके पाकेट के ऊपर 'कर्नल अमर चौधरी - मुक्ति वाहिनी' लिखा पीतल का नाम पट्ट लगा था । स्वस्थ, सुंदर, लंबे कद पर फौजी वर्दी खूब फब रही थी ।

उसी के साथ अन्य मुक्ति सैनिक भी सेना के सिपाही लग रहे थे । उनके कंधों से लटकती हुई राइफलें थी ।

अमर ने जुबेदा को बताया कि उसका मिशन लोगों को पाकिस्तानी हमलावरों से बचाना है । गांव-गांव वह शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए काम कर रहा है । उसने साथ वाली महिला से जुबेदा का परिचय कराया, 'ये लड़की....पहचानती हो इसे ?'

'अरे ! तुम ! सईदा ? फौजी पोशाक में तो मैं तुम्हें कोई हसीन छोकड़ा समझ रही थी । 'जुबेदा ने खुशी से चीखते हुए कहा । यहां से थोड़ी दूर मुशीगंज गांव है । मेरी मां और मैं रहती हूं । मां बहुत बीमार है । डॉक्टर को लेने आयी थी । ये डॉक्टर अम्लान मित्रा हैं । बड़े ही रहमदिल और नेकदिल इंसान ।'

डॉक्टर मित्रा ने अमर से हाथ मिलाया ।

जुबेदा ने डॉक्टर मित्रा से कहा, ' ये अमर चौधरी क्रांतिकारी नेता हैं।'

डॉक्टर मित्रा ने साश्चर्य कहा, 'अच्छा, तो आप ही अमर चौधरी हैं ? नानापुकुर में फौज के साथ संघर्ष के नायक । आपको बंगला देश के डॉक्टरों की ओर से अभिवादन !' नतमस्तक होकर डॉ. मित्रा ने कहा और जुबेदा से बोले, 'अच्छा, अब देरी करना ठीक नहीं । पहले रोगी को देखा जाये । अमर बाबू का भी अधिक समय लेना अच्छा नहीं ।'

अमर ने जुबेदा से कहा, 'एक-दो गावों में चंदा इकट्ठा करने के बाद किसी भी समय मां को देखने आ जाऊंगा ।'

जुबेदा सईदा के गले मिलते हुए रो पड़ी, 'बहन ! तूने आखिर अपनी मंजिल पा ली । मैं तो दुखों के समुंदर में गोते ही लगाती रही ।'

सईदा अपने को भावुकता से बरबस रोकती हुई बोली, 'जुबी, तू या मैं सभी इस यातना-शिविर में संघर्ष कर रहे हैं । गुड लक ! अलविदा ।'

चलते-चलते जुबेदा ने सईदा से कहा, 'तुम मेरे घर जरूर आना और हां,

अमर भाई जान का ख्याल रखना ।'

अमर अपनी जीप पर बैठ गया । जीप स्टार्ट हुई और आगे की ओर सडक पर बढ गयी । डॉक्टर का स्कूटर भी मुशीगज गाव की ओर तीव्र गति से चल पडा और उससे भी तीव्रगति से भागने लगी जुबेदा के मन-मस्तिष्क में कॉलेज के दिनों की यादे । अमर, गीता, सईदा_ । उसने सोचा, गीता के बारे में अमर से बता देना चाहिए था । उसे अपने ऊपर ग्लानि हो आयी ।

युद्ध की घोषणा से लोग आतकित थे । घोषणा होने के पूर्व युद्ध तो कब का प्रारभ हो चुका था । भारत ने मुक्ति सेना को समर्थन देने की घोषणा कर दी । पूर्वी पाकिस्तान को 'बंगलादेश' के रूप में सार्वभौम, स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए वचनबद्ध हो उठी । भारत की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओ पर घमासान युद्ध प्रारभ हो गया । नवबर के दिन थे । आकाश में युद्धक विमान मडराने लगे। नित्य प्रति साइरन की आवाजों से लोग भय-आतक और असुरक्षा की भावना से भरकर सुरक्षित स्थानों की खोज मे भागने लगे ।

पाकिस्तानी बम-वर्षक विमानों ने जम्मू, जयपुर, जालधर, अमृतसर, अगरतल्ला आदि कई ठिकानो पर बमबारी की । भारत ने भी कराची, रावलपिडी, लाहौर, ढाका, टीटागंज आदि स्थानो पर जवाबी हमले किये । दोनों देश एक-दूसरे को पराजित करने के लिए अपनी-अपनी शक्ति परीक्षा में लग गये ।

पहले और दूसरे महायुद्ध के बीच देखा गया था कि युद्ध मे सलग्न देशो के बीच पूर्व-सधियां युद्ध के समय मानी नहीं जातीं । 1971 के युद्ध में भी भारत अपनी आकाश-सीमा पर पाकिस्तानी जहाज पूर्वी पाकिस्तान यानी बंगला देश क्यों जाने दे । अतत पाकिस्तान की ताकत फौजी साज-सामान की आपूर्ति मे विलब के कारण क्षीण होने लगी । उसकी सेना आवश्यक सैनिकों तथा सामानो के अभाव में पंगु हो गयी । बंगलादेश की जनता 1952 के भाषा-आंदोलन के कारण पश्चिमी पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध हो गयी थी । इस विरोध के पीछे पाकिस्तान के शासकों की अलगाववादी, बंगला विरोधी राजनीति थी । वे बंगला भाषा और बंगाली संस्कृति के विरुद्ध थे क्योंकि वे

उर्दू भाषा को अधिक महत्त्व देना चाहते थे । इसी कारण शेख मुजीब को 1970 के आम चुनाव मे बहुमत मिला । पर उन्हें सरकार नहीं बनाने दिया गया । पग-पग पर बाधाएं डाली गयी । कभी स्थिति ठीक न होने का सहारा लिया गया और कभी प्रशासनिक असुविधाओं को बीच मे ला खड़ा कर दिया जाता । पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के स्वतंत्रता-प्रेमी, प्रजातांत्रिक प्रणाली मे विश्वास करने वाली जनता, लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी शेख मुजीब के पक्ष मे थे । पश्चिमी पाकिस्तानी शासक कभी भी पूर्वी पाकिस्तानी बगाली नेता के हाथ मे पाकिस्तान की बागडोर थमा देने को तैयार नही थे । समझौते कराने के प्रत्येक प्रयत्न असफल हो गये । पाकिस्तानी प्रशासन इन समझौतों के बीच उलझाए रखकर अधिक समय चाहते थे । पूर्वी पाकिस्तान मे सभावित विप्लव और गृह-युद्ध की स्थिति से निपटने के लिए सेना आवश्यकता से अधिक भेजी जा रही थी । सरकार ने 'आवामी लीग' के नेताओं, समर्थकों, बगलादेश का नारा लगाने वाले, साधारण नागरिको, बुद्धिजीवियों के विरुद्ध दमन की नीति अपना ली । ढाका विश्वविद्यालय मे सैकड़ों, प्राध्यापकों, छात्रो की हत्या कर दी गयी । बुद्धिजीवियों को खोज-खोजकर मौत के घाट उतारा जाने लगा । खुलेआम औरतो के साथ सामूहिक सभोग, अत्याचार, अमानुषिक बर्बरता की पिशाच-लीला शुरू हो गयी और शुरू हो गयी पूर्वी पाकिस्तान के पतन और विभाजन की कहानी । वातावरण 'जय बगला' के नारों से गूंज उठा । और मुक्ति सैनिको के होठों पर प्रतिध्वनित हो उठा । पवित्र-पावन सगीत—ओगो आमार सोनार बागला ! आमि तोमाय भालो वासी । भारत की सहायता से उनमे दुगुनी शक्ति आ गयी। स्थल, वायु, जल—तीनों सेनाएं युद्ध मे कूद पड़ीं । जैसोर, नारायणगज, कौमिल्ला, टीटागज, अखौरा, मैमन सिंह सभी स्थानो पर भारतीय सेना के साथ लड़ रही मुक्ति वाहिनी का अधिकार हो गया । ढाका को चारो ओर से भारतीय सेना ने घेर लिया । अब पूर्वी पाकिस्तान के प्रशासकों के आगे सिवाय आत्म-समर्पण के कोई रास्ता नहीं बचा था । 14 दिनों के युद्ध के बाद ढाका रेस-कोर्स मैदान में पाकिस्तान के एक लाख पंद्रह हजार सैनिकों ने हथियार डालकर आत्म-समर्पण किया । विश्व के इतिहास में इतनी बड़ी पराजय कभी भी किसी भी देश की नहीं हुई । प्रथम और द्वितीय महायुद्ध में भी इतनी बड़ी

सख्या में सैनिको ने एक साथ आत्म-समर्पण नहीं किया । भारतीय प्रधानमंत्री ने शेख मुजीब की मुक्ति के लिए पाकिस्तानी प्रशासकों के सामने शर्त रखी कि उन्हें तुरंत छोड दिया जाये और उसके बदले में युद्ध-बंदियों को पाकिस्तान को सौंप दिया जायेगा ।

बंगला देश की स्वतंत्र धरती पर पश्चिमी पाकिस्तानी फौज का साथ देने वाले दलाल रजाकारों, बुरे तत्त्वों के हौसले युद्ध समाप्त होने पर ढीले पड गये।

जिस समय पाकिस्तान की पराजय, पूर्वी पाकिस्तान के पतन और स्वतंत्र बंगलादेश की स्थापना का समाचार रेडियो से प्रसारित हो रहा था, ठीक उसी वक्त हैदर अपने आदमियों के साथ मुशीगंज की ओर तेजी से जीप दौड़ाता जा रहा था । जुबेदा और गीता से बदला लेने का भयंकर षड्यंत्र उसे अंदर से मथे जा रहा था । हैदर को मालूम था, अब उसके दिन लद गये हैं । उसके मस्तिष्क में प्रतिशोध की भावना गीता से अधिक, जुबेदा के प्रति थी । उसे साफ-साफ लग रहा था कि जुबेदा के कारण ही उसका जीवन नष्ट हुआ । जुबेदा के कारण ही वह एक गद्दार बना । उसके वैवाहिक जीवन को जिस तरह का आघात लगा था, उससे वह कभी सहज नहीं हो पाया । शादी की रात ही उसने सोच लिया था कि जिस औरत के कारण उसे अपमानित होना पड़ा, उस औरत जाति को वह अपनी काम-कौतुक लीला की सामग्री के रूप में अपनायेगा । वह जीवन भर उस सामग्री का मनमाना उपभोग करेगा । इसी प्रतिशोध की भावना से आहत उसने सैकडों लडकियों की हत्याएं की । उन्हें तरह-तरह की जघन्य यातनाएं दीं । यह सब करने के बाद, जहां उसके अंतर्मन में पाप-बोध या पश्चात्ताप होना चाहिए था, वहां उसे आंतरिक प्रसन्नता और तुष्टि का अनुभव होता ।

जुबेदा अपराधिनी-सी सोचती जा रही थी कि उसने अमर से गीता के बारे में कुछ बताया नहीं । पता नहीं अमर उससे मिलने मुशीगंज आये भी या नहीं । अमर देश के जिस आवश्यक काम में लगा हुआ है, वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण और खतरे का है । किसी भी क्षण वह मुसीबत में पड सकता है । डॉ. मित्रा की

आवाज से जुबेदा के विचारो का ताना-बाना टूटा । उनके यह पूछने पर कि अमर को यह कैसे जानती है, जुबेदा ने बताया हम ढाका विश्वविद्यालय मे साथ-साथ पढ़ते थे । अमर बहुत होनहार विद्यार्थी था । छात्र-यूनियन का मंत्री भी था । सभी छात्रो का हितैषी ।

डॉ. मित्रा ने कहा, 'लेकिन, अभी तो वह काफी खतरनाक रास्ते पर चल रहा है ।'

'हां, पर अमर जैसे महत्त्वाकांक्षी युवक के लिए इसके अलावा और कोई रास्ता नही ।'

स्कूटर तीव्र गति से चला जा रहा था । सामने से आती हुई पयाल ढोती बैलगाड़ी से बचने के लिए डॉक्टर ने स्कूटर को बगल मोड़ लिया, लेकिन धान की पयाल से उनका कंधा टकरा गया ।

वे सकपका गये और स्कूटर पर पीछे बैठी जुबेदा गिरते-गिरते बची।

उन्होने पूछा, 'चोट तो नही लगी ?'

जुबेदा ने कहा, 'नही, डॉक्टर, मै तो आपके लिए चिंतित हो उठी थी कि कही आपको चोट न लग जाये । ये गाड़ीवान अजीब तरह के होते है । पूरी सड़क को खलिहान बना देते है ।'

डॉक्टर मित्रा ने स्कूटर को पहले से कम गति से चलाते हुए कहा, 'इसी तरह की विचाली के अंदर मुक्तिवाहिनी अपने हथियार छुपाकर ठिकानो पर भेजती है । पाकिस्तानी सेना देख ले तो इनमे आग लगा दे । ऐसी बहुत-सी विचाली से लदी बैलगाड़ियो मे पाकिस्तानी सिपाहियों ने आग लगा दी । अब तो खेतों-खलिहानों को सुरक्षित रखना भी मुश्किल हो गया है । खेतो के बीच जासूस छिपे रहते हैं । फौज के दस्ते भी अपने को छिपाकर रखते हैं । परसो रसूलपुर के पास मुक्तिवाहिनी की एक टुकड़ी जा रही थी । अचानक ही खेतों से मशीनगनें चलने लगीं । मुक्ति वाहिनी के कई सैनिक मारे गये । पता चला कि पाकिस्तानी सेना की एक टुकडी खेतों के बीच छिपी हुई थी ? रात में कहीं दूसरी ओर छुपकर भाग गयी । पर जो भी हो, भारतीय सैनिकों की शूर-वीरता के सामने पाकिस्तानी सैनिक बौने लगते हैं ।'

बीच में सड़क कटी हुई थी । डॉक्टर मित्रा ने जुबेदा से कहा कि वह ठीक

से बैठी रहे । उन्होने स्कूटर धीमा कर दिया । कटे रास्ते को होशियारी के साथ पार कर स्कूटर की गति तेज कर दी । सामने ही मुशीगज गाव दिखाई दे रहा था । सडक से कच्चा रास्ता गाव तक जाता है । कच्चे रास्ते पर नारियल, आम और केले के बेतरतीब कतारबद्ध वृक्ष है । लगभग 200 घरो का गांव, जिसमे अधिकाश कच्चे घर, विचाली के छपरैल वाले हैं । दो घर पक्के हैं, जिनके अहाते में आम, कटहल, केले, सुपारी और नारियल के पेड है । उन्हीं दो मकानो मे से एक मे जुबेदा अपनी मा के साथ रहती है । दूसरा मकान लगभग एक महीने से बंद पडा है । पाकिस्तानी फौज ने घर के मालिक सुधाशु साहा की गोली मारकर हत्या कर दी थी, बीस दिन पहले । उनकी एकमात्र लडकी अनुराधा बी. ए. फाइनल मे थी । उसे अपहृत कर फौजी गाड़ी मे उठा ले गये। तबसे मकान वीरान पडा है । दरवाजे पर घर का वफादार कुत्ता ऊंघता पडा रहता है । रात मे मालिक को याद कर जोरो से रोता है ।

जुबेदा ने डॉक्टर मिश्रा से कहा कि वे स्कूटर बडे वाले मकान की तरफ मोड ले । ऊबड खाबड, कच्चे रास्ते पर डॉ. मिश्रा स्कूटर को बडी मुश्किल से चला पा रहे थे । उन्होने बडे मकान के दरवाजे पर स्कूटर रोका । दवाइयो वाला बक्सा 'डिकी' से उतारकर हाथ में ले लिया और जुबेदा के पीछे-पीछे मकान के अहाते के अदर चले गये ।

जुबेदा ने आवाज दी, 'गीता, डॉक्टर बाबू आ गये है ।'

गीता बरामदे मे बैठी रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गौरा' पढ रही थी । वह शीघ्रतापूर्वक उठकर आगन मे निकल आयी । उसने बताया कि मां को कई बार खून की कै हुई है । उन्हें अभी-अभी बडी मुश्किल से नीद आयी है।'

जुबेदा ने डॉ. मिश्रा से गीता का परिचय कराया, 'डॉक्टर साहब, गीता मेरी दोस्त और बहन दोनो है ।'

गीता ने हाथ जोडकर डॉ. मिश्रा को नमस्कार किया ।

डॉक्टर मिश्रा ने कहा, 'नमस्कार करने से नही चलेगा । पहले रोगी को दिखाओ और फिर मुझे कुछ खिलाओ । दिन भर से रोगी ही देखता रहा हूं । अन्न-जल से भेंट नहीं हुई आज ।'

जुबेदा डॉ. मिश्रा को अंदरवाले कमरे मे ले गयी । मां बिस्तर पर गंभीर

निद्रा मे निमग्न थी । डॉक्टर के बैठने के लिए गीता ने कुर्सी लाकर रख दी।

डॉक्टर मिश्रा बैठते हुए बोले, 'रोगी को जगाना ठीक नही । जागने तक प्रतीक्षा करनी पडेगी ।' पर डॉक्टर मिश्रा की भारी-भरकम आवाज से मा जग गयी ।

उन्होने डॉक्टर को, गीता को, जुबेदा को बुझी हुई आखों से देखा और फिर अचानक ही उनकी आखें सजल हो उठी । एक गहरी अतर्पीडा से कराह उठीं ।

वे उठने की कोशिश करने लगीं तो डॉक्टर ने कहा, 'ना, आप उठिए मत, लेटी ही रहें ।'

डॉक्टर मिश्रा के परीक्षा करते समय सासे जोरों से लेते हुए वे बुरी तरह खासने लगी । गीता और जुबेदा उन्हें सहारा देने के लिए आगे बढी, पर मा ने अस्फुट स्वर में जुबेदा का हाथ पकडकर रोक दिया, 'बेटी, अब दवा से कुछ नही होगा । लगता है मेरी पारी आ गयी है । मै कितनी अभागिन हू कि स्वतत्र बंगलादेश मे मर नहीं सकूगी।'

डॉ. मिश्रा ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, 'आप स्वतंत्र बंगलादेश को देखेगी ! स्वतत्र बंगला देश की मुक्ति और बंगबंधु की मुक्ति दोनों ही देखना है आपको, तब कहीं फुरसत मिलेगी ।'

मा के चेहरे पर खुशी की चमक खिल उठी । डॉक्टर ने दवाइयों का बक्सा खोलकर इंजेक्शन निकाला । जुबेदा को गर्म पानी लाने के लिए कहा ।

जुबेदा पानी लाने के लिए जाने लगी तो उन्होने कहा, 'तुम बैठो । तुम्हारी बहन यानी मिस ...क्या नाम बताया था ...गीता जी ! आप थोडा पानी लाइए । जुबेदा जी मां जी का सिर थोड़ा ऊपर थामकर बैठिए या दो तकिये लाकर उनके सिर के नीचे रख दीजिए।'

जुबेदा मा के सिरहाने पडे मोढ़े पर बैठ गयी और मा का सिर अपने दोनों हाथों मे लेकर अपनी गोद में रख लिया । मा को जोरों की खासी आयी । मुह से रक्त निकला । जुबेदा ने उनका मुंह अपने आचल से पोंछ दिया ।

मां का सिर इस तरह गोद मे रखते हुए जुबेदा की आखे सजल हो उठीं । बीमारी ने मा को दुर्बल और असक्त बना दिया था । उनके मुह पर पीलापन छा

गया था और आखें थकी, कांतिहीन, बुझी-बुझी दिखाई दे रही थीं । होंठों पर पपड़ियां जम गयी थीं । गले के नीचे सफेद ब्लाउज पर उल्टियों के साथ गिरे हुए रक्त-छाप थे । कई दिनों से न वे नहायी थीं, न बालों में तेल ही लगाया । उनके रूखे-सूखे केश कंधे के चारों ओर अस्त-व्यस्त फैले थे ।

मां ने अपने कांपते हुए हाथों को ऊपर उठाकर इशारा किया और होंठों में ही बुदबुदायी, 'बेटी, मुसीबत में घबड़ाना नहीं । बाधाओं का हिम्मत से सामना करना ।'

जुबेदा कुछ बोली नहीं । उसकी आंखों से आंसू चूकर मां के मस्तक पर गिर पड़े । जुबेदा ने अपने दुपट्टे की छोर से उन्हें पोंछ लिया । मां ने अपना बायां हाथ उठाकर जुबेदा का हाथ पकड़ लिया । कुछ देर तक ममता भरे स्पर्श से सहलाती रहीं ।

गीता ने गरम पानी से भरी कटोरी लाकर डॉक्टर मित्रा के सामने स्टूल पर रख दिया । डॉ. मित्रा इंजेक्शन की सुई धोने लगे । गीता चुपचाप एक कोने में खड़ी होकर कभी डॉक्टर मित्रा को और कभी जुबेदा और मां को देख रही थी।

मां को फिर खांसी आयी । वे खांसते-खांसते हांफने लगीं । हारी-थकी निश्वास निकली । फिर उन्होंने कुछ बोलना चाहा पर बोल नहीं सकीं । स्फुट स्वर होंठों के बीच बुदबुदाकर रह गये । उनका हाथ जो अब तक जुबेदा को ममता भरा स्पर्श दे रहा था, स्थिर हो गया । सूनी-सूनी, बुझी-निराश आंखों में असीम ममता और अंतिम विदा के समय की गहरी वेदना घिर आयी । उन्होंने जुबेदा को जैसे अंतिम बार देखा हो ।

जुबेदा मां की ऐसी हालत देखकर बिलखने लगी । गीता बढ़कर जुबेदा के पास जा खड़ी हुई और फिर मां के पांव सहलाते हुए बैठ गयी । मां ने बड़ी मुश्किल से हाथ हिलाकर जुबेदा को चुप रहने का इशारा किया और फिर क्षण भर में सब कुछ समाप्त । उनका सिर एक ओर लुढ़क गया । शरीर स्थिर हो गया ।

जुबेदा ने डॉक्टर मित्रा से अनुनय भरे शब्दों में कहा, "डॉक्टर बाबू, देखिए न ! मां कैसे कर रही है, प्लीज देखिए; जल्दी कीजिए न ।' डॉक्टर ने इंजेक्शन एक ओर रख दिया जैसे उन्हें लग आया हो कि अब इसकी जरूरत नहीं रही ।

मां की नाड़ी देखी । आले से सीने की धड़कन परखी और कुर्सी से उठ खड़े हुए। जुबेदा को भी उठने के लिए कहा । उन्होंने मा को सीधा लिटा दिया । मां ने जिस चद्दर को पेट तक ओढ़ रखा था, डॉक्टर ने उससे मां का मुंह ढक दिया।

जुबेदा के मुह से मर्मांतक चीख निकल गयी, 'हाय मा, तू भी मुझे छोड़कर चली गयी । अब मै कहां जाऊंगी ? कैसे जी पाऊगी ?'

गीता जुबेदा के गले मिलकर सात्वना देती हुई स्वयं भी रोने लगी । दोनों काफी देर तक रोती रहीं । एक-दूसरे को धीरज बधाती रहीं ।

डॉक्टर मिश्रा दोनों को सात्वना दिलाते रहे ।

अड़ोस-पड़ोस खबर फैल गयी—'जुबेदा की मां मर गयी है । बड़ी बीबी मर गयी !' बूढ़ी औरतें सियापा करने जुट आयीं । पूरा घर बिलखती आवाजों से गूंज उठा ।

जुबेदा ने संयत होते हुए डॉक्टर मिश्रा से कहा, 'डॉक्टर, एक बार और देख लीजिए । शायद मा बच जाये । प्लीज डॉक्टर !'

'नही, बेटी, अब कोई चांस नहीं । शी इज डेड !'

डॉ. मिश्रा की आंखें नम हो गयीं । उन्होंने दोबारा बिना कुछ बोले दवाइयों का बक्सा उठाया और शिथिल कदमों से कमरे से बाहर चले गये । जुबेदा डॉक्टर मिश्रा के पीछे-पीछे बाहर तक छोड़ने आयी । फीस देते समय डॉ. मिश्रा ने कहा, 'नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं ।' उन्होंने स्कूटर स्टार्ट किया और गांव के सीमांत की ओर चल पड़े ।

एक निश्चित-सा आधार, जो मा का इलाज कर सकता, जीवित रख सकता था, आंखों के सामने से ओझल होते हुए देखकर जुबेदा के धीरज का बांध टूट गया । उसकी हिचकियां बंध गयीं। गीता उसे बांहों में भरकर रो रही थी । बहुत देर तक दोनों का रोना-धोना चलता रहा फिर जुबेदा ने साहस संजोया । मा को दफनाये जाने की तैयारी में लग गयी । उस सुंदर मां को, जिसकी ममता अभी-अभी उसे साहस से विपदाओं का सामना करने की सीख दे रही थी...उस मां को, जिसे पिता के मरने के बाद जिंदगी सजाने-संवारने के लिए असंख्य कष्ट झेलने पड़े... उस मा को, जिसे वह समूचे दिल से प्यार करती है.... उस मां को, जिसके लिए वह अपने जीवन का

बलिदान भी कर सकती है - उस मा को, जिसने उसे जीवन जीने की सीख दी - उस मा को भला वह कैसे दफना पायेगी ? उसकी आखों से आसू बह रहे थे। भावावेश मे उसने मा के मुह पर से चद्दर हटाकर उनके गालों पर, मस्तक पर, होठो पर आसुओ मे भीगे अनगिनत चुबन अकित कर दिये । अतिम चुबन देते हुए जुबेदा को लग रहा था कि मा के ठडे कपोल, ठडा मस्तक, ठडे गाल, जैसे तुषारमडित परम शातिमय हिमखड हो ।

उसके मुह से निकल पडा, 'मा, मेरी प्यारी अम्मी ! अलविदा, मां ! अलविदा !' कुछ देर तक वह मा को बाहो मे भरे रोती रही । गीता उसे चुप कराने के प्रयत्नो मे स्वय भी रोती जा रही थी ।

पडोस की अन्य महिलाएं और पुरुष आ गये तो गीता और जुबेदा ने उठकर उनके लिए बैठने का प्रबध किया । बरामदे मे औरतों के लिए चटाइया बिछा दी गयी ।

जुबेदा को स्मरण हो आया कि मा ने एक दिन उससे कहा था, 'बेटी, मेरे मरने पर अपने अब्बाजान की कोई तस्वीर मेरे पास रख देना ।'

उसने दीवार से मौलाना साहब का चित्र उतारकर मा के सिरहाने रख दिया । उसकी आखे मा के चेहरे पर फिर जा टिकी । पल भर के लिए उसे लगा, मा जैसे कुछ कह रही है 'बेटी, रो मत । बेटी, दुनिया मे सिर उठाकर जीना है तो हर कदम हिम्मत और बुद्धिमानी से आगे बढाना ।' भावावेग मे उसकी हिचकिया फिर बध गयी । चित्र के पास सिर रखकर वह रोती रही । फिर साहस बटोरते हुए उसने गीता से कहा, 'गीतू, जनाजे की तैयारी शुरू करनी होगी ।'

मा को दफनाने मे शाम के पाच बज गये । डूबते हुए सूर्य की रक्तिम किरणें मा को अतिम विदा दे रही थीं । मा की सीखों को अपने जीवन के प्रत्येक क्षण से जोडते हुए जुबेदा ने बडे आत्मसयम का परिचय दिया, पर कब्र के ऊपर मिट्टी डालते हुए वह एकबारगी रो पडी । गीता के साथ वापस लौटते हुए उसे लग रहा था, जैसे मां से बिछुडकर वह जी नहीं पायेगी । उसके सामने जीवन का अब कोई खास मकसद या उद्देश्य नहीं रह गया था । पिता के मरने के बाद मा का ही सहारा था और वही उसके दु ख-सुख की सरक्षिता थीं । उनके उठ जाने के बाद उसे सभी तरफ अधेरा-ही-अधेरा दिखाई दे रहा था । दुर्भाग्य के

इस अंधेरे में कहीं कोई प्रकाश की किरण नहीं । उसने अनुभव किया कि इंसान का सबसे बड़ा प्राप्य वह है, जिसे पाने के लिए वह जीवनपर्यंत संघर्ष करता है । परंतु मेरे जीवन का प्राप्य दुर्भाग्य ही रहा । वह दुर्भाग्य से हमेशा लड़ती रही। कॉलेज के दिनों में कैसे-कैसे सुनहरे पंखों वाले सपने देखा करती थी । पर आह! क्रूर समय ने उन सपनों के पंख काट दिये और उन्हें आत्मघातक स्थितियों में बेसहारा छोड़ दिया । उसे अमर गहरे से याद हो आया ।

अचानक उसे ख्याल आया, आज अमर से हुई मुलाकात के बारे में गीता से बताना भूल गयी । अमर से भी वह गीता के बारे में कुछ भी बता न पायी । उसके अंतर्मन ने उसे धिक्कार दिया—'यह अच्छा नहीं किया तूने ।'

उसने गीता का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'एक गलती के लिए तू माफ कर देना, गीतू ।'

गीता कुछ समझ नहीं सकी । उसकी बड़ी-बड़ी आंखें जुबेदा के चेहरे पर विस्मय और आश्चर्य से टिक गयी ।

जुबेदा ने देखा, गीता का चेहरा मुर्झाया हुआ है । आंखों में शून्यता घिरी है ।

जुबेदा ने बताया, 'मैं डॉक्टर मिश्रा को लेकर आ रही थी । रास्ते में अचानक अमर से मुलाकात हो गयी । वह मुक्तिसेना का कैप्टन है । उसने यहां आने का वादा किया है । मैं उससे तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं बता पायी। मुझे माफ कर देना, बहन ! तुम्हारे बारे में इसलिए भी नहीं बताया कि अभी वह मातृभूमि की मुक्ति के लिए, जिस पवित्र कार्य में बुरी तरह व्यस्त है, तुम्हारे बारे में सोचकर कहीं विचलित न हो जाये । पर शायद यह मेरी भूल है। अमर को मैंने ठीक से पहचाना नहीं । दूसरी बात यह भी मैंने सोची थी कि उसके अचानक घर आने पर तुम्हें सुखमय आश्चर्य में डाल देती । पर यह मेरी भूल, मेरी बेवकूफी थी, मुझे माफ कर देना । अब क्या आश्चर्य में डालूंगी तुम्हें? मां को खो दिया । पर तुम्हें और अमर को नहीं खोना चाहती । सोचती हूं, पता नहीं किस तरह के काम पड़ जाये और वह यहां आये भी या नहीं।'

गीता ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह जुबेदा के समानांतर चल रही थी । उसने जुबेदा का हाथ अपने हाथ में कसकर पकड़ लिया ।

गांव की अन्य महिलाएं उन दोनों के पीछे-पीछे चल रही थी । बूढ़े मर्द, जिन्होंने जनाजे को कंधा दिया था, आगे-आगे थे । सभी अपने-अपने घर वापस चले गये । रह गयी दोनों सहेलियां । उस वीरान घर के अंदर-बाहर हर जगह मां की याद बिखरी पड़ी थी ।

रात के दस बजे थे । चारों ओर चीख-पुकार की आवाजें उभर रही थी । जुबेदा और गीता दोनों एक बिस्तर पर लेटी आपस मे बातें करती हुई रुक गयी। दोनों समझ नही पा रही थी कि चीखें क्यों उभर रही है ।

जुबेदा ने कहा, 'शायद पाकिस्तानी सेना उत्पात मचा रही है । हमारे गांव पर फिर अत्याचार होने वाले है ।'

गीता ने सुझाया, 'जुबी, हमे अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाना चाहिए । चलो, बाहर दरवाजे मे अंदर से ताला बंद कर ले ।'

दोनों साथ-साथ दरवाजे तक गयी । ताला बंद किया । फिर उन्होंने घर मे पड़ी ईंटें, पत्थर के टुकडे, लोहे की छड़ें आघात करने वाली जो भी वस्तुएं उपलब्ध थी, एकत्रित किये । बाहर शोर काफी तेज होता जा रहा था । इसी शोर के बीच कोई उनका दरवाजा खटखटाने लगा तो भय के मारे दोनों कांप उठी ।

गीता आतंकित होते हुए बोली, 'हाय । अब क्या होगा ?'

जुबेदा ने संयत होते हुए उसे साहस दिया, 'डर मत, देखते हैं ।'

उसने तरकारी काटने वाली हंसिया हाथ में उठा ली । गीता ने लोहे का छोटा-सा छड़ । *दोनों बरामदा पार कर आंगन मे आ गयीं । अमावस्या की* रात थी । सिवान पर चंद्रोदय हो रहा था । सिवान के पास का आकाश पीला हो गया है । सिउली के सफेद फूल नीचे बिछे थे । फूलों की सुगंध से वातावरण महक रहा था । इसी सिउली के पेड़ के नीचे अक्सर मां रात में आकर टहला करती थी । जुबेदा को लगा, मां जैसे अभी-अभी टहल रही थीं । उसका रोम-रोम सिहर उठा ।

तभी कोई दरवाजा फिर खटखटाने लगा । गीता ने जुबेदा को ठिठककर खड़ी होते हुए देखकर पूछा, 'क्या ? क्या करें ?'

'आ, चल !! देखते हैं ।'

वे दोनों जाकर दरवाजे के पास खड़ी हो गयीं । उनका साहस नहीं हो रहा था कि अंदर का ताला खोलें । जुबेदा ने सोचा — इतनी रात में भला कौन हो सकता है ? फिर दूसरे ही क्षण उसे याद हो आया । अमर भैया ने आने के लिए कहा था—शायद वही हो ।

उसने आवाज दी, 'कौन है ?'

बाहर खटखटाये जाने की आवाज क्षण भर के लिए बंद हो गयी । फिर एक कड़कती हुई आवाज उभरी, 'खोल दरवाजा, हरामजादी, मैं तेरा शौहर हूं। हैदर अली ।'

जुबेदा सहम गयी । आश्चर्य और आतंक से उसने गीता का हाथ कसकर पकड़ लिया । फिर साहस जुटाते हुए उसने पूछा, 'क्या चाहिए ? इतनी रात में इस तरह आने का क्या मतलब है ? मेरा कोई शौहर नहीं। मैं तो उसी दिन जल मरी थी, जिस दिन तुमने मेरे पिता का घर जलाकर खाक कर दिया था । मेरे सपने उसी आग में जलकर राख हो गये थे,' और उसी के साथ जुबेदा बोली— 'चले जाइए यहां से ।'

'साली, कुतिया ! दरवाजा खोलती है या नहीं ?' हैदर दांत पीसते हुए चीखा ।

आवेशजनित क्रोध में कहा, 'नहीं ! नहीं । कभी नहीं !! दरवाजा नहीं खुलेगा । खुदा के लिए आप यहां से चले जाइए । मैं तो लुट चुकी हूं । आज मां भी मुझे अकेला छोड़कर इस दुनिया से चली गयी । मेरे पास अब कुछ भी नहीं बचा । मुझे मत सताइए ।'

हैदर ने सोचा— इस तरह दरवाजा खुलेगा नहीं । दूसरा रास्ता अपनाना पड़ेगा । उसने छल-कपट का सहारा लिया । संयत कोमल स्वर में कहा, 'देखो बेगम ! जो होना था, हो चुका । मैं तुम्हारे पास नारायणगंज से आ रहा हूं । मेरे पीछे पाकिस्तानी रजाकार लगे हैं । मुझे जरा-सी देर के लिए पनाह दे दो । मैं इतना बुरा आदमी नहीं हूं । मैं तुम्हारा कुछ भी अहित नहीं करूंगा।'

जुबेदा हताश होकर बैठ गयी । घुटनों में सिर रोपे रोने लगी ।

गीता ने असमंजस की स्थिति में जुबेदा के सिर पर अंगुलियां फिराते हुए

पूछा, 'क्यों री, खोल दूं ?'

जुबेदा बोली, 'नहीं ! नहीं ! कभी नहीं!! गीता, उस आदमी का विश्वास मत कर ।'

गीता ने मन-ही-मन सोचा, शायद हैदर के मिल जाने से जुबेदा का जीवन सुखमय हो जाये । उसने जुबेदा के हाथ से चाभी लेकर दरवाजे का ताला खोल दिया । टार्च की तेज रोशनी उसके ऊपर पड़ी, तो उसकी आंखें चौंधियां गयीं।

हैदर ने गीता को पहचान लिया, 'तो तुम यहां छुपी हो, मेरी चिड़िया ! अब मजा आयेगा ।'

उसकी विद्रूप, कुटिल हंसी से गीता भय से कांप उठी । तो यही है नर-पिशाच, जो यातना-शिविर में मेरे साथ... ?

हैदर ने गीता की बांह पकड़ ली और उसे अपनी ओर खींचते हुए बोला, 'हरामजादी कुतिया । देखता हूं, अब तू कहां भागकर जाती है।'

जुबेदा उठ खड़ी हुई । उसका चेहरा तमतमा उठा । वह चीखते हुए बोली, 'खबरदार, गीता को एक भी गंदी जुबान मुंह से मत निकालना । अभी तक तो दरवाजा खोलने के लिए गिड़गिड़ा रहे थे और अचानक गिरगिट जैसे रंग बदल दिया ?'

हैदर अब तक अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ चुका था । उसने गीता को एक ओर ढकेल दिया । छुरा निकालकर जुबेदा की ओर बढ़ा । अट्टहास करते हुए बोला, 'तू बड़ी भोली है, मेरी मैना । अब देखता हूं, तुम्हारा वह प्रेमी तुम्हें कैसे आकर बचाता है । वही प्रेमी, जो निकाह की रात तुमसे प्रेम करने आया था । याद है न ? बता कहां छुपा रखा है अपने प्रेमी को । बता, नहीं तो... ।'

गीता समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे ।

जुबेदा तनकर बोली, 'मेरा प्रेमी अगर है भी, तो उससे तुम्हें क्या ? तुम जैसे राक्षस से मैं नफरत करती हूं ।'

'लेकिन मैं तुमसे बेहद मुहब्बत करता हूं, ओ मेरी [illegible] । कमीनी! कुतिया !' व्यंग्य हंसी से हैदर का वीभत्स चेहरा [illegible] लगने लगा । वह जुबेदा की ओर बढ़ता जा रहा था और जुबेदा पीछे हटती जा रही थी पुरे

दरवाजे के बाहर हैदर के आदमी बंदूकें ताने खड़े थे । एक के हाथ में टार्च थी, जिसकी रोशनी जुबेदा के चेहरे को चकाचौंध कर रही थी।

इतनी तेज रोशनी में आंखें मिचमिचाने लगीं । उसने सोचा—यह मेरा शौहर है । इसके साथ मेरा निकाह हुआ था । यह भाग्य का कैसा क्रूर व्यंग्य है कि मेरा पति ही मेरी जान का दुश्मन बना बैठा है । उसने दोबारा सोचा—वह चीखकर गुहार लगाये, परंतु एक जड़ता उसके दिमाग के इर्द-गिर्द मंडराने लगी थी । इस जड़ता के बीच ही, 'अब क्या होगा जीकर', के निर्णय से उसके नेत्र सजल हो आये । भय और विपत्ति के बीच मरण की कल्पना या मरने की दुराशा व्यक्ति की संवेदनाओं को भावुक बना देता है और उसका साहस जवाब देने लगता है । उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि अब वह कोई प्रतिकार नहीं करेगी । देखेगी कि यह अत्याचारी खूंखार राक्षस अब क्या करता है । क्या सजा देता है । परंतु उसके दूसरे मन ने कहा कि वह उससे जी-जान से लड़े और लड़ते-लड़ते ही मौत को स्वीकार करे । पर उस क्षण उसे लग रहा था कि किसी प्रकार का प्रतिरोध करना आत्महत्या के समान होगा । उसने सोचा—इस वक्त अमर भैया आ जाते तो शायद वह बच जाती । उससे अधिक गीता की इज्जत बच जाती । उसने देखा गीता सिउली के पेड़ के नीचे से होती हुई आहिस्ता-आहिस्ता,जीने पर चढ़ने के लिए सीढ़ियों की तरफ भाग रही है ।

हैदर के दिल और दिमाग पर जुबेदा के प्रति जो अंतर्द्वंद्व इतने दिनों से उफन रहा था, वही आज प्रतिहिंसा बनकर खड़ा था । वह समझ नहीं पा रहा था कि एक ही प्रहार से इस नन्ही-सी कोमल, सुंदर औरत को समाप्त कर दे या इसे पकड़कर अपने कैंप में ले जाये और यातनाएं दे ।

उसने चीखती हुई आवाज में कहा, 'बेगम, मैं आखिरी बार पूछ रहा हूं । कौन है वह तुम्हारा प्रेमी, जिसके कारण मेरा जीवन तबाह हो गया ? कौन है वह ? कहां है ? बता जल्दी । नहीं तो तुझे..।' उसने पाकेट से छुरा निकाल लिया ।

जुबेदा ने झूठे आरोप की असह्य वेदना से तिलमिला उठी । उसकी चीख उसके आंसुओं के बीच उभरी थी । ढहते मकान की तरह उसके आत्मसम्मान की एक-एक ईंट जैसे गिरती जा रही थी ।

उन गिरती हुई ईंटों के बीच ही वह बोली थी, 'यह झूठ है, ईश्वर जानता

है, मैं निर्दोष हूं । मेरा कोई प्रेमी नहीं । तुम्हें गलतफहमी हुई है । हे ईश्वर, यह कैसा झूठ है !'

हैदर दोहरे आवेश मे चीखा । जुबेदा के करीब आकर उसकी एक बाह को मजबूत हाथ से कसकर पकडते हुए बोला, 'झूठ! झूठ! कितनी बार झूठ बोलेगी ? तेरी जबान इतनी गदी हो चुकी है कि इसे काट देना ही बेहतर है। बता, आखिरी बार मौका देता हूं, तेरा प्रेमी कहा है ? कौन है ? । मैं उसे जिदा नही छोडूगा ।'

जुबेदा के आत्मसम्मान का मकान अब पूरी तरह से ढह चुका था । वह परास्त हो चुकी थी । बेबसी मे चीखती हुई बोली, 'उस पवित्र ईश्वर की सौगंध खाकर कहती हूं, मै बिल्कुल निर्दोष हूं । मेरा कोई प्रेमी नही । अरे, नासमझ ! मैं तुम्हें कैसे समझाऊ कि मै बिलकुल पवित्र हूं ।'

इस बीच गीता आख बचाकर चुपके से सीढिया चढती हुई छत पर चली गयी और जोरो से गुहार मचाने लगी । हैदर के साथ आये बिहारी और अहमद गीता को पकडने के लिए छत की ओर भागे और हैदर ने जुबेदा को जबरदस्ती पकडकर बाहर खडी जीप मे डाल दिया । जुबेदा अपने को छुडाने के लिए कठिन सघर्ष कर रही थी पर हैदर की बलिष्ठ भुजाओ से वह बाहर निकल नही पायी । बिहारी और अहमद गीता को भी उठाकर ले आये और पीछे की सीट पर पटक दिया । जीप पर पहले से ही कई गुडे बैठे थे, जिनके हाथो में राइफले थीं । गाव में भगदड़ मच गयी थी । 'मारो, पकडो ।' की आवाजें करते लोग जुबेदा के मकान की ओर भागे चले आ रहे थे । हैदर ने पिस्तौल से कई फायर किये, दो बम फेके और चीखती हुई आवाज मे बोला, अगर कोई आगे बढा तो खैर नही, गोली मार दूगा । बमो के धुए के बीच जीप द्रुत गति से गाव की सीमा पार कर पक्की सड़क पर आगे बढ गयी । जीप के पीछे की लाल बत्तिया काफी देर तक दिखाई देती रही । और गाव के लोग असहाय असमर्थ उसका पीछा कुछ दूर तक करते रहे और फिर इस घटना की चर्चा करते हुए वापस लौट आये ।

•

शाम के सात बजे थे ।

अमर अपने दस्ते के साथ रसूलपुर से लौट रहा था । उसे ऑर्डर मिले थे कि वह नारायणगंज जाकर वहां जनरल हुसैनी से मिले और नयी टुकड़ी लेकर तुरंत फतुल्ला चला जाये ।

जीप चल पड़ी तो सईदा ने कहा, 'अमर भाई, रास्ते में जुबेदा से मिल लिया जाये । उसकी शायरी की नोट बुक मिले तो कुछ दिनों के लिए उधार माग लेंगे। लड़ाई-युद्ध से थककर कुछ बदलाव भी चाहिए ।'

अमर ने कहा, 'क्या वह अभी भी शायरी करती है ? तुम्हें उसकी शायरी की बात अचानक कैसे याद आ गयी ?'

सईदा ने कहा, 'हा, भाईजान ! वह बहुत अच्छी शायरा है । पढ़ाई के दिनों में मैं उसकी फैन थी । आपने भी तो कई बार उसकी शायरी की प्रशसा की है ।'

अमर ने मुसकराते हुए कहा, 'फैन तो हम भी थे । सारा ढाका विश्वविद्यालय उसका फैन था । पर न रहे वे लम्हे, न रहे वे जज्बात । करें भी तो क्या कि इक दिल ही हमारा न रहा ।'

सईदा तालियां बजाती हुई बोली, 'वाह ! वाह ! क्या बात है ! भाईजान को उसकी नज्मे अब भी याद हैं । बहुत खूब !'

अमर ने सिर झुकाकर आदाब किया, 'शुक्रिया !'

सईदा उदास हो उठी । बोली, 'अमर भाई, एक बात बोलूं ?'

'क्या ?'

'मैं आज कई दिनों से एक बात सोच रही हू ।'

'बोलो भी क्या है ?'

'गीता की हमने कोई खोज-खबर नहीं ली ।'

इस बात से अमर चिंतित हो उठा । फिर संयत होते हुए बोला, 'खोजने की कोशिशें तो बहुत की, पर कोई सफलता नहीं मिली ।'

कुछ देर तक दोनों उदास खामोशी में डूबे रहे ।

उस खामोशी को तोड़ा सईदा ने, 'मेरा मन कहता है कि वह जीवित है । हम जरूर एक-न-एक दिन उससे मिलेंगे ।'

अमर ने कोई उत्तर नहीं दिया । अनमने भाव से कुछ सोचता रहा।

अमर सईदा के बारे में सोच रहा था—यही लड़की शातिपुर गाव मे मासी के साथ अपनी जिंदगी के क्षण आत्म विक्षोभ और निष्क्रियता में व्यतीत करती थी, पर आज उसमे नया जोश है, नये जीवन की चाह है । वह अपने व्यक्तिगत दुखो को भूलकर आज समग्र देश, जाति, बंगलादेश के मुक्ति सग्राम के लिए काम कर रही है । फिर उसने निष्कर्ष निकाला—इस समय बंगलादेश की जैसी हालत है, सभी लोग चाहे हिंदू हो या मुसलमान बस, एक सपना साकार करने मे लगे है । वह है—बंगलादेश की मुक्ति ! एक स्वतत्र बंगला देश के उत्थान का सपना । जिसमें जुबेदा, सईदा, सभी अपने-अपने दायरों में बंधे हुए शरीक हैं ।

करीमगंज गाव पास आ गया तो उसे जुबेदा की बात याद हो आयी । उसकी मा बीमार है । उसने सोचा काफी दिनो तक दूर-दूर रहेगा । इधर आने का मौका पता नहीं फिर कब मिले । आज और इसी वक्त जुबेदा से मिल लेना ही ठीक रहेगा । सईदा की शायरी की नोटवाली बात भी याद हो आयी। उसने घड़ी देखी । रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे । उसने दोबारा सोचा कि इतनी रात बीते जुबेदा को जगाना क्या ठीक रहेगा ? फिर दूसरे ही क्षण उसने ड्राइवर से जीप आगे से बायी ओर मुशीगज के रास्ते पर मोड लेने के लिए कह दिया । मुशीगज पहुचकर उसे पता चला कि जुबेदा को गुडे उठाकर कुछ ही देर पहले ले गये हैं ।

गाव के एक अधेड़ व्यक्ति ने कहा—'साहब, वे पाकिस्तानी सिपाहियो के भेष में थे । जीप पर आये । गाव की कई लडकियों की इज्जत लूटी । कई घरों से गहने, खाने-पीने का सामान भी लूटकर ले गये । जुबेदा बडी अच्छी लड़की है । अपनी मां के साथ रहती थी । उसकी मा भी कल ही मरी थी । बेचारी बड़ी अभागिन है । उसके साथ एक और लड़की रहती थी । उसे भी ले गये । इस देश में गाव-घर की बहू-बेटियों की इज्जत बचाना मुश्किल हो गया है ।'

यह घटना सुनते ही अमर ने ड्राइवर को जीप घुमाकर नारायणपुर ले चलने का आदेश दिया । उसके मन मे जुबेदा के लिए अतुलनीय सहानुभूति भर गयी ।

नारायणगज से पाकिस्तानी सेना पीछे हट गयी । मुक्तिसेना के हाथ में पूरा शहर आ गया । हैदर के ठिकाने पर मुक्ति सेना ने पहुचकर वहां कैद की गयी लड़कियो को मुक्त किया । हैदर की जीप नारायणगज रास्ते पर तेजी के साथ चलते हुए अचानक रुक गयी ।

दो औरते सडक के बीच खडी होकर उसे रुक जाने का सकेत दे रही थी।

हैदर जीप से उतरकर उन औरतों की तरफ बढते हुए जोर से चिल्लाया, 'क्या बात है ? जीप क्यो रोकी ? तुम लोग कौन हो ?'

दोनो महिलाओ ने बुर्का हटा दिया । टार्च लाइट मे उन्हें देखकर हैदर हंस पडा , 'तो तुम हो, बुआ! कहो, क्या बात है ? इतनी घबरायी हुई क्यो हो ?'

'कुछ न पूछो, बेटा! हमारा अड्डा उजड़ गया । मुक्तिसेना ने पूरे शहर पर कब्जा कर लिया है । हम दोनो किसी तरह छुपते-छिपाते यहां तक आ पहुंची। सोचा, यही से तुम्हें आगाह कर देगे । अब वहां जाना खतरे से खाली नहीं है । फौरन पकड लिये जाओगे ।'

बुआ की बातें सुनकर हैदर सकते मे आ गया । उसने पूछा, 'लड़कियो का क्या हुआ और हमारा माल-असबाब, अड्डे का सामान ?'

बुआ ने किंचित् रोने का स्वांग करते हुए कहा, 'रात 9 बजे ही सिपाहियों ने चारों तरफ से हवेली को घेर लिया । उनका कोई कैप्टन है । हां, याद आया, कैप्टन नियाजी । इसी नाम से उसके बड़े साहब ने बुलाया था । हां, हा, बेटा मुझे ठीक से याद है । कैप्टन नियाजी ही है । उसने ताले तुडवा दिये । सारी लडकियों को जीप में बैठाकर कहीं किसी कैंप में भेज दिया । नहीं, बेटा, कैंप का नाम तो मुझे पता नहीं । ना, उसने कोई नाम नहीं लिया । पर अब अड्डे पर जाना ठीक नहीं ।'

फातिमा ने बताया कि लड़कियां लेकर जीप पल्टन बाजार की तरफ गयी है ।

हैदर की मुट्ठियां भिंच गयीं । वह दांत पीसता हुआ बुदबुदाया, 'यह नियाजी का बच्चा' । वह ठिकाने पर जाने का निश्चय नहीं कर पा रहा था । उसे लगा, अब वहां जाने का कोई अर्थ नहीं । वहां मुक्तिसेना के साथ लड़ाई

करना आत्मघात होगा । उसने बिहारी, अहमद तथा अपने अन्य साथियों से पूछा, 'क्यो, अब क्या इरादा है ?'

बिहारी ने सिर नीचा कर लिया, कुछ बोला नही । पर अहमद ने कहा, 'सरदार । अब हमें किसी दूसरी सुरक्षित जगह की खोज करनी चाहिए । वक्त बुरा आ गया है ।'

बिहारी ने अपनी लबी खामोशी तोडते हुए सुझाया, 'हमे अपनी ताक़त जुटानी चाहिए । बिना ताकत के हम मुक्तिसेना से जीत नही सकते । फिर व्यग्य मे बोला, 'ये मच्छर पता नही कहा से आ गये ।'

हैदर ने निश्चय किया कि वह रात का शेष भाग मुशीगंज मे ही बिता दे तो निरापद रहेगा । वही सुरक्षित जगह है इस वक्त । जुबेदा बेगम का मकान है । छिपने लायक अच्छी जगह । पर वहां लौटकर जाना भी खतरे से खाली नहीं । गांव के लोग इस घटना को लेकर उत्तेजित होगे । उसने निश्चय किया— नही, वहा जाना उचित नही । सडक पर दूर आते हुए किसी वाहन की रोशनी पड़ने लगी, तो वह चौकन्ना हो उठा ।

जीप पर बैठते हुए हैदर बोला, 'अब तुम लोग अपनी हिफाजत करो । खुदा हाफिज ।'

रेशमा बुआ की घिग्घियां बंध गयीं । वह गिड़गिड़ाते हुए बोली, 'बेटा, हमें छोड़कर मत जाओ । हमें भी साथ लेते चलो । हमने तुम्हारी मुसीबत में सेवा की है । हमें इस तरह बेसहारा मत छोडो ।'

हरफाना भी साथ चलने के लिए अनुनय-विनय करने लगी ।

बिहारी ने ठिठोली करते हुए कहा, 'रेशमा बुआ, अब तुम इस बियावान की शेरनी हो । हरफाना के साथ जी भरकर लड़ो । कौन जंगल की रानी बनेगी, इसका फैसला लड़ाई के बाद होगा ।'

अहमद ने भी अस्फुट आवाज में कहा, 'अब मजा आयेगा ।'

हैदर ने अचानक निर्णय लिया और ड्राइवर से जीप मोड़कर वापस मुशीगंज चलने के लिए कहा ।

जीप मुड़ी और सड़क पर द्रुत गति से चल पड़ी । पर सामने से आते हुए वाहन की हेड लाइट की रोशनी से हैदर की आंखें चौंधियाने लगीं । उसी रोशनी में उसने मुड़कर देखा, जीप के पीछे गीता और जुबेदा अहमद और

बिहारी के बीच बैठी असहाय भाव से ताक रही थी । उनके हाथ-मुंह बंधे थे।

हैदर की जीप का ड्राइवर रहमत बत्तियां जलाकर रास्ता माग रहा था । पर चूकि सामने से आने वाला वाहन सड़क के बीचोबीच आ रहा था, उसे रास्ता मिल नही रहा था । अब तक वाहन काफी समीप आ गया था । जीप पर छह्-सात मिलिटरी वेश मे लोग बैठे थे ।

हैदर घबरा गया । उसने घबड़ाहट में ड्राइवर से कहा, 'जैसे भी हो, जीप को बाये से मोड़कर तेजी के साथ आगे बढाओ ।'

अब तक सामने से आती हुई जीप ठीक हैदर की जीप से पाच-छ: फीट के फासले पर रुक गयी । हैदर की जीप अचानक ही बाये, फिर दाये मुड़ती खेतों के बीच से होकर आगे सड़क पर बढ़ चली । अमर ने अपनी जीप घुमायी और सामने जाती हुई जीप का पीछा करने लगा । एक रहस्यमय खेल-मिचौनी प्रारंभ हो गयी ।

जीप की हेड लाइट में अमर को जुबेदा का चेहरा साफ-साफ दिखाई दे गया । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह दूसरी लड़की कौन हो सकती है । उसे अंदर-ही-अंदर राहत मिली कि अब वह जुबेदा को गुंडों के हाथ से बचा लेगा ।

अमर ने पिस्तौल से गोलियां चलायी । दोनों ओर से गोलियों के आदान-प्रदान के बीच दोनों जीपें एक-दूसरे से अधिक तीव्र गति से भागने लगीं । अमर सामने वाली जीप से आगे निकलना चाहता था और इस कोशिश में वह यह भी महसूस कर रहा था कि कहीं जुबेदा को खतरा न पहुचे । उसने जीप को बाये से दायें मोड़ा और सीधे भगाते हुए सामने वाली जीप से आगे करना चाहा, पर इस कोशिश में वह सफल नहीं हो सका । हैदर का ड्राइवर इस मामले में अधिक होशियार खिलाड़ी था । उसने अपनी जीप को इस तरह मोड़ा कि अमर की जीप टक्कर खाकर खंदक में गिरते-गिरते बची । इसी बीच हैदर की जीप द्रुतवेग से सामने दायें मुड़कर जंगल में लापता हो गयी । आगे सड़क बीहड़ जंगल के बीच से होकर जाती थी । रात के लगभग चार बजे थे । चारों ओर सुनसान और अंधकार था ।

हैदर ने जीप को झाड़ियों के बीच खड़ी कर दी और उसमे से उतरकर

जुबेदा और गीता को दूसरी ओर की झाड़ी में छुपाते हुए सावधान किया। 'जरा भी आवाज निकालने की कोशिश की, तो गोली मार दूंगा।'

अपने दूसरे आदमियों से कहा कि वे छुपकर गोलियां चलायें।

अमर की जीप काफी दूर से दिखाई दे गयी।

अहमद ने कहा, 'सरदार, इस वक्त गोली चलाना ठीक नहीं। हम यहीं छुपे रहें और जीप आगे बढ जाने के बाद वापस चलें।'

गीता और जुबेदा अपने बंधनों को छुडाने की असफल कोशिशें कर रही थी। उनकी आवाज गले से निकल नहीं पा रही थी। मुंह में पट्टी बंधी होने से केवल ऊं। ऊं। की आवाज लगातार निकालकर वे अपने बारे मे सूचित कर रही थी।

हैदर पिस्तौल जुबेदा की ओर तानते हुए चीखा, 'अगर जरा भी आवाज निकाली या भागने की कोशिश की तो गोलियों से सिर छलनी कर दूंगा। फिर उसने जुबेदा की बांह पकडते हुए खूखार आंखो को उसके शरीर के उभारों पर गडाते हुए कहा, 'अभी तो जनम-जनम का हिसाब चुकाना बाकी है।' फिर एक भद्दी-सी गाली देते हुए बोला, 'प्रेमी से मिलने के लिए छटपट कर रही है, मेरी सोनचिरैया ?'

जुबेदा की आंखो मे आंसू आ गये। उसका वश चलता तो वह हैदर के सीने मे खंजर भोंक देती। उसकी गालियां, अपमानभरे ताने बर्दाश्त से बाहर हो गये थे। आज तक वह हैदर को अपना शौहर मानती आयी है। मां ने दूसरी शादी के लिए कितनी बार कहा, पर उसने हर बार मना कर दिया। सिर्फ एक आशा की हल्की-सी किरण उसके अंधकार और कुहासाभरे जीवन में किंचित् उजाला किये हुए थी, पर वह आशा की किरण आज क्षीणप्राय हो चुकी थी। हैदर के बारे मे उसने कितनी-कितनी बातें सोच रखी थीं कि नये जीवन में वह उसे अच्छा आदमी बना लेगी। अपना प्यार, अपनी खुशी, सेवा और पति-भक्ति से वह उसे आदमी बनायेगी। परंतु उसकी सारी आशाओं पर आज पानी फिर गया। जीवन के अंतिम पडाव पर अब हैदर को बदलना बहुत मुश्किल है। आशा और विश्वास की जिस मद्धिम रोशनी में वह अपने जीवन का भविष्य देख रही थी, वह रोशनी अब बुझ गयी थी और उसे चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा दिखाई देने लगा था। उसे अपनी जिंदगी पर कोफ्त हो

इसी बीच जुबेदा और गीता घिसटते हुए आगे सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ने लगी ।

बिहारी ने लोहे की छड़ से अमर के सिर पर आघात किया, पर वह बायें घूम गया ।

हैदर दोनों लड़कियों को भागता देखकर उनकी ओर झपटा और छुरे का वार गीता पर करता कि इसके पहले ही जुबेदा गीता के सामने आ गयी । छुरे का भरपूर वार जुबेदा के कलेजे को चीरता हुआ अंदर तक धसता चला गया । रक्त का फव्वारा फूट निकला । यह क्या ? वह गीता को अपने कमजोर और अशक्त होते हाथों से जोरों से पकड़कर जैसे कह रही हो, 'बहन, अलविदा !' जुबेदा बोल नहीं सकी । एक ओर लुढ़ककर गिर पड़ी ।

अमर ने अब तक हैदर पर काबू पा लिया था । दूसरे साथियों की सहायता से उसने उसकी मुश्कें बांध कर पेड़ से कस दिया ।

बिहारी और अहमद ने आत्मसमर्पण कर दिया । उन्हें भी पेड़ से बांध दिया । अमर ने उन तीनों को गोली मार देने का निर्णय किया । उसने सईदा से कहा, 'इन तीनों से पहले पाकिस्तानी जासूसों और रजाकारों के अड्डे के बारे में पूछताछ करो और न बताने पर गोली मार दो ।'

सईदा ने सुझाव दिया, 'अमर भाईजान ! देखो तो, गीता को ! इतना अद्भुत संयोग देखकर आश्चर्य हो रहा है । जुबेदा ने उसे बचाने के लिए आत्मोत्सर्ग किया है ।' जुबेदा कुछ दूर पर छुरे के आघात से कराह रही थी । सईदा ने दौड़कर गीता के बंधन खोल दिये । दोनों कुछ देर एक-दूसरे को साश्चर्य ताकते रहे । उनके नेत्र सजल हो उठे । फिर जुबेदा के घाव से बहते खून को रोकने का दोनों असफल प्रयत्न करने लगे । गीता ने अपने दुपट्टे को फाड़कर पट्टी बनायी और उसे घाव के चारों ओर बांध दिया ।

जुबेदा की यह हालत देखकर अमर क्षुब्ध हो उठा ।

जुबेदा ने अमर से अस्फुट स्वर में कहा, 'अमर भाई, मुझे माफ कर देना । गीता का ख्याल रखना और सईदा बहन, तुम....तुम अपना हाथ मुझे दो, मेरे हाथ में । देख, तू मेरी बात याद रखना । नफरत, घृणा, प्रतिशोध की भावना आदमी को हैवान बना देती है । हैदर को माफ कर देना । उसकी बुराइयों को माफ कर दोगी तो वह शायद एक नेक आदमी बन जायेगा । ईश्वर उसे

सद्‌बुद्धि दे ! अमर भाईजान, आप भी उसे माफ कर देंगे न- ? अच्छा, अब मैं शांति से मर सकूंगी ।'

अमर ने हैदर की ओर ध्यान से देखा । वह पेड से अपना बंधन छुडाने का प्रयत्न कर रहा था । वह विक्षिप्तों की तरह मुंह से गालिया बक रहा था । अमर को अपनी ओर आता देखकर उसने घृणा से थूक दिया । प्रतिहिंसा की आग से वह बुरी तरह से जल रहा था । अमर उसके करीब पहुंचकर असमंजस में पड़ गया । भला कैसे उसे इस अवस्था मे बंधन-मुक्त किया जाये ?

उसने हैदर से कहा, 'तुम जुबेदा के पति हो, इसलिए मै तुम्हें मुक्त कर रहा हू और तुम्हारी मुक्ति का कारण एक ऐसी लडकी है, जिसका जीवन तुमने दुखों से भर दिया । अब तुम बंगलादेश के स्वतंत्र नागरिक बनकर सभ्य शांत जीवन बिताओ । क्या यह शर्त तुम्हें मंजूर है ?'

हैदर ने क्रोध से उफनते हुए कहा, 'बंगलादेश ! कहा है बंगलादेश ? बंगलादेश मेरा अतीत नही लौटा सकता । मैने कितने पाप, कितने अत्याचार किये हैं । आह ! मेरी कोई पत्नी नहीं । जो थी, मेरे लिए शादी होते ही मर चुकी । मैं उसके नाम से नफरत करता हू ।'

अमर ने उसे झकझोरते हुए कहा, 'हैदर, होश मे आओ । जुबेदा तुम्हें हमेशा मानती रही । तुममें अच्छे-बुरे की परख करने की बुद्धि नही ।'

'नहीं ! नहीं !! नही !!! वह मेरी पत्नी बनने लायक नही थी । वह कलंकिनी है । उसका एक प्रेमी भी है ।और तुम ? तुम ...हा, तुम ..'

अमर इस आरोप से तिलमिला उठा । गुस्से और आवेश मैं उसने हैदर की कमीज का कालर पकड लिया और चीखते हुए बोला, 'तू सचमुच बड़ा मक्कार और जालिम इंसान है । तुझ पर रहम नही किया जा सकता । जुबेदा पर झूठा दोषारोपण कर रहा है । एक पवित्र औरत को लांछित कर रहा है । जुबेदा मेरी बहन की तरह है । हम दोनो साथ-साथ पढ़ते थे । एक मित्र की तरह एक-दूसरे का दु ख-सुख महसूस करते थे ।'

तभी सईदा आकर हैदर से बोली, 'उसका प्रेमी मैं हू । खुदा कसम मैंने ही निकाह की रात मे मजाक किया था । शादी के मौके पर दिल्लगी करने के लिए उसके प्रेमी का नाटक किया था । मुझे पहचानने की कोशिश करो । मेरा नाम सईदा है ।'

हैदर का पारा जैसे शून्य डिग्री पर आ गया । इस सच्चाई से उसके दिमाग में इतने दिनों से भरी मिथ्या भ्रम की ग्रंथियां एक-एक कर टूट गयीं । उसने क्षोभ और आत्मग्लानि से सिर नीचा कर लिया ।

उसके मुंह से निकल पड़ा, 'ओफ । यह क्या से क्या हो गया ? जुबेदा बेगम, मैं गलतफहमी में था । मुझे माफ कर दो ।' वह रो पड़ा । उसकी हिचकियां बंध गयी, बेगम, मुझे पाप-मुक्त कर दो । मुक्त कर दो इस अंधेरे से, अंधकार भरे जीवन से । मेरे काले कारनामों से । दुष्कृतों से, अत्याचारों से । मैं बहुत शर्मिंदा हूं ।' उसकी आंखों से, बहते आंसुओं में उसके जीवन के सभी अत्याचार, सभी पाप-दुराचार एक-एक कर धुल-पुंछ रहे थे ।

अमर ने उसका बंधन खोल दिया । उसे बांह से पकड़कर जुबेदा के पास ले आया । जुबेदा बेहोशी की हालत में थी ।

अमर जुबेदा के माथे पर हाथ फिराकर धीमे स्वर में बोला, 'जुबेदा, देखो, तुम्हारे सामने तुम्हारा कातिल खड़ा है ।'

हैदर जुबेदा के घुटने पकड़ता हुआ रुंधे कंठ से बोला, 'मैंने बहुत बड़े-बड़े अपराध किये हैं, पर आज जो कुछ हुआ है किस तरह प्रायश्चित करूं ? मैं अपने इन हाथों को काट डालूं, तब भी मुझे शांति नहीं मिलेगी ।'

जुबेदा की बेहोशी टूटी । उसने पलकें खोलीं । अमर, गीता, सईदा और हैदर को देखते हुए अस्फुट स्वर में बोली, तुम अपने हाथों को काटकर प्रायश्चित करना चाहते हो न ? तो लाओ, अपने हाथ मुझे दे दो, मेरे हाथ में।'

हैदर जुबेदा के पास जाकर घुटनों के बल बैठ गया और उसने अपने हाथ जुबेदा के हाथों में दे दिया । जुबेदा की आंखों से आंसुओं की दो धाराएं फूटकर बहने लगीं जो उसके यातना, दुःख और प्रवंचना से आहत जीवन को अभिसिक्त कर रही थी । क्षण भर के लिए उसे लगा था कि वह कुटिल, त्रासद, जीवन में छाये हुए अंधकार से अब काफी दूर चली गयी है । वह एक गहरी यंत्रणा से मुक्ति पाते हुए बोली थी, 'अमर भाईजान, मेरा कलेजा जल रहा है। मेरी आंखों को कुछ दिखाई नहीं दे रहा है । सिर बुरी तरह फटा जा रहा है । शायद अंतिम समय आ गया । गीतू ! गीतू, मेरे पास आओ । तुम सभी से मेरा जीवन शुरू हुआ था और तुम सभी के सामने अब.. अब अलविदा !' क्षण भर

में उसके प्राण-पखेरू उड गये ।

सवेरे के पाच बज रहे थे । आकाश में उषा की लाली छा गयी थी । उडते हुए पक्षियों के कलरव के बीच, जगल मे बहती हवा के हाथों टूटकर पीले पत्ते आवाजें करते हुए नीचे झर रहे थे, जैसे अपनी करुण सवेदना व्यक्त कर रहे हों।

